ज्योति शिखा

आवश्यक सूचनाः—

आचार्य श्री रजनीशजी का सारा साहित्य और पुस्तकें जीवन जागृति केन्द्र बम्बई के अन्तर्गत सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। किसी प्रकाशन तथा अनुवाद की सुविधा के लिये बम्बई केन्द्र की लिखित अनुमति नितान्त आवश्यक है।

जीवन जागृति केन्द्र

एम्पायर बिल्डिंग (वी. टी. स्टेशन के सामने)
पहला मजला रूम नं. ५३
डॉ. दादाभाई नवरोजी रोड
बम्बई १ फोन : २६४५३०

ज्योतिशिख ग्राहक नं.

प्रिय मित्र,

आप 'ज्योतिशिखा' के ग्राहक है। आपका चंदा _____ को समाप्त हो गया है। कृपया चंदा रु. वर्ष १, २, मार्च ७० तक के तुरंत भिजवाकर आप अपनी प्रतियां सुरक्षित करवा लें और अन्य मित्रों को भी ग्राहक बनवाकर ज्योतिशिखा के प्रति अपना प्रेम परिचय दें।

मंत्री

"ज्योति शिखा"

आचार्य श्री रजनीश की
अमृतवाणी का
त्रैमासिक संकलन

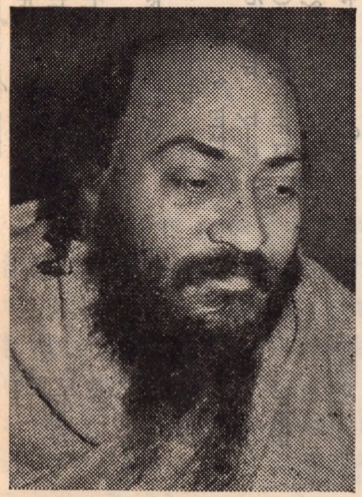

- तेरहवाँ संकलन
- जून, १९६९
- मानार्ह संपादक

प्रो. अरविन्द

*

- मूल्य : वार्षिक रु. ५।–
  एक प्रति रु. १।२५

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	संकलक	पृष्ठ
१.	शिक्षा में क्रांति :	श्री श्याम सोनी.	३
२.	जीवन और मृत्यु :	प्रश्नोत्तर	२१
३.	युक्रांद क्या है ?	कुमारी पुष्पा पंजाबी.	३९
४.	नारी और क्रांति :	श्री सरस्वती बहन	५८
५.	समाचार विभाग : आचार्य श्री के देश-व्यापी कार्यक्रम		७२

आचार्य श्री रजनीशजी के आगामी देशव्यापी कार्यक्रम :

दिनांक	स्थान	कार्यक्रम	संयोजक
८, ९, १०, ११ तथा ११ जून ६९	अहमदाबाद	सत्संग	श्री जयन्तिभाई एम्. ठक्कर जीवन जागृति केन्द्र सुरेशनिवास, प्राणकुंज सोसायटी कांकरिया, अहमदाबाद–२२.
२२, २३ एवं २४ जून ६९	चंडीगढ़	सत्संग	श्री बी. एस. गिल जीवन जागृति केन्द्र आई. पी. एस. हाउस नं. ५१ रेक्टर ८ ए. चंडीगढ़
५, ६ एवं ७ जुलाई ६९	जमशेदपुर	सत्संग	श्री मणिकांत ठाकर जीवन जागृति केन्द्र, गोलमुरी जमशेदपुर – ३ फोन ४३०६
१९ जुलाई ६९	बंबई	प्रवचन	श्री महेन्द्र सी. पारिख जुनियर चेम्बर पारिजात ९५ मरीन ड्रायहइव, बंबई २ फोन : २४३६७१
२०, २१ एवं २२ जुलाई'६९	मद्रास	सत्संग	श्री नानालाल भट्ट C/० पो. बो. नं. १२१३ २–ए मलाई पेरुमल स्ट्रीट मद्रास १. फोन २५०७५
२७ जुलाई ६९	शहीदस्मारक भवन जबलपुर	प्रवचन	श्री भीकमचंद जीवन जागृति केन्द्र ३८९ हनुमानमाल, जबलपुर फोन २९५७
३, ४ एवं ५ अस्त ६९	लुधियाना	सत्संग	श्री जी. बी. एस. गिल सिनीयर सुप्रिन्टेन्डेन्ट ऑफ पोलिस लुधियाना
१४, १५, १६, १७ एवं १८ अगस्त १९६९	बडौदा	सत्संग	श्री बच्चुभाई सुतरिया गुजरात थिओसोफिकल फेडरेशन हकीम वाडा, नागरवाडा रोड बडौदा
३०, ३१ अगस्त एवं १ सितंबर ६९	कानपुर	सत्संग	श्री राजेन्द्र शुक्ल, कानपुर

शिक्षा में क्रांति

संकलन : श्री श्याम सोनी

शिक्षक और समाज के सम्बन्ध में थोड़ी सी बातें जो मुझे दिखायी पड़ती हैं वह मैं आपसे कहूं। शायद जिस भांति आप सोचते रहे होंगे उससे मेरी बात का कोई मेल न हो। यह भी हो सकता है कि शिक्षा शास्त्र जिस तरह की बातें करता है उस तरह की बातों से मेरा विरोध भी हो। न तो मैं कोई शिक्षा शास्त्री हूं और न ही समाज शास्त्री। इसलिए सौभाग्य है कि मैं शिक्षा और समाज के सम्बन्ध में थोड़ी सी कुछ बुनियादी बातें कह सकता हूं। क्योंकि जो शास्त्र से बंध जाते हैं उनका चिन्तन समाप्त हो जाता है। जो शिक्षाशास्त्री हैं उन्हें शिक्षा के सम्बन्ध में कोई सत्य प्रगट होगा, इसकी सम्भावना अब करीब करीब समाप्त मान लेनी चाहिए। क्योंकि पांच हजार वर्षों से वे चिन्तन करते हैं लेकिन शिक्षा की जो स्थिति है, शिक्षा का जो ढांचा है, उस शिक्षा से पैदा होनेवाली मनुष्यों की जो रूपरेखा है वह इतनी गलत है कि यह स्वाभाविक है कि शिक्षाशास्त्रों से अस्वस्थ और भ्रांत नेता पैदा हो जायें। समाजशास्त्र भी, जो समाज के सम्बन्ध में चिन्तन करता है वह भी अत्यन्त रुग्ण और अस्वस्थ है, अन्यथा मनुष्य जाति, उसका जीवन, उसका विचार बहुत अलग और अन्यथा हो सकता था। मैं दोनों में से कोई भी नहीं हूं इसलिए ऐसी बातें सम्भव हैं कि आपसे कुछ कह सकूं जो सीधी समस्याओं को देखने से पैदा होती हैं।

जिन लोगों के लिए शास्त्र महत्वपूर्ण हो जाते हैं उन लोगों के लिए समाधान महत्वपूर्ण हो जाते है और समस्याएं कम महत्व की हो जाती हैं। मुझे चूंकि कोई पता नहीं शिक्षाशास्त्र का इसलिए मैं सीधी समस्याओं पर आपसे बात करना चाहूंगा। सबसे पहली बात और जिस आधार पर आगे में आपसे कुछ कहूं, वह यह है कि शिक्षक का और समाज का सम्बन्ध अबतक अत्यन्त खतरनाक सिद्ध

हुआ है। सम्बन्ध क्या है, शिक्षक और समाज के बीच आज तक ? सम्बन्ध यह है कि शिक्षक गुलाम हैं और समाज मालिक है। शिक्षक से काम समाज कौनसा लेता है ? शिक्षक से समाज काम यह लेता है कि उसकी पुरानी ईर्ष्याएं, उसके पुराने द्वेष, उसके पुराने विचार वह सब जो हजारों वर्ष से लाते हैं, मनुष्यों के मन पर, शिक्षक नये बच्चों के मन में प्रविष्ट करा दे। मरे हुए लोग, मरते जाने वाले लोग जो वसियत छोड़ गये हैं, चाहे वह ठीक हो या गलत, उसे वह नये बच्चों के मन में प्रवेश करा दे। समाज शिक्षक से यह काम लेता रहा है और शिक्षक इस काम को करता रहा है, यह आश्चर्य की बात है। इसका अर्थ यह हुआ कि शिक्षक के ऊपर बहुत बड़ी लांछना है। बहुत बड़ी लान्छना यह कि हर सदी जिन बीमारियों से पीड़ित होती है उन बीमारियों को आनेवाली सदी में शिक्षक संक्रमित कर देता है, जो समाज चाहता है। यह इसलिए चाहता है कि समाज का ढांचा समाज के ढांचे से जुड़ गया, स्वार्थ समाज के ढांचे से जुड़ गये। अन्धविश्वास को कोई भी मारना नहीं चाहते, कोई भी समाप्त करना नहीं चाहते। इस कारण समाज शिक्षक का आदर भी करता है, आदर करने की प्रवृत्ति भी दिखाता है। क्योंकि बिना शिक्षक की खुशामद किये, बिना शिक्षक को आदर दिये शिक्षक से कोई काम लेना असम्भव है। इसलिए कहा जाता है कि शिक्षक गुरू है, आदरणीय है, उसकी बातें मानने योग्य हैं, उसका सम्मान किया जाने योग्य है। क्यों ? क्योंकि जो समाज अपने बच्चों में अपने मन की सारी धारणाओं को छोड़ जाना चाहता है, इसके सिवाय उसको कोई मार्ग नहीं। जैसे हिन्दू बाप अपने बच्चे को भी हिन्दू बनाकर ही मरना चाहता है, मुसलमान बाप अपने बच्चे को मुसलमान बनाकर मरना चाहता है। हिन्दू बाप का मुसलमान से जो झगड़ा था वह भी अपने बच्चे को दे जाना चाहता है। यह कौन देगा ? यह कौन संक्रमित करेगा ? यह शिक्षक करेगा। पुरानी पीढ़ी की जो अन्धश्रद्धाएं हैं वह पुरानी पीढ़ी नयी पीढ़ी पर थोप देना चाहती है। अपने शास्त्र, अपने गुरू सब थोप जाना चाहती है। यह कौन करेगा ? यह काम वह शिक्षक से लेता है और इसका परिणाम क्या होगा ? इसका परिणाम यह होता है कि दुनिया में भौतिक समृद्धि तो विकसित होती जाती है लेकिन मानसिक समृद्धि विकसित नहीं हो रही है। मानसिक शक्ति विकसित हो ही नहीं सकती जबतक कि हम अतीत के भार और विचार से बच्चों को मुक्त न करें। एक छोटे से बच्चे के मस्तिष्क पर पांच दस हजार साल के संस्कारों का भार। उस भार के नीचे उसके प्राण दबे जाते हैं। उस भार में उसकी चेतना की ज्योति, उसके खुद का व्यक्तित्व उठना असम्भव है।

तो दुनिया में भौतिक समृद्धि बढ़ती है, क्योंकि भौतिक समृद्धि को जहाँ हमारे मां-बाप छोड़ते हैं, उसे बच्चे आगे ले जाते हैं, लेकिन मानसिक समृद्धि नहीं बढ़ाते हैं क्योंकि मानसिक समृद्धि में हम अपने माँ-बाप से आगे जाने को तैयार नहीं। आपके पिता जो मकान बना गये थे, लड़का उसको दो मंजला बनाने में संकोच अनुभव नहीं करता, बल्कि खुश होगा। और बाप भी खुश होगा कि उसके लड़के ने उसके मकान को दो मंजला किया, तीन मंजला किया। लेकिन महावीर, बुद्ध, राम और कृष्ण जो वसीयत छोड़ गये हैं उनके मानने वाले इस बात से बड़ी मुश्किल में पड़ जायेंगे कि किसी व्यक्ति ने गीता से आगे विचार किया, कि गीता के एक मंजली झोंपड़े को दो मंजला मकान बनाया है। मन के तल पर जो मकान बाप छोड़ गये हैं उसके भीतर ही रहना जरूरी है उससे बड़ा मकान नहीं बनाया जा सकता है। और इस बात की हजारों साल से चेष्टा चलती है कि कोई बच्चा बाप से आगे न निकल जाय। इसकी कई एक तरकीब हैं, कई व्यवस्थाएं हैं। इसलिए दुनिया में समृद्धि बढ़ती है भौतिक, लेकिन मानसिक दीनता बढ़ती चली जाती है। और जब मन छोटा हो और भौतिक समृद्धि ज्यादा हो तो खतरे पैदा होते हैं। जिस भांति हम भौतिक जगत में अपने माँ बाप से आगे बढ़ते हैं, जरूरी है कि बच्चे मानसिक और आध्यात्मिक विकास में भी माँ बाप को पीछे छोड़ दें। इसमें माँ बाप का अपमान नहीं। बल्कि इसी में सम्मान है। ठीक ठीक पिता वही है, ठीक ठीक पिता का प्रेम वही है कि वह चाहे कि उसका बच्चा हर दृष्टि से उसे पीछे छोड दे, लेकिन अगर किसी भी तल पर बाप की यह इच्छा है कि बच्चा उसके आगे न निकल जाय तो यह इच्छा खतरनाक है और शिक्षक अबतक उसमें सहयोगी रहा है। इसमें हम अपमान समझेंगे कि अगर हम कृष्ण से आगे विचार करें या महावीर से आगे विचार करें या मुहम्मद से आगे विचार करें। इसमें मुहम्मद का अपमान है, महावीर का अपमान है। कितने पागलपन का ख्याल है। इस कारण सारी शिक्षा अतीत की ओर उन्मुख है, जबकि शिक्षा भविष्य की ओर उन्मुख होनी चाहिए। विकासशील कोई भी सृजनात्मक प्रक्रिया भविष्यकी ओर उत्सुक होती है, अतीत की ओर नहीं। हमारी सारी शिक्षा अतीत की ओर उत्सुक है। हमारे सारे सिद्धान्त, हमारी सारी धारणाएं, हमारे सारे आदर्श अतीत से लिये जाते हैं। अतीत का मतलब है जो मर गया, जो बीत गया। हजार हजार वर्ष जिसे बीते हो गये हैं वह सारी धारणाएं हम उस बच्चे के मन पर थोपना चाहते हैं। न केवल थोपना चाहते हैं, बल्कि उसी बच्चे को हम आदर्श कहेंगे जो उन धारणाओं के अनुकूल उनको

सिद्ध कर लेता है। यह कौन करता रहा है ? यह काम शिक्षक से लिया जाता रहा है और इस भांति शिक्षक का शोषण समाज के ठेकेदारों ने किया है, धर्म के ठेकेदारों ने भी किया है और राज्य के ठेकेदारों ने भी किया है और शिक्षक को यह भुलावा दिया गया है कि वह ज्ञान का प्रसारक है।

वह ज्ञान का प्रसारक नहीं है। जैसी उसकी स्थिति है वह उस ज्ञान को स्थापित और स्थायी रखने वाला है जो उत्पन्न हो चुका है, और जो हो सकता है उसमें बाधा देनेवाला है। वह हमेशा अतीत के घेरे से बाहर नहीं उठने देना चाहता है और इसका परिणाम यह होता है कि हजार हजार साल तक न मालूम किस किस तरह की नासमझियां, न मालूम किस किस तरह के अज्ञान चलते चले जाते हैं। उनको मरने नहीं दिया जाता, उनको मरने का मौका नहीं दिया जाता। राजनीतिज्ञ भी यह समझ गया है इसलिए शिक्षक का शोषण राजनीतिज्ञ भी करता है। और सबसे आश्चर्य की बात है कि इसका शिक्षक को कोई बोध नहीं है उसका शोषण होता है। सेवा के नाम पर कि वह समाज की सेवा करता है, कि उसका शोषण होता है। किस किस तरह का शोषण होता है ?

अभी कुछ दिन पहले शिक्षकों की एक विराट सभा में बोलने मैं गया था। शिक्षक दिवस था। तो मैंने उनसे कहा कि एक शिक्षक यदि राष्ट्रपति हो जाय तो इसमें शिक्षक का सम्मान क्या है ? इसमें कौन से शिक्षक का सम्मान है ? मेरी समझ में, एक राष्ट्रपति शिक्षक हो जाय तब तो शिक्षक का सम्मान समझ में आता है लेकिन एक शिक्षक राष्ट्रपति हो जाय इसमें शिक्षक का सम्मान कौन सा है। एक राष्ट्रपति शिक्षक हो जाय और कह दे कि यह व्यर्थ है और मैं शिक्षक होना चाहता हूं और शिक्षक होना आनन्द है। तब तो हम समझेंगे कि शिक्षक का सम्मान हो रहा है। लेकिन एक शिक्षक राष्ट्रपति हो जाय इसमें शिक्षक का सम्मान नहीं है, राजनीतिज्ञ का सम्मान है। इसमें राजनेता का सम्मान है। और जब एक शिक्षक सम्मानित होता है राष्ट्रपति होकर तो फिर बाकी शिक्षक भी हेडमास्तर होना चाहें, स्कूल के इन्स्पेक्टर होना चाहें, एज्युकेशन मिनिस्टर होना चाहें तो कोई गलती है ?

सम्मान तो वहां है जहां पद है, और पद वहां है जहां राज्य है। लेकिन सारा ढांचा इस चिन्तन का ऐसा है कि सब पीछे हैं, सबके ऊपर राज्य, सबके ऊपर राजनीतिक है। राजनीतिक जाने अनजाने शिक्षक के द्वारा अपने विचार की स्थिति को, अपनी धारणाओं को बच्चों में प्रवेश कराता रहा है। धार्मिक भी यही करता रहा है। धर्म शिक्षा के नाम पर यही चलता रहा है कि हर धर्म यह कोशिश

करते हैं कि बच्चों के मन में अपनी धारणाओं को प्रवेश करा दें, चाहे वह सत्य हो, चाहे असत्य हो। और उस उम्र में प्रवेश करवा दें जब कि बच्चों में कोई सोच विचार नहीं होता है। इससे घातक अपराध मनुष्य जाति में कोई दूसरा नहीं है और न हो सकता है। एक अबोध और अनजान बालक के मन में यह भाव पैदा कर देना कि कुरान में जो है सत्य है या गीता में जो है सत्य है या भगवान जो हैं वह मुहम्मद हैं या भगवान हैं तो महावीर हैं, कृष्ण हैं। ये सारी बातें अबोध, निर्दोष, अनजान बच्चे के मनमें प्रवेश करा देना इससे बढ़कर घातक अपराध कोई नहीं हो सकता। लेकिन इसी भांति राजनीतिज्ञ भी कोशिश करता है।

अभी हिन्दुस्थानका मामला था। आजादी की लड़ाई थी तो हिन्दुस्तान के राजनीतिज्ञ कहते थे कि शिक्षक और विद्यार्थी दोनों राजनीति में भाग लें, क्योंकि देश की आजादी का सवाल है : फिर वे ही राजनीतिज्ञ सत्ता पर आ गये तो कहते हैं कि शिक्षक और विद्यार्थी राजनीति और सत्ता से दूर रहें। कम्युनिस्ट और सोशलिस्ट कहते हैं कि नहीं, विद्यार्थियों को दूर रहने की कोई जरूरत नहीं है। उन्हें राजनीति में भाग लेना चाहिए। शिक्षक और विद्यार्थी राजनीति में भाग लें। कल कम्युनिस्ट आ जायें हुकुमत में, तो वे कहेंगे कि अब तुम्हें इस राजनीति में भाग लेने की कोई जरूरत नहीं। क्योंकि जो जिस राजनीतिज्ञ के हित में है वही सत्य हो जाता है, जब जिस मौके पर; और शिक्षक और विद्यार्थी को यही सत्य है, यह समझाने की कोशिश की जाती है।

मेरी दृष्टि में कोई भी व्यक्ति ठीक अर्थोंमें शिक्षक तभी हो सकता है जब उसमें विद्रोह की एक ज्वलन्त अग्नि हो। जिस शिक्षक के भीतर विद्रोह की अग्नि नहीं है वह किसी न किसी नीति, स्वार्थ का, चाहे समाज, चाहे धर्म, चाहे राजनीति, उसका एजेन्ट होगा। शिक्षक के भीतर एक ज्वलन्त अग्नि होनी चाहिए विद्रोह की, चिन्तन की, सोचने की। लेकिन क्या हममें सोचने की अग्नि है और अगर नहीं है तो क्या आप भी एक दूकानदार नहीं हैं? शिक्षक होना बड़ी बात है। शिक्षक होने का मतलब क्या है? क्या हम सोचते हैं? आप बच्चों को सिखाते होंगे, सारी दुनिया में सिखाया जाता है, बच्चों को सिखाया जाता है कि प्रेम करो। लेकिन कभी आपने विचार किया है कि आपकी पूरी शिक्षा की व्यवस्था प्रेम पर नहीं, प्रतियोगिता पर आधारित है। किताब में सिखाते हैं कि प्रेम करो और आपकी पूरी व्यवस्था, पूरा अन्जाम प्रतियोगिता का है। जहां प्रतियोगिता है वहां प्रेम कैसे हो सकता है। जहां कम्पटीशन है, प्रतिस्पर्धा है वहां प्रेम कैसे

हो सकता है। प्रतिस्पर्धा तो ईर्ष्या का रूप है, जलन का रूप है। पूरी व्यवस्था तो जलन सिखाती है। एक बच्चा जो प्रथम आजाता है तब दूसरे बच्चे से कहते हैं कि देखो तुम पीछे रह गये और यह पहले आ गया। आप क्या सिखा रहे हैं? आप अहंकार सिखा रहे हैं कि जो आगे है वह बड़ा है और जो पीछे है वह छोटा है। लेकिन किताबों में आप कह रहे हैं कि विनीत बनो और किताबों में आप समझा रहे हैं कि प्रेम करो; और आपकी पूरी व्यवस्था सिखा रही है कि घृणा करो, ईर्ष्या करो और आगे निकलो, दूसरे को पीछे हटाओ और आपकी व्यवस्था उसे पुरस्कृत कर रही है। जो आगे आ रहे हैं उनको गोल्ड मैडल दे रही है, उनको सर्टिफिकेट दे रही है, उनके गले में मालाएं पहना रही है, उनके फोटो छाप रही है; और जो पीछे खड़े हैं उनको अपमानित कर रही है।

तो जब आप पीछे खड़े आदमी को अपमानित करते हैं तो क्या आप उसके अहंकार को चोट नहीं पहुंचाते कि वह आगे हो जाय? और आगे खड़े आदमी को आप सम्मानित करते हैं तो उसके अहंकार को प्रबल नहीं करते हैं? क्या आप उसके अहंकार को नहीं फुसलाते और बड़ा करते? और जब ये बच्चे इस भांति अहंकार में, ईर्ष्या में, प्रतिस्पर्धा में पाले जाते हैं तो यह कैसे प्रेम कर सकते हैं। प्रेम का हमेशा मतलब होता है कि जिसे हम प्रेम करते हैं उसे आगे जाने दें। प्रेम का हमेशा मतलब है पीछे खड़ा हो जाना। एक छोटी सी कहानी कहूं, उससे ख्याल में आ जाय। तीन सूफी फकीरों को फांसी दी जा रही थी और दुनिया में हमेशा धार्मिक आदमी सन्तों के खिलाफ रहे हैं। तो धार्मिक लोग उन फकीरों को फांसी दे रहे थे। तीन फकीर बैठे थे कतार में। जल्लाद एक एक का नाम बुलायेगा और उनको काट देगा। उसने चिल्लाया कि नूरी कौन है, उठकर आजाय। लेकिन नूरी नाम का आदमी तो नहीं उठा। एक दूसरा युवक उठा और वह बोला कि मैं तैयार हूं, मुझे काट दो। उसने कहा कि तेरा तो नाम यह नहीं है। इतना मरने की क्या जल्दी? उसने कहा कि मैंने प्रेम किया है और जाना कि जब मरना हो तो आगे हो जाओ और जब जीना हो तो पीछे हो जाओ। मेरा मित्र मरे, उसके पहले मुझे मर जाना चाहिए और अगर जीने का सवाल हो तो मेरा मित्र जिये। उसके पीछे मुझे जीना चाहिए। प्रेम तो यही कहता है, लेकिन प्रतियोगिता क्या कहती है? प्रतियोगिता कहती है कि मरनेवाले के पीछे होजाना और जीने वाले के आगे हो जाना। और हमारी शिक्षा क्या सिखाती है? प्रेम सिखाती है या प्रतियोगिता सिखाती है? और जब हर बच्चा हर बच्चे को पीछे छोड़ने के लिए उत्सुक हो तो बीस साल की शिक्षा के बाद

वह जिन्दगी में क्या करेगा ? यही करेगा, जो सीखेगा वही करेगा।

हर आदमी हर दूसरे आदमी को खींच रहा है कि पीछे आजाओ। नीचे के चपरासी से लेकर ऊपर के राष्ट्रपति तक हर आदमी एक दूसरे को खींच रहा है कि पीछे आजाओ और जब इस खींचतान में कोई चपरासी राष्ट्रपति हो जाता है तो हम कहते हैं कि बड़ी गौरव की बात हो गयी। हालांकि किसी को पीछे करके आगे होने से बड़ा हिंसा का कोई काम नहीं है लेकिन यह वायलेंस हम सिखा रहे हैं और इसको हम कहते हैं कि यह शिक्षा है। अगर इस शिक्षा पर आधारित दुनिया में रोज लड़ाई होती हो, रोज हत्या होती हो तो आश्चर्य कैसा। अगर इस शिक्षा पर आधारित दुनिया में झोपड़ों के करीब बड़े महल खड़े होते हों और उन झोपड़ों में मरते लोगों के करीब लोग अपने महलों में खुश रहते हों तो आश्चर्य कैसा ! इस दुनिया में भूखे लोग हों और ऐसे लोग हों जिनके पास इतना है कि क्या करें, उनकी समझ में नहीं आता। यह इस शिक्षा की बदौलत है। इस शिक्षा का परिणाम है, यह दुनिया जो इसी शिक्षा से पैदा हो रही है और शिक्षक इसके लिए जिम्मेवार है। वह शोषण का हथियार बना हुआ है। वह हजार तरह के स्वार्थों में हथियार बना हुआ है इस नामपर कि वह शिक्षा दे रहा है, बच्चों को शिक्षा दे रहा है। अगर यही शिक्षा है तो भगवान करे कि सारी शिक्षा बन्द हो जाय तो भी आदमी इससे बेहतर हो सकता है। जंगली आदमी शिक्षित आदमी से बेहतर है और उसमें ज्यादा प्रेम है तथा कम प्रतिस्पर्धा है। उसमें ज्यादा हृदय है और कम मस्तिष्क है। लेकिन इससे ज्यादा वह आदमी है। और हम इसको शिक्षा कह रहे हैं, और हम करीब करीब जिन जिन बातों को कह रहे हैं कि तुम यह करना, सिखाते हैं उनसे उल्टी बातें, पूरा सरन्जाम हमारी उल्टी बातें सिखाता है। आप क्या सिखाते हैं ? आप सिखाते हैं उदारता, सहानुभूति, लेकिन प्रतियोगी मन, काम्पटेटिव माइन्ड कैसे उदार हो सकता है, कैसे सहानुभूतिपूर्ण हो सकता है। अगर प्रतियोगी मन सहानुभूतिपूर्ण हो तो प्रतियोगिता कैसे चलेगी। प्रतियोगी मन कठोर होगा, हिन्सक होगा, अनुदार होगा। होना ही पड़ेगा उसे। और हमारी अवस्था ऐसी है कि हमें पता भी नहीं चलेगा, हमें ख्याल भी नहीं आयेगा कि यह हिंसक आदमी है। जो सारी भीड़ को हटाकर आगे जा रहा है। यह क्या है ? यह हिंसक आदमी है और हम इसे सिखाये जा रहे हैं, तैयार किये जा रहे हैं। फेक्टरियां बढ़ती जा रही हैं इस तरह की शिक्षा की। उनको हम स्कूल कहते हैं, विद्यालय कहते हैं, सरासर झूठ है। यह सब फैक्टरियां हैं जिनमें बीमार आदमी तैयार किया जा रहा

है और वह बीमार आदमी सारी दुनिया को गढ्ढे में लिए जा रहा है। हिंसा बढ़ती जाती है, प्रतिस्पर्धा बढ़ती जाती है। एक दूसरे के गले पर एक दूसरे का हाथ है। आप यहां बैठे हैं, कहंगे कि हमारा किसके गले पर हाथ है। लेकिन जरा गौर से देखें, हर आदमी का हाथ दूसरे आदमी के गले पर है और एक गले पर हजार हजार हाथ हैं और हर आदमी का हाथ हर दूसरे आदमी की जेब में है और एक जेब में हजार हजार हाथ हैं और यह बढ़ता जा रहा है। यह कहां जायेगा, यह कहां टूटेगा, यह कबतक चल सकता है, यह एटम और हाइड्रोजन बम कहां से पैदा हो रहे हैं? प्रतियोगिता से। प्रतिस्पर्धा से। वह प्रतिस्पर्धा चाहे दो आदमियों की हो चाहे दो राष्ट्रों की हो, कोई फ़र्क थोड़े ही है। वह रूस की हो या अमरीका की हो कोई फर्क थोड़े ही है। प्रतिस्पर्धा है, आगे होना है। अगर तुम एटम बम बनाते हो तो हम हाइड्रोजन बम बनाते हैं और यदि तुम हाइड्रोजन बनाओगे तो हम कुछ और बनायेंगे, सुपर हाइड्रोजन बम बनायेंगे। लेकिन पीछे हम नहीं रह सकते। पीछे रहना हमें कभी सिखाया नहीं गया है। हमें आगे होना है। अगर तुम दस मारते हो तो हम बीस मारेंगे। अगर तुम मुल्क एक मिटाते हो तो हम दो मिटा देंगे। यानी हम इस तक के लिए राजी हो सकते हैं क्योंकि हम पीछे नहीं रह सकते। यह कौन पैदा कर रहा है! यह शिक्षा से सारी बात आरही है।

लेकिन हम अन्धे हैं और हम यह देखते नहीं कि मामला क्या है। बच्चों को हम क्या सिखाते हैं? उनको सिखाते हैं कि लोभी मत बनो, भयभीत मत बनो, लेकिन करते क्या हैं। हम पूरे वक्त लोभ सिखाते हैं, पूरे वक्त भय सिखाते हैं। पुराने जमाने में नर्क के भय थे, स्वर्ग के पुरस्कार का प्रलोभन था। वह हजारों साल तक सिखाया गया। पूरे प्राण ढीले कर दिये गये आदमी के। भय और लोभ के सिवाय उसमें कुछ नहीं बचा। भय है कि नरक न चला जाऊं और लोभ है कि किसी भांति स्वर्ग चला जाऊं। हम क्या करते हैं? जहां भी दण्ड और पुरस्कार है वह भय है और लोभ है लेकिन हम बच्चो को कसे सिखाते हैं, सिखाने का रास्ता क्या है? सिखाने का रास्ता है भय या लोभ। या तो मारो या सिखाओ या फिर प्रलोभन दो कि हम यह यह देंगे, गोल्डमैडल देंगे, इज्जत देंगे, नौकरी देंगे, समाज में स्थान मिलेगा, ऊंचा पद देंगे। नवाब बना देंगे। जब मैं पढ़ता था तो कहते थे कि पढ़ोगे लिखोगे होगे नवाब, तुमको नवाब बना देंगे, तहसीलदार बना देंगे। तुम राष्ट्रपति हो जाओग। ये प्रलोभन हैं और ये प्रलोभन हम छोटे छोटे बच्चों के मन में जगाते हैं। हमन कभी उनको सिखाया

क्या कि तुम ऐसा जीवन बसर करना कि तुम शान्त रहो, आनन्दित रहो। नहीं, हमने सिखाया है कि तुम ऐसा जीवन बसर करना कि तुम ऊंची से ऊंची कुर्सी पर पहुंच जाओ। तुम्हारी तनख्वाह बहुत बडी हो जाय, तुम्हारे कपड़े अच्छे से अच्छे हो जायें, हमने उन्हें यह सिखाया है। हमने हमेशा यह सिखाया है कि तुम लोभ को आगे से आगे खींचना, क्योंकि वही सफलता है और जो सफल है उसके लिए कोई स्थान है?

इस पूरी शिक्षा में असफल के लिए कोई स्थान नहीं है, असफल के प्रति कोई जगह नहीं है और केवल सफलता के धुन और ज्वर हम पैदा करते हैं तो फिर स्वाभाविक है कि सारी दुनिया में जो सफल होना चाहता है वह जो बन सकता है, करता है। और सफलता आखिर में सब छिपा देती है। एक आदमी किस भांति चपरासी से राष्ट्रपति बनता है, एक दफा राष्ट्रपति बन जाय तो फिर कुछ पता नहीं चलता कि वह कैसे राष्ट्रपति बना, कौन सी तिकड़म से, कौन सी शरारत से, कौन सी बेईमानी से, कौन सें झूठ से, किस भांति से राष्ट्रपति बना, कोई जरूरत अब पूछने की नहीं है। न दुनिया में अब कोई पूछेगा, न पूछने का सवाल उठेगा। एक दफा सफलता आजाय तो सब पाप छिप जाते हैं और समाप्त हो जाते हैं। सफलता एकमात्र सूत्र है। तो जब सफलता एकमात्र सूत्र है तो मैं झूठ बोलकर क्यों न सफल हो जाऊं, बेईमानी करके क्यों न सफल हो जाऊं। अगर सत्य बोलता हूं और असफल होता हूं, तो क्या करूं? तो हम एक तरफ सफलता को केन्द्र बनाये हैं और जब झूठ बढ़ता है, बेईमानी बढ़ती है तो परेशान होते हैं कि यह क्या मामला है। जबतक सफलता, सक्सेस एकमात्र केन्द्र है, सारी कसौटी का एक मापदण्ड है, तबतक दुनिया में झूठ रहेगा, बेईमानी रहेगी, चोरी रहेगी, यह नहीं हट सकती, क्योंकि अगर चोरी से सफलता मिलती है तो क्या किया जाय? अगर बेईमानी से सफलता मिलती है तो क्या किया जाय? बेईमानी से बचा जाय कि सफलता छोड़ी जाय, क्या किया जाय? जब सफलता एकमात्र माप है, एकमात्र मूल्य है, एकमात्र वैल्यू है कि वह आदमी महान है जो सफल हो गया तो फिर बाकी सब बातें अपने आप गौण हो जाती हैं। रोते हैं हम, चिल्लाते हैं कि बेईमानी बढ़ रही है, यह हो रहा है। यह सब बढ़ेगी, बढ़नी चाहिए। आप जो सिखा रहे हैं यह फल है उसका, पांच हजार साल से जो सिखा रहे हैं उसका फल है। सफलता कोई मूल्य नहीं है। सफल आदमी कोई बड़ा सम्मान की बात नहीं है। सफल नहीं सुफल होना चाहिए आदमी को, सफल नहीं सुफल। एक आदमी बुरे काम में सफल हो जाय, इससे बेहतर है कि एकआदमी

भले काम में असफल हो जाय। सम्मान काम से होना चाहिए, सफलता से नहीं। लेकिन सफलता मूल्य है और सारा जीवन उसके केन्द्र पर घूम रहा है।

एजूकेशन कमीशन बैठा था अभी। उसके चेयरमैन ने कहा कि हम अपने बच्चों को कहते हैं कि तुम सत्य बोलो। सब तरह समझाते हैं लेकिन फिर कभी कभी झूठ बोलते हैं। मैंने उनसे कहा कि क्या आप पसन्द करेंगे कि आपका लड़का सड़क पर भगी हो जाय, बोहारी लगाये या एक स्कूल में चपरासी हो जाय? पसन्द करेंगे? या कि आपका दिल है कि लड़का भी आपकी तरह एजूकेशन कमीशन का चेयरमैन हो। हिन्दुस्तान के बाहर अम्बेसडर हो, धीरे धीरे चढ़े सीढ़ियां और ऊपर बैठ जाय और आखिर में भगवान हो जाय। क्या आप राजी हैं इस बात के लिए आपका लड़का सड़क पर बोहारी लगाये? तो आपको कोई तकलीफ न हो। उन्होंने कहा कि नहीं तकलीफ तो होगी। तो मैंने कहा कि अगर तकलीफ होगी तो फिर आप लड़के से चाहते नहीं है कि वह सत्य हो, ईमानदार हो। जबतक चपरासी अपमानित है और राष्ट्रपति सम्मानित है तबतक दुनिया में ईमानदारी नहीं हो सकती क्योंकि चपरासी कैसे बैठा रहे चपरासी की जगह पर, और जिन्दगी इतनी बड़ी नहीं है कि सत्य का सहारा लिए बैठा रहे। और असत्य सफलता लाता हो तो कौन पागल होगा जो उसे छोड़ दे और न केवल आप मानते हैं बल्कि मामले कुछ ऐसे हैं कि आपने जिस भगवान को बनाया है, जिस स्वर्ग को, वह भी इन सफल लोगों को मानता है। चपरासी मरता है तो नरक जाने की सम्भावना है, राष्ट्रपति कभी नरक नहीं जाते। सीधे स्वर्ग जाते हैं। वहां भी सिक्के यही लगाकर रखे हुए हैं कि वहां भी जो सफल है वही-- तो फिर क्या होगा? सफलता का केन्द्र खत्म करना होगा। अगर बच्चे से आपको प्रेम है और मनुष्य जाति के लिए आप कुछ करना चाहते हैं तो बच्चो के लिए सफलता केन्द्र को हटाइये, सुफलता के केन्द्र को पैदा करिये। अगर मनुष्य जाति के लिए कोई भी आपके हृदय में प्रेम है और आप सच में चाहते हैं कि एक नयी दुनिया, एक नयी संस्कृति और एक नया आदमी पैदा हो जाय तो सारी पुरानी बेवकुफी छोड़नी पड़ेगी, जलानी पड़ेगी, और नष्ट करनी पड़ेगी और विचार करना पड़ेगा कि विद्रोह कैसे हो सकता है इसके भीतर से। सब गलत है इसलिए गलत आदमी पैदा होता है।

शिक्षक बुनियादी रूप से इस जगत में सबसे बड़ा विद्रोही व्यक्ति होना चाहिए। तब वह पीढ़ियो को आगे ले जायगा और शिक्षक सबसे बड़ा दकियानूस है, सबसे बड़ा ट्रेडिशनलिस्ट वही है, वही दोहराये जाता है पुरानें कचड़े को।

क्रान्ति शिक्षक में होती नहीं है। आपने सुना है कि कोई शिक्षक क्रान्तिपूर्ण हो। शिक्षक सबसे ज्यादा दकियानूस, सबसे ज्यादा आर्थोडाकस है इसलिए शिक्षक सबसे खतरनाक है। समाज उससे हित नहीं पाता, है अहित पाता है। शिक्षक को होना चाहिए विद्रोही। कौन सा विद्रोही ? मकान में आग लगा दें आप, या कुछ और कर दें या जाकर ट्रेन उलट दें या बसों में आग लगा दें। मैं उनको नहीं कह रहा हूं, गलती से वैसा न समझ लें। मैं कह रहा हूं कि तुम्हारे जो मूल्य हैं, हमारे जो वैल्युज हैं उनके बाबत विद्रोह का रुख, विचार का रुख होना चाहिए कि यह मामला क्या है।

जब आप एक बच्चे को कहते हैं कि तुम गधे हो, तुम नासमझ हो, तुम बुद्धिहीन हो, देखो उस दूसरे को, वह कितना आगे है, तब आप विचार करें कि यह कितने दूर तक ठीक है और कितने दूर तक सच है। क्या दुनिया में दो आदमी एक जैसे हो सकते हैं? क्या यह सम्भव है कि जिसको आप गधा कह रहे हैं वह वैसा हो जायगा जैसा कि आगे खड़ा है। क्या यह आजतक सम्भव हुआ है हर आदमी जैसा है, अपने जैसा है, दूसरे आदमी से कम्पेरीजन का कोई सवाल ही नहीं। किसी दूसरे आदमी से उसकी कोई कम्पेरीजन नहीं, उसकी कोई तुलना नहीं। एक छोटा कंकड़ है, वह छोटा कंकड़ है, एक बड़ा कंकड़ है वह बड़ा कंकड़ है। एक छोटा पौधा है वह छोटा पौधा है, एक बड़ा पौधा है वह बड़ा पौधा है। एक घास का फूल है वह घास का फूल है, एक गुलाब का फूल है वह गुलाब का फूल है। प्रकृति का जहां तक सम्बन्ध है, घास के फूल पर प्रकृति नाराज नहीं है और गुलाब के फूल पर प्रसन्न नहीं है। घास के फूल को भी प्राण देती है उतनी ही खुशी से जितनी गुलाब के फूल को देती है। और मनुष्य को हटा दें तो घास के फूल और गुलाब के फूल में कौन छोटा है, कौन बड़ा है, कोई छोटा और बड़ा नहीं है। घास का तिनका और बड़ा भारी चीड़ का दरख्त, तो यह महान है और यह घास का तिनका छोटा है ? तो परमात्मा कभी का घास के तिनके को समाप्त कर देता और चीड-चीड़ के दरख्त रह जाते दुनिया में। नहीं, लेकिन आदमी की वैल्युज गलत है। यह आप स्मरण रखें कि इस सम्बन्ध में मैं आपसे कुछ गहरी बात कहनेका विचार रखता हूं। वह यह कि जबतक दुनिया में हम एक आदमी को दूसरे आदमी से कम्पेयर करेंगे तबतक हम गलत रास्ते पर चलते रहेंगे। वह गलत रास्ता यह होगा कि हम हर आदमी में दूसरे आदमी जसा बनने की इच्छा पैदा करते हैं।

जब कि कोई आदमी न तो दूसरे जैसा बना है और न बन सकता है।

राम को मरे कितने दिन हो गये, या क्राइस्ट को मरे कितने दिन हो गये ? दूसरा क्राइस्ट क्यों नहीं बन पाता और हजारों हजारों क्रिश्चियन कोशिश में तो चोबीस घण्टे लगे हैं कि क्राइस्ट बन जायें। हजारों राम बनने की कोशिश में हैं, हजारों जैन, महावीर, बुद्ध बनने की कोशिश में हैं लेकिन बनते क्यों नहीं एकाद ? एकाद दूसरा क्राइस्ट और दूसरा महावीर क्यों नहीं पैदा होता ? क्या इससे आंख नहीं खुल सकती आपकी ? मैं रामलीला के रामों की बात नहीं कह रहा हूं जो रामलीला में बनते हैं राम। न आप यह समझ लें कि उनकी चर्चा कर रहा हूं। वैसे तो कई लोग राम बन जाते हैं, कई लोग बुद्ध जैसे कपड़े लपेट लेते हैं और बुद्ध बन जाते हैं। कई लोग महावीर जैसा कपड़ा लपेट लेते हैं या नंगा हो जाते हैं और महावीर बन जाते हैं। मैं उनकी बात नहीं कर रहा। वे सब रामलीला के राम हैं, उनको छोड़ दें लेकिन राम कोई दूसरा पैदा होता है ? यह आपको जिन्दगी में भी पता चलता है कि ठीक एक आदमी जैसा दूसरा आदमी हो सकता है ? एक कंकड़ जैसा दूसरा कंकड़ भी पूरी पृथ्वी पर खोजना कठिन है— यहां हर चीज यूनिक है और हर चीज अद्वितीय है और जबतक हम प्रत्येक की अद्वितीय प्रतिभा को सम्मान नहीं देंगे तबतक दुनिया में प्रतियोगिता रहेगी, प्रतिस्पर्धा रहेगी, तबतक दुनिया में मारकाट रहेगी, तबतक दुनिया में हिन्सा रहेगी, तबतक दुनिया में सब बेईमानी के उपाय से आदमी आगे होना चाहेगा। दूसरे जैसा होना चाहेगा। जब हर आदमी दूसरे जैसा होना चाहता है तो क्या फल होता है ? फल यह होता है, अगर एक बगीचे में सब फूलों का दिमाग फिर जाय या बड़े बड़े आदर्शवादी नेता वहां पहुंच जायें या बड़े बड़े शिक्षक वहां पहुंच जायें और उनको समझायें कि देखो, चमेली का फूल चम्पा जैसा हो जाय, और चम्पा का फूल जुही जैसा, क्योंकि देखो जुही कितनी सुन्दर है और सब फूलों में पागलपन आजाय, हालांकि, आ नहीं सकता। क्योंकि आदमी से पागल फूल नहीं है। आदमी से ज्यादा जड़ता उनमें नहीं है कि वे चक्कर में पड़ जायें शिक्षकों के, उपदेशकों के, सन्यासियों के, आदर्शवादियों के, साधुओं के चक्कर में कोई फूल नहीं पड़ेगा। लेकिन फिर भी समझ लें और कल्पना कर लें कि कोई आदमी जाये और समझाये उनको तथा वे चक्कर में आ जायें और चमेली का फूल चम्पा का फूल होने लगे तो क्या होगा उस बगिया में। उस बगियामें फूल फिर पैदा नहीं हो सकते। उस बगिया में फिर पौधे मुरझा जायेंगे, मर जायेंगे, क्यों, क्योंकि चम्पा लाख उपाय करे तो चमेली नहीं हो सकती, वह उसके स्वभाव में नहीं है, वह उसके व्यक्तित्व में नहीं है, वह

उसकी प्रकृति में नहीं है। चमेली तो चम्पा हो ही नहीं सकती। लेकिन क्या होगा, चमेली चम्पा होने की कोशिश में चमेली भी नहीं हो पायेगी। वह जो हो सकती थी उससे भी वंचित हो जायगी।

मनुष्य के साथ यह दुर्भाग्य हुआ है। सबसे बड़ा दुर्भाग्य और अभिशाप जो मनुष्य के साथ हुआ है वह यह कि हर आदमी किसी और जैसा होना चाह रहा है और कौन सिखा रहा है यह? यह षडयंत्र कौन कर रहा है? यह हजार हजार साल से शिक्षा कर रही है। वह कह रही है राम जैसे बनो, बुद्ध जैसे बनो। यह अगर पुरानी तस्वीर फीकी पड़ गयी तो गांधी जैसे बनो, विनोबा जैसे बनो। किसी न किसी जैसा बनो लेकिन अपने जैसा बनने की भूल कभी न करना क्योंकि तुम तो बेकार पैदा हुए हो। असल में तो गान्धी मतलब से पैदा हुए। भगवान ने भूल की कि जो आपको पैदा किया। क्योंकि अगर भगवान समझदार होता तो राम और बुद्ध ऐसे कोई दस प्रन्द्रह आदमी के टाइप पैदा कर देता दुनिया में। या कि बहुत ही समझदार होता, जैसा कि सभी धर्मों के लोग बहुत ही समझदार होते तो फिर एक ही तरह के टाइप पैदा कर देता। फिर क्या होता? अगर दुनिया में समझ लें कि तीन अरब राम ही राम हैं तो कितनी देर चलेगी दुनिया? १५ मिनटमें स्वीसाड हो जायगा। सारी दुनिया आत्मघात कर लेगी। इतनी बोरडम पैदा होगी राम ही को देखने से। सब मर जायगा, कभी सोचा है? सारी दुनिया में गुलाब ही गुलाब के फूल हो जायें और सारे पौधे गुलाब के फूल पैदा करने लगें तो क्या होगा? फूल देखने लायक भी नहीं रह जायेंगे। उनकी तरफ आंख करने की भी जरूरत नहीं रह जायगी। यह व्यर्थ नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति का अपना व्यक्तित्व होता है। यह गौरवशाली बात है कि आप किसी दूसरे जैसे नहीं है और इस कंपेरीजन कि, कोई ऊंचा है कोई नीचा है, नासमझी की बात है। कोई ऊंचा और नीचा नहीं है। प्रत्येक है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी जगह है और प्रत्येक व्यक्ति दूसरा अपनी जगह पर। नीचे ऊंचे की बात गलत है। सब तरह का वैल्युएशन गलत है। लेकिन हम यह सिखाते रहे हैं। विद्रोह से मेरा मतलब है, इस तरह की सारी बातों पर विचार, इसतरह की सारी बातों पर विवेक, इस तरह की एक एक बात को देखना कि मैं क्या सिखा रहा हूं इस बच्चों को। जहर तो नहीं पिला रहा हूं? बड़े प्रेम से भी जहर पिलाया जा सकता है और बड़े प्रेम से मां–बाप और शिक्षक जहर पिलाते रहे हैं, लेकिन यह टूटना चाहिए।

दुनिया में अबतक धार्मिक क्रान्तियां हूई। एक धर्म के लोग दूसरे धर्म के

हो गये। कभी समझाने बुझाने से हुए, कभी तलवार छाती पर रखने से हो गये लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा। हिन्दू मुसलमान हो जाय तो वैसे का वैसा आदमी रहता है, मुसलमान ईसाई हो जाय तो वैसे का वैसा आदमी रहता है, कोई फरक नहीं पड़ा धार्मिक क्रान्तियों से। राजनैतिक क्रान्तियां हुई हैं। एक सत्ताधारी बदल गया, दूसरा बैठ गया। कोई जो दूसरे की जमीन पर रहता था, वह बदल गया तो जो पास की जमीन पर रहता था, वह बैठ गया। किसी की चमड़ी गोरी थी, वह हट गया तो किसी की चमड़ी काली थी तो वह बैठ गया। भीतर का सत्ताधारी वही का वही है। आर्थिक क्रान्तियां हो गयी हैं दुनियां में। मजदूर बैठ गये, पूंजीपति हट गये, लेकिन बैठने से मजदूर पूंजीपति हो गया? पूंजीवाद चला-गया तो उसकी जगह मैनेजर्स आ गये। वह भी उतने दुष्ट और खतरनाक हो गये, कोई फर्क नहीं पड़ा। वर्ग बने रहे। पहले वर्ग था—जिसके पास धन, वह, और जिसके पास धन नहीं है वह। अब वर्ग हो गया। जिसमें धन वितरित किया जाता है वह और जो धन वितरित करता है वह। जिसके पास ताकत है, सत्ता में है वह और दूसरा है सत्ता हीन। वह जो सत्ता में नहीं है। नये वर्ग बन गये लेकिन वर्ग कायम रहा।

अब इन चार पांच हजार वर्षों में जितने प्रयोग हुए हैं मनुष्य के कल्याण के लिए, सब असफल हो गये। अभीतक एक प्रयोग नहीं हुआ है, वह है शिक्षा में क्रान्ति। वह प्रयोग शिक्षक के ऊपर है कि वह करे और मुझे लगता है। यह सबसे बड़ी क्रान्ति हो सकती है। राजनीतिक, आर्थिक या धार्मिक कोई क्रान्ति का इतना मूल्य नहीं जितना शिक्षा में क्रान्ति का मूल्य है। लेकिन शिक्षा में क्रान्ति कौन करेगा, वे विद्रोही लोग कर सकते हैं जो सोचें, विचार करें कि हम यह क्या कर रहे हैं और इतना तय कर लें कि जो भी आप कर रहे हैं वह जरूर गलत है क्योंकि उसका परिणाम गलत है। यह जो मनुष्य पैदा हो रहा है, यह जो समाज बन रहा है यह जो युद्ध हो रहे हैं, यह जो सारी हिंसा चल रही है, यह जो सर्फरिंग इतनी दुनिया में है, इतनी पीड़ा, दीनता और दरिद्रता है, यह कहां से आ रही है। यह जरूर हम जो शिक्षा दे रहे हैं उसमें बुनियादी भूल है। तो इसपर विचार करें और जागें लेकिन आपतो कुछ और हिसाब में पड़े रहते होंगे। शिक्षकों के सम्मेलन होते हैं तो वे विचार करते हैं कि विद्यार्थी बड़े अनुशासनहीन हो गये, इनको डिसीप्लीन में कैसे लाया जाय। कृपा करें, इनको पूरी तरह अनुशासनहीन हो जाने दें, क्योंकि आपकी डिसी स्लीन का परिणाम क्या हुआ है, पांच हजार साल में? हजारों साल से तो

डिस्सीप्लीन में थे, क्या हुआ? और डिस्सीप्लीन सिखाने का मतलब क्या है? डिस्सीप्लीन सिखाने का मतलब है कि हम जो कहें उसको ठीक मानो। हम ऊपर बैठें तो तुम नीचे बैठो, हम जब निकलें तो दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करो या और ज्यादा डिस्सीप्लीन हो तो पैर छुयें और हम जो कहें उस पर शक मत करो या हम जिधर रहें उधर जाओ हम कहें बैठो तो बैठ जाओ, हम कहें उठो तो उठ जाओ। यह डिस्सीप्लीन है और डिस्सीलीन के नाम पर आदमियों को मारने की करतूत है। कि उसके भीतर कोई चैतन्य न रह जाय, उसके भीतर कोई होश न रह जाय, उसके भीतर कोई विवेक और विचार न रह जाय। मिल्ट्री में क्या करते हैं? एक आदमी को तीन चार साल तक कवायद करवाते हैं, लेफ्ट राइट—कितनी बेवकूफी की बातें हैं कि एकआदमी से कहो बायें घूमो, दायें घूमो। घूमाते रहो तीन चार साल तक, उसकी बुद्धि नष्ट हो जायगी। एक आदमी को दायें बायें घुमाओगे क्या होगा? कितनी देर तक उसकी बुद्धि स्थिर रहेगी। उससे कहो बैठो, उससे कहो खड़े रहो, दौड़ो और जरा इन्कार करे तो मारो। तीन चार दिन में उसकी बुद्धि क्षीण हो जायगी, उसकी मनुष्यता मर जायगी। उससे कहो राइटटर्न तो वह मशीन की तरह घूमता है, कहो बन्दूक चलाओ तो वह मशीन की तरह बन्दूक चलाता है, उससे कहो मारो वह आदमी को मारता है। वह आदमी नहीं रह गया, वह मशीन हो गया, यह डिस्सीप्लीन है और यह हम चाहते हैं कि बच्चों में भी हो। बच्चों में मिल्ट्रीलाइजेशन, उनको भी एन. सी. सी. सिखाओ, मार डालो दुनिया को, सैनिक शिक्षा दो, बन्दूक पकड़वाओ, लेफ्टाराइट करवाओ, मारो दुनया को पांच हजार साल में आदमी को, मैं नहीं समझता, कि उसमें कोई समझ भी आयी हो कि इन चीजों के मतलब क्या हैं। डिस्सीप्लीन से आदमी डैड होता है। जितना अनुशासित आदमी होगा उतना मुर्दा होगा।

तो क्या मै यह कह रहा हूं कि लड़कों से कहो कि विद्रोह करो, दौड़ो कूदो क्लास में, पढ़ने मत दो। यह नहीं कह रहा हूं। यह कह रहा हूं कि आप प्रेम करो बच्चों से, बच्चों के हित, भविष्य की मंगल कामना करो। उस प्रेम से, मंगलकामना से डिस्सीप्लीन आनी शुरू होती है जो थोपी हुई नहीं है जो बच्चो के विवेक से पैदा होती है। एक बच्चे को प्रेम करो और देखो कि वह प्रेम उसमें अनुशासन लाता है। अनुशासन लेफ्ट राइटटर्न करने वाला नहीं, उसकी आत्मा से जगता है, दिल की ध्वनि से जगता है, थोपा नहीं जाता है, उसके भीतर से आता है। उसके विवेक को जगाओ, उसके विचार को जगाओ बुद्धिहीन

मत बनाओ। उससे यह मत कहो कि हम जो कहते हैं वही सत्य है। सत्य का पता है आपको? लेकिन आदमी कहता है कि मैं जो कहता हूं वही सत्य है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि आप तीस साल पहले पैदा हुए वह तीस साल पीछे हो गया तो आप सत्य के जानकार हो गये और वह सत्य का जानकार न रहा। जितना अज्ञान आपमें हो उससे शायद कम अज्ञान में वह हो क्योंकि अभी वह कुछ भी नहीं जानता है और आप न मालूम कौन कौन सी नासमझी, न मालूम क्या क्या नानसेंस जानते हैं, लेकिन आप ज्ञानी हैं क्योंकि आपकी तीस साल उम्र ज्यादा है। आपके हाथ में डण्ड है इसलिए आप उसको डिस्सीप्लीन करना चाहते हैं। डिस्सीप्लीन न कोई किसी को करे तो दुनिया बेहतर हो सकती है। प्रेम करें, प्रेम आपका सहायक है। आप प्रेमपूर्ण जीवन जियें। आप मंगल कामना करें उसके हित की, सोचें उसके हित के लिए कि क्या हो सकता है और वह प्रेम, वह मंगल काम असम्भव है उसके भीतर अनुशासन न ला दे, आदर न ला दे। फर्क होगा। अभी जो जितना चैतन्य बच्चा है वह उतना ही ज्यादा इनडिस्सीप्लीन में होगा और जो जितना इडियट है, जड़ बुद्धि है वह उतना डिस्सीप्लीन में होगा। जिस बात को में कह रहा हूं अगर प्रेम के माध्यम से अनुशासन आये तो जितने इडियट हैं उसमें कोई अनुशासन न पैदा होगा जो जितना चैतन्य है उसमें उतना ज्यादा अनुशासन पैदा होगा। अभी अनुशासन में वह है जो डल है, जिसमें कोई जीवन नहीं है, स्फुरणा नहीं है। अभी वह अनुशासनहीन, जिसमें चैतन्य है, विचार है। अगर प्रेम हो तो वह अनुशासनबद्ध होगा जिसमें विचार है और चैतन्य है और वह अनुशासनहीन होगा जो जड़ है। जड़ता के अनुशासन का कोई नहीं मूल्य है, नहीं चैतन्यपूर्वक जो अनुशासन है उसका मूल्य है क्योंक चैतन्यपूर्वक अनुशासन का अर्थ यह होता है कि वह विचारपूर्वक अनुशासन में है और अगर आप गलत अनुशासन की मांग करेंगे तो वह इन्कार कर देगा। अगर हिन्दुस्तान पाकिस्तान के युवक विवेकपूर्वक अनुशासन में हों तो क्या यह सम्भव है कि पाकिस्तान की हुकूमत उनसे कहे कि जाओ हिन्दुस्तान के लोगों को मारो या हिन्दुस्तान के युवक, अगर अनुशासन में विवेकपूर्वक हों तो क्या यह सम्भव है कि कोई राजनीतिज्ञ उनसे कहे कि जाओ और पाकिस्तान के लोगों को मारो तो वह कहेंगे कि यह बेवकूफी की बातें बन्द करो। हम समझते हैं कि क्या विवेकपूर्वक है, यह हम नहीं कह सकते, लेकिन अभी तो जड़ बुद्धि को अनुशासन सिखाया गया है। उनसे कहो मारो तो फिर वह बिल्कुल ही नहीं देखते, क्योंकि अनुशासन ही सत्य है उसको ही मानते हैं।

दुनिया में राजनीतिज्ञों ने, धर्म के पुरोहितों ने खूब शिक्षा दी है कि अनुशासन होना चाहिए। क्योंकि अनुशासक आदमी में कोई विवेक नहीं होता, कोई विद्रोह नहीं होता, कोई विचार नहीं होता क्योंकि उनकी तो पूरी कोशिश है कि सारी दुनिया मिल्ट्री कैम्प हो जाय। कोई आदमी कोई गड़बड़ न करे, यह कोशिश चल रही है हजार हजार ढंग से। शायद आपको पता हो या न पता हो। अब बहुत से रास्ते अख्तियार किये गये हैं। अब रुसवालों ने माइण्डवाश निकाल लिया है, एक मशीन बना ली है। जिस आदमी के दिमाग में विद्रोह होगा, विचार होगा उसके दिमाग से वह मशीन द्वारा साफ कर देंगे, उसके विचार को खत्म कर देंगे। क्योंकि विद्रोही आदमी खतरनाक है, वह हुकूमत के खिलाफ बोल सकता है, लोगों को भड़का सकता है कि यह गलत है, यह जो व्यवस्था है, इसलिए उसके दिमाग को ठण्डा कर देंगे। पहले अनुशासन की तरकीब लगती थी, वह पूरीतरह कारगर न हुई। फिर भी कुछ विद्रोही पैदा हो जाते है। अब उन्होंने नयी तरकीब निकाली है कि जिस बच्चे के दिमाग में ऐसा शक-सुबहा हो उसके दिमाग को ठीक कर देगी। ये बड़े खतरनाक मामले हैं जो सारी दुनिया में चल रहे हैं। एटम बम, हाइड्रोजन बम से ज्यादा खतरनाक ईजाद यह है।

लेकिन क्या शिक्षक इससे सहयोगी होगा? मैं इस प्रश्न पर ही चर्चा को आपपर छोड़ना चाहूंगा कि आप इस दुनिया से सहमत हैं? इस मनुष्य से सहमत हैं जैसा आज आदमी है। क्या इस इन्सान से सहमत हैं? इन युद्धों से, हिन्सा से, बेईमानी से? यदि सहमत नहीं हैं तो पुनर्विचार करिये, आपकी शिक्षा में कहीं बुनियादी भूल है। आप जो दे रहे हैं वह गलत है। शिक्षक ज्यादा विद्रोही हो, विवेक और विचारपूर्ण उसकी जीवन दृष्टि हो तो वह समाज के लिए हितकर है, भविष्य में नये से नये समाज पैदा होने में सहयोगी है और अगर वह यह नहीं है तो वह केवल पुराने मुर्दो को नये बच्चों के दिमाग में भरने के अतिरिक्त उसका और कोई काम नहीं है। इस काम को करता चला आया है। एक क्रान्ति होनी चाहिए, एक बड़ी क्रान्ति होनी चाहए कि शिक्षा का आमूल ढांचा तोड़ दिया जाय और एक नया ढांचा पैदा किया जाय और उस नये ढांचे के मूल्य अलग हों। सफलता उसका मूल्य न हो, महत्वाकांक्षा उसका मूल्य न हो, आगे और पीछे होना सम्मान अपमान की बात न हो। एक व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति से कोई तुलना न हो। प्रेम हो, प्रेम से बच्चों के विकास की चेष्टा हो एक नयी, बिल्कुल सुवास से भरी अद्भुत दुनिया पैदा की जा सकती है।

यह थोड़ी सी बातें मैंने आपसे कहीं इस ख्याल से कि कहीं कोई नींद में हो

तो थोड़ा बहुत तो जागे। लेकिन कई की नींद इतनी गहरी होती है कि वह केवल यही समझ रहे होंगे कि क्या गड़बड़ चल रही है, नींद सब खराब किये दे रहे हैं। लेकिन अगर थोड़ा बहुत भी जागें, थोड़ा बहुत भी आंख खोलकर देखें तो जो मैंने कहा है शायद उसमें से कोई बात उपयोगी और ठीक लगे।

यह मैं नहीं कहता हूं कि मैंने जो कहा है वह सच है, और ठीक है क्योंकि यह तो पुराना शिक्षक कहता है। यह तो आप कहते हैं। मैं तो यह कह रहा हूं कि मैंने अपनी दृष्टि आपको बतायी, वह बिल्कुल ही गलत हो सकती है। हो सकता है उसमें कण मात्र भी सत्य न हो इसलिए यह नहीं कह रहा हूं कि मैंने जो कहा है उसपर विश्वास कर लें। मैं कहता हूं, उस पर विचार करना है। थोड़ा सा विचार करना और उसमें से कुछ ठीक लगे तो वह मेरी बात नहीं होगी। आपका अपना विचार होगा, उस कारण आप मेरे अनुयायी नहीं बन जायेंगे। उस कारण आपने मेरी बात स्वीकार की ऐसा समझने की कोई जरूरत नहीं क्योंकि वह आप अपने विवेक से जाने और पहचाने हैं वह आपकी बन गयी है। यह थोड़ी सी बातें कहीं ताकि आप कुछ विचार करें। दुनिया में इस वक्त बहुत धक्का देने की जरूरत है ताकि कुछ विचार पैदा हो। लेकिन हम करीब करीब सो गये हैं, करीब करीब मर ही गये हैं और सब चला जा रहा है। भगवान करे थोड़ा बहुत धक्का कई तरफ से लगे और आप आंख खोले और थोड़ा बहुत सोचें। शिक्षक की सबसे बड़ी जिम्मेवारी है राजनीतज्ञों से बचे, राष्ट्रपतियों से, प्रधान–मंत्रियों से बचे। इस नासमझी की वजह से तो इस दुनिया में सारी परेशानी, है, इसी पोलीटीशियन के वजह से सारे उपद्रव हैं। इससे बचें और बच्चों में पोलीटिशियन्स पैदा न होने दें, लेकिन वह पैदा कर रहे हैं अम्बीशन। नम्बर एक आओ, तो फिर आगे क्या होगा। आगे कहां जाइये। फिर नम्बर एक तो पोलटिक्स में ही आ सकते हैं और कोई आता नहीं। और किसी के अखबार में फोटो नहीं छपते, नाम नहीं छपते। फिर तो वही आसकते हैं और वह वहीं आयेंगे। बच्चों में प्रतिस्पर्धा पैदा न होने दें। प्रेम जगायें, जीवन के प्रति आनन्द जगायें, –प्रतियोगिता नहीं, प्रतिस्पर्धा नहीं। क्योंकि जो दूसरे से जूझता है वह धीरे धीरे जूझने में समाप्त हो जाता है और जो अपने आनन्द को खोजता है, दूसरे से प्रतियोगिता को नहीं, उसका जीवन एक अद्भुत फूल की भांति हो जाता है, जिसमें सुवास होती है, सौन्दर्य होता है। परमात्मा करे, यह बुद्धि आपमें आये, परमात्मा करे यह विद्रोह आपमें आये।

मेरी बातें आपने इतनी शान्ति से सुनी उसके लिए बहुत बहुत अनुग्रहीत हूं। और सबके भीतर बैठे परमात्मा को प्रणाम करता हूं। मेरे प्रणाम स्वीकार करें।

जीवन और मृत्यु : प्रश्नोत्तर

संकलन : श्री मीकचंद

जो अनुभव है परमात्मा का अनुभव है, सारे मनुष्य का अनुभव शरीर का अनुभव है, सारे योगी का अनुभव सूक्ष्म शरीर का अनुभव है, परम योगी का अनुभव परमात्मा का अनुभव है। परमात्मा एक है, सूक्ष्म शरीर अनंत है, स्थूल शरीर अनंत है। जो सूक्ष्म शरीर है वह है काजल बाडी। वह जो सूक्ष्म है वह नये स्थूल शरीर ग्रहण करता है। हम यहां देख रहे हैं कि बहुत से बल्ब जले हुए हैं। विद्युत तो एक है, विद्युत बहुत नहीं है। वह ऊर्जा, वह शक्ति वह इनर्जी एक है लेकिन दो अलग बल्बों से वह प्रगट हो रही है। बल्ब का शरीर अलग अलग है, उसकी आत्मा एक है। हमारे भीतर से जो चेतना झांक रही है वह चेतना एक है लेकिन है– एक सूक्ष्म उपकरण है, सूक्ष्म देह है, दूसरा उपकरण है स्थूल देह। हमारा अनुभव स्थूल देह तक ही रुक जाता है। यह जो स्थूल देह तक रुक गया अनुभव है यही मनुष्य के जीवन का सारा अंधकार और दुख है। लेकिन कुछ लोग सूक्ष्म शरीर पर भी रुक सकते हैं। जो लोग सूक्ष्म शरीर पर रुक जाते हैं वे ऐसा कहेंगे कि आत्माएं अनंत है, लेकिन जो सूक्ष्म शरीर के भी आगे चले जाते हैं वे कहेगे परमात्मा एक है, आत्मा एक है, ब्रह्म एक है।

मेरी इन दोनों बातों में कोई विरोध नहीं है। मैने जो आत्मा के प्रवेश के लिए कहा उसका अर्थ है वह आत्मा जिसका अभी सूक्ष्म शरीर गिर नहीं गया है इसलिए हम कहते हैं कि जो आत्मा परम मुक्ति को उपलब्ध होजाती है उसका जन्म मरण बन्द हो जाता है। आत्मा का तो कोई जन्म मरण है ही नहीं, वह न तो कभी जन्मी है और न कभी मरेगी। वह जो सूक्ष्म शरीर है वह भी समाप्त हो जाने पर कोई जन्म मरण नहीं रह जाता है क्योंकि सूक्ष्म शरीर ही कारण बनता है नये जन्मों का। सूक्ष्म शरीर का अर्थ है हमारे विचार, हमारी कामनाएँ

हमारी वासनाएं, हमारी इच्छाएं, हमारे अनुभव, हमारे ज्ञान इन सब का जो संग्रहीभूत, जो इंटेग्रेटेड सीड है, इन सबका जो बीज है वह हमारा सूक्ष्म शरीर है, वही हमें आगे की यात्रा पर ले जाता है लेकिन जिस मनुष्य के सारे विचार नष्ट हो गये, जिस मनुष्य की सारी वासनाएं क्षीण हो गयीं, जिस मनुष्य की सारी इच्छाएं विलीन हो गयीं, जिसके भीतर अब कोई भी इच्छा शेष न रही उस मनुष्य को जाने के लिए कोई जगह नहीं बचती, जाने का कोई कारण नहीं रह जाता। जन्म की कोई वजह नहीं रह जाती।

राम कृष्ण के जीवन में एक अद्‌भुत घटना है। रामकृष्ण को जो लोग बहुत निकट से परमहंस जानते थे उन सबको यह बात जानकर अत्यन्त कठिनाई होती थी कि रामकृष्ण जैसा परहंस, राम कृष्ण जैसा समाधिस्थ व्यक्ति भोजन के संबंध में बहुत लोलुप था। रामकृष्ण भोजने के लिए बहुत आतुर होते थे और भोजन के लिए इतनी प्रतीक्षा करते थे कि कई बार उठकर चौका में पहुंच जाते और पूछते शारदा को, बहुत देर हो गयी, क्या बन रहा है आज ? ब्रह्म की चर्चा चलती और बीचमें ब्रह्म चर्चा छोड़कर पहुंच जाते किचन में और पूछने लगते, क्या बना है आज और खोजने लगते। शारदा ने भी उन्हें कहा, आप क्या करते हैं ? लोग क्या सोचते होगे कि ब्रह्म की चर्चा छोड़कर एकदम अन्न की चर्चा पर आप उतर आते हैं। रामकृष्ण हंसते और चुप रह जाते। उनके शिष्यों ने भी उनको बहुत बार कहा कि इससे बहुत बदनामी होती है लोग कहते हैं कि ऐसा व्यक्ति क्या ज्ञान को उपलब्ध हुआ होगा जिसकी अभी रसना, जिसकी अभी जीभ इतनी लालायित होती है भोजन के लिए। एक दिन शारदा ने बहुत कुछ भला बुरा कहा, रामकृष्ण की पत्नी ने, तो रामकृष्ण ने कहा कि तुझे पागल पता नहीं, जिस दिन में भोजन के प्रति अरुचि प्रगट करूं, तू समझ लेना कि अब मेरे जीवन की यात्रा केवल तीन दिन और शेष रह गयी। बस तीन दिन से ज्यादा फिर में जिऊंगा नहीं। जिस दिन भोजन के प्रति मेरी उपेक्षा हो, तू समझ लेना कि तीन दिन बाद मेरी मौत आगयी है। शारदा कहने लगी, इसका अर्थ ? रामकृष्ण कहने लगे, मेरी सारी वासनाएं क्षीण हो गयीं, मेरी सारी इच्छाएं विलीन हो गयीं, मेरे सारे विचार नष्ट हो गये हैं लेकिन जगत के हित के लिए में रुका रहना चाहता हूं। मैं एक वासना को जबरदस्ती पकड़े हुए हूं जैसे किसी नाव की सारी जंजीरें खुल गयी हों और एक जंजीर से नाव अटकी रह गयी हो और एक जंजीर औरटूट जाय तो नाव अपनी अनंत यात्रा पर निकल आयेगी। मैं चेष्टा करके रुका हुआ हूं। किसी की समझ में शायद यह बात नहीं आयी लेकिन रामकृष्ण की मृत्यु के तीन दिन

पहले शारदा थाली लगाकर रामकृष्ण के कमरे में गयी। वे बैठे हुअे देख रहे थे। उन्होंने थाली देखकर आखें बन्द कर लीं, लौट गये और पीठ कर ली शारदा की तरफ। उसे एकदम से ख्याल आया कि उन्होंने कहा था कि तीन दिन बाद मौत हो जायगी जिस दिन जीवन के प्रति अरुचि करूं। उसके हाथ से थाली झन्नाकर पीट कर रोने लगी। रामकृष्ण ने कहा, रोओ मत तुम जो कहती थी वह बात भी अब पूरी हो गयी। ठीक तीन दिन बाद रामकृष्ण की मृत्यू हो गयी। एक छोटी सीवासना को प्रयास करके वे रोके हुए थे। उतनी छोटी सी वासना जीवन यात्रा का आधार बनी थी, वह वासना भी चली गयी तो जीवन यात्रा का सारा आधार समाप्त हो गया। जिसे तीर्थंकर कहते हैं, जिसे हम ईश्वर के पुत्र कहते हैं, जिसे हम अवतार कहते हैं उनकी भी एक ही वासना शेष रह गयी होती है और उस वासना को वे शेष रखना चाते हैं करुणा' के हित, मंगल के हित, सर्वमंगल के हित, सर्व लोक के हित। जिस दिन वह वासना भी क्षीण हो जाती है उसी दिन जीवन की यह यात्रा समाप्त और अनंत की अंतहीन यात्रा शुरू होती है। उसके बाद जन्म नहीं है, उसके बाद मरण नहीं है, उसके न एक है, न अनेक है। उसके पास तो जो शेष रह जाता है उससे संख्या में गिनने का कोई उपाय नहीं इसलिए जो जानते हैं वे यह भी देखते है कि ब्रह्म एक है, परमात्मा एक है। क्योंकि एक कहना व्यर्थ है जब कि दो की गिनती न बनती हो। एक कहने का कोई अर्थ नहीं जब कि दो और तीन नहीं कहे जा सकते हों। एक कहना तभीतक सार्थक है जबतक कि दो तीन चार भी सार्थक होते हैं। संख्याओं के बीच की एक की सार्थकता है इसलिए जो जानते हैं वे यह भी नहीं कहते कि ब्रह्म एक है, वे कहते ब्रह्म अद्वैत है, दो नहीं हैं, बहुत अद्‌भुत बात कहते हैं। वेकहते हैं परमात्मा दो नहीं है, वे यह कहते हैं कि परमात्मा को संख्या में गिनने का उपाय नहीं है एक कहकर के भी हम संख्या में गिनने की कोशिश करते हैं वह गलत है लेकिन उस तक पहूंचना दूर, अभी तो हम स्थूल खडे हैं, उस शरीर पर जो अनंत है, अनेक है। उस शरीर के भीतर हम प्रवेश करेगे तो एक और शरीर उपलब्ध होगा सूक्ष्म शरीर। उस शरीर को भी पार करेगे तो वह उपलब्ध होगा जो शरीर नहीं है, अशरीर है, जो आत्मा है।

मैने जो कल कहा उसमें जरा भी विरोध नहीं है, उसमें कोई विरोधाभास नहीं है।

एक और मित्र ने पूछा है, आत्मा शरीर के बाहर चली जाय तो क्या दूसरे मृत शरीर में भी प्रवेश कर सकती है ?

कर सकती है। लेकिन दूसरे मृत शरीर में प्रवेश करने का कोई अर्थ और प्रयोजन नहीं रह जाता। क्योंकि दूसरा शरीर इसीलिए मृत हुआ है कि उस शरीर में रहने वाली आत्मा अब उस शरीर में रहने में असमर्थ हो गयी थी। वह शरीर व्यर्थ हो गया था इसीलिए छोड़ा गया है, कोई प्रयोजन नहीं है उस शरीर में प्रवेश का। लेकिन इस बात की संभावना है कि दूसरे शरीर में प्रवेश किया जा सके। लेकिन यह प्रश्न पूछना मूल्यवान नहीं है कि हम दूसरे के शरीर में कैसे प्रवेश करें, अपने ही शरीर में हम कैसे बैठे हुए हैं इसका भी हमें कोई पता नहीं। हम दूसरे के शरीर में प्रवेश करने की व्यर्थ की बातों पर-विचार करने से क्या फायदा उठा सकते हैं, हम अपनें ही शरीर में कैसे प्रविष्ट हो गये हैं इसका भी हमें कोईपता नहीं। हम अपने ही शरीर में कैसे जी रहे हैं इसका भी कोई पता नहीं, हम अपनें ही शरीर से पृथक होकर अपने को देख सकें इसका भी कोई अनुभव नहीं। दूसरे के शरीर में प्रवेश का प्रयोजन भी नहीं है लेकिन वैज्ञानिक रूप से यह कहा जा सकता है कि दूसरे के शरीर में प्रवेश संभव है क्योंकि शरीर न ही दूसरे का है न अपना है। सब शरीर दूसरे हैं। जब मां के पेट में एक आत्मा प्रविष्ट होती है तब भी वह शरीर में प्रवेश हो रही है, बहुत छोटे शरीर में प्रवेश हो रही है, एटोमिक बाडी में प्रवेश हो रही है लेकिन शरीर तो है, वह जो पहले दिनअणू बनता है मां के पेट में वह अणू आपके शरीर की रूपाकृति अपने में छिपायें हुए है। पचास साल बाद आपके बाल सफेद हो जायेंगे यह संभावना भी उस छोटे से बीच में छिपी हुई है। आपकी आंख का रंग कैसा होगा यहसंभावना भी उस बीज में छिपी हुई है, आपके हाथ कितने लंबे होगे, आप स्वस्थ हों कि बीमार, आप गोरे होंगे कि काले, कि बाल घुंघराले होगे, ये सारी बातें उस छोटेबीज में पुटेंशियली छिपी हुई हैं। वह छोटी देह है, वह एटोमिक बाडी है, अणु शरीर है, उस अणु शरीर में आत्मा प्रविष्ट होती है। उस अणु शरीर की जो संरचना है उसअणु शरीर की जो स्थिति है, जो सिचुएशन है उसके अनुकुल आत्मा उसमें प्रविष्ट होती है और दुनिया में जो मनुष्य जाति का जीवन और चेतना रोज नीचे गिरती जा रही है उसका एक मात्र कारण है कि दुनिया के दंपत्ति श्रेष्ठ आत्माओं के जन्म लेने की सुविधा पैदा नहीं कर रहे हैं। जो सुविधा पैदा की जा रही है वह अति निकृष्ट आत्माओं के पैदा होने की सुविधा है। आदमी के मर जाने के बाद जरूरी नहीं है कि उस आत्मा को जल्दी जन्मलेने का अवसरमिल जाये। साधारणात्माएं, जो न बहुत श्रेष्ठ होती हैं, न बहुत निकृष्ट होती हैं। १३ दिन के भीतर नये शरीर की खोज कर लेती हैं लेकिन निकृष्ट आत्माएं

भी रुक जाती हैं क्योंकि उतना निकृष्ट अवसर मिलना मुश्किल होता है। उन निकृष्ट आत्माओं को ही हम प्रेत और भूत कहते हैं। बहुत श्रेष्ठ आत्माएं भी रुक जाती हैं क्योंकि उतने श्रेष्ठ अवसर का उपलब्ध होना मूश्किल होता है। उन श्रेष्ठ ात्माओं को ही हम देवता कहते हैं। पहली पुरानी दुनिया में भूत प्रेत की संख्या बहुत कम थी और देवताओं की संख्या बहुत ज्यादा। आज की दुनिया में भूत प्रेतों की संख्या बहुत ज्यादा हो गयी है और देवताओं की संख्या कम क्योंकि देवता पुरुषों का अवसर पैदा होने का कम हो गया, है, भूत प्रेत पैदा होने का अवसर बहुत तीव्रता से उपलब्ध हुआ।

तो जो भूत प्रेत रुके रह जाते हैं मनुष्य के भीतर प्रवेश करने से वे सारे मनुष्य जाति में प्रविष्ट हो गये इसीलिए आज भूत प्रेतों का दर्शन मुश्किल हो गया है क्योंकि उसके दर्शन की कोई जरूरत नहीं। आप आदमी को हो ही देख लें और उसके दर्शन हो जाते हैं और देवता पर हमारा विश्वास कम हो गया क्योंकि देव पुरुष ही जब दिखायी नहीं पड़ते हों तो देवता पर विश्वास करना बहुत कठिन है। एक जमाना था कि देवता उतनी ही वास्तविकता थी, उतनी ही एक्चुअलटी थी जितना कि हमारे और जीवन के दूसरे सत्य हैं। अगर हम वेद के रुषियों को पढें तो ऐसा नहीं मालूम पड़ता कि वे देवताओं के संबंध में जो बात कह रहे हैं वह किसी कल्पना के देवता के संबंध में बात कह रहे हैं, नहीं वे ऐसे देवता की बात कर रहे हैं जो उनके साथ गीत गाता है, हंसता है बात करता है वे एक ऐसे देवता कीबात कर रहे हैं जो पृथ्वीपर चलता है, उनके अत्यन्त निकट। हमारा देवता से सारा संबंध विनष्ट हुआ है क्योंकि हमारे बीच ऐसे पुरुष नहीं जो सेतु बन सकें, जो ब्रिज बन सकें, जो देवताओं ओर मनुष्यों के बीच में खड़े होकर घोषणा कर सकें कि देवता कैसे होते हैं और इनका सारा जिम्मा मनुष्य जाति के दाम्पत्य की जो व्यवस्था है उसपर निर्भर है। मनुष्य जातिकी दाम्पत्य की सारी की सारी व्यवस्था कुरूप, अग्ली और परव्हटेड है। पहली तो बात यह है कि हमने हजारों साल से प्रेमपूर्ण विवाह बन्द कर दिये हैं और विवाह हम बिना प्रेम के कर रहे हैं। जो विवाह प्रेम के बिना होगा उस दंपति के बीच कभी भी वह आध्यात्मिक संबंध उत्पन्न नहीं होता जो प्रेम से संभव था। उन दोनों के बीच कभी भी वह हार्मनी कभी भी वह एकरूपता और संगीत पैदा नहीं हो सकती जो एक श्रेष्ठ आत्मा के जन्म के लिए जरूरी है। उनका प्रेम केवल था, रहने की वजह से पैदा हो गया, साहचर्य होता है। उनके प्रेम में वह आत्मा का आंदोलन नहीं होता जो दो प्राणों को एक कर देता है। प्रेम के विना जो बच्चे पैदा होते हैं पृथ्वी पर वे बच्चे प्रेमपूर्ण

नहीं हो सकते, वे देवता जैसे नहीं हो सकते, उनकी स्थिती भूत प्रेत जैसी ही होगी, उनका जीवन घृणा भर देगा और हिंसा का ही जीवन होगा। जरा सी बात फर्क पैदा करती है अगर व्यक्तित्व की बुनियादी हार्मनी, अगर व्यक्तित्व की बुनियादी लयबद्धता नहीं है तो अद्‌भुत परिवर्तन होते हैं।

शायद आपको पता नहीं होगा, स्त्री पुरुषों से ज्यादा सुन्दर क्यों दिखायी पड़ती है शायद आपको ख्याल न होगा, स्त्री के व्यक्तित्व में एक राउन्डनेस, एक सुडौलता क्यों दिखायीं पड़ती है ? वह पुरुष के व्यक्तित्व में क्यों नहीं दिखायी पड़ती ? शायद आपको ख्याल में न होगा कि स्त्री के व्यक्ति में एक संगीत, एक नृत्य, एक इनर डांस, एक भीतरी नृत्य क्यों दिखायी पड़ता है जो पुरुष में दिखायी नहीं पड़ती। एक छोटा साकारण बहुत बड़ा कारण नहीं है। एक छोटा सा, इतना छोटा है कि आप कल्पना भी नहीं कर सकते। इतने छोटे से कारण पर व्यक्तित्व का इतना भेद पैदा हो जाता है। मां के पेट में जो बच्चा निर्मित होता है उस पहले अणु में चोबीस जीवाणु पुरुष के होते हैं और चोबीस जीवाणु स्त्री के होते हैं। अगर चोबीस चोबीस के दोनों जीवाणु मिलते हैं तो अड़तालीस जीवाणुओं का पहला सेल निर्मित होता है। अड़तालिस सेल से जो प्राण पैदा होता है वह स्त्री का शरीर बन जाता है। उसके दोनों बाजू २४–२४ सेल के होते हैं, बैलेंस संतुलित। पुरुष का जो जीवाणु होता है वह सैंतालिस जीवाणुओं का होता है। एक तरफ चौबीस होते हैं, एक तरफ तेईस।बस यह बैलेंस टूट गया वहीं से व्यक्तित्व का। संतुलन टूट गया वहीं से व्यक्तित्व का। हार्मनी टूट गयी। स्त्री के दोनों पलड़े व्यक्तित्व के बाबत संतुलन के हैं। उससे सारा स्त्री का सौंदर्य, उसकी सुडौलता, उसकी कला, उसके व्यक्तित्व कारस, उसके वयक्तित्व का काव्य पैदा होता है और पुरुष के व्यक्तित्व में जरा सी कभी है। तो उसका एक तराजू चौबीस जीवाणुओं से बना हुआ है। मां से जो जीवाणु मिलता है वह चोबीस का बना हुआ है और पुरुष से जो मिलता है वह तेईस का बना हुआ है। पुरुष के जीवाणुओं में दो तरह के जीवाणु होते हैं, चोबीस कोष्ठधारी और तेईस कोष्ठ-धारी। तेईस कोष्ठधारी जीवाणु अगर मां के चोबीस कोष्ठधारी जीवाणु से मिलता है तो पुरुष का जन्म होता है। इसलिए पुरुष में एक बेचैनी जिवन भर बनी रहती है, एक इटैंस डिसकटेंट बना रहता है। क्या करूं, क्या न करूं, एक चिन्ता, एक बेचैनी, यह कर लूं, यह कर लूं, वह कर लूं। पुरुष की जो बेचैनी है वह एक छोटी सी घटना से शुरू होती है और वह घटना है कि उसके एक पलड़े पर एक अणु कम है। उसका बैलेंस, व्यक्तित्व का कम है। स्त्री का बैलेंस है, स्त्री

की हार्मनी पूरी है, उसकी लयवद्धता पूरी है। इतनी सी घटना इतना फर्क लाती है। हालांकि इससे स्त्री सुन्दर तो हो सकी लेकिन स्त्री विकासमान नहीं हो सकी, क्योंकि जिस व्यक्तित्व में समता है वह विकास नहीं करता, वह ठहर जाता है। पुरुष का व्यक्तित्व विषम है। विषम होने के कारण वह दौड़ता है, विकास करता है। एवरेस्ट चढ़ता है, पहाड़ पार करता है, चांद पर जायेगा, तारों पर जायेगा, खोज बीन करेगा, सोचेगा, ग्रुन्थ लिखेगा, धर्म निर्माण करेगा। स्त्री यह कुछ भी नहीं करेगी। न वह एवरेस्ट जायेगी, न वह चांद तारों पर जायेगी, न वह धर्मों की खोज करेगी, न ग्रन्थ लिखेगी, न विज्ञान की शोध करेगी। वह कुछ भी नहीं करेगी, उसके व्यक्तित्व में एक संतुलन उसे पार होने के लिए तीव्रता से नहीं भरता है। पुरुष ने सारी सभ्यता विकसित की, एक छोटी ही बात के कारण, उसमें एक अणु कम है और स्त्री ने सारी सभ्यताएं विकसित नहीं की। उसमें एक अणु पूरा है,। उतनी सी घटना व्यक्तित्व का भेद ला सकती हैं। मैं इसीलिए यह कह रहा हूं कियह तो बायलाजिकली है, यह तो जीव शास्त्र कहेगा, इतना सा फर्क, इतने मिन्स व्यक्तित्वों को जन्म दे देता है और गहरे फर्क हैं और इतने डिफरेंस हैं। तो पुरुष और स्त्री केमिलने परजिस बच्चे का जन्म होता है वह उन दोनों व्यक्तियों में कितना गहरा प्रेम है, कितनी आध्यात्मिकता, कितनी पवित्रता है, कितने प्रेयरफुल, कितने प्रार्थनापूर्ण हृदय से वे एक दूसरे के पास आये हैं इसपर निर्मर करेगा कि कितनी ऊंची आत्मा उनकी तरफ आकर्षित होती है, कितनी विराट आत्मा उनकी तरफ आकर्षित होती है, कितनी महान दिव्य चेतना उस घर में अपना अवसर बनाती है यह इसपर निर्भर करेगा।

मनुष्य जाति क्षीण और दीन दरिद्र और दुखी होती चली जा रही है। उसके बहुत गहरें में कारण मनुष्य दाम्पत्य का विकृत होना है। और जबतक हम मनुष्य के दाम्पत्य जीवन को स्वीकृत नहीं कर लेते, जबतक उसे हम स्प्रीचुलाइज नहीं कर लेते तबतक हम मनुष्य के भविष्य में सुधार नहीं कर सकते। और इस दुर्भाग्य मेंउन लोगों का भी हाथ है जिन लोगों ने गृहस्थ जीवन की निन्दा की है और संन्यास जीवन का बहुत ज्यादा शोरगुल मचाया है, उनका हाथ है। क्योंकि एक बार जब गृहस्थ जीवन कडेम्ड हो गया, निन्दित हो गया तो उस तरफ हमने विचार करना छोड़ दिया। नहीं, मैं आपसे कहना चाहता हूं, संन्यास के रास्ते से बहुत थोड़े लोग ही परमात्मा तक पहुँच सकते हैं। बहुत थोड़े से लोग, कुछ विशिष्ट तरह के लोग, कुछ अत्यंत निम्न तरह के लोग संन्यास के रास्ते से परमात्मा तक पहुंचते हैं। अधिकतमलोग गृहस्थ

के रास्ते से और दाम्पत्य के रास्ते से ही परमात्मा तक पहुंचते हैं और आश्चर्य की बात यह कि गृहस्थ के मार्ग से पहुंच अत्यन्त सरल और सुलभ है लेकिन उस तरफ कोई ध्यान नहीं दिया गया। आज तक का सारा धर्म संन्यासियों के प्रति प्रभाव से पीड़ित है, आज तक का पूरा धर्म गृहस्थ के लिए विकसित नहीं हो सका और अगर गृहस्थ के लिए धर्म विकसित होता तो हमने जन्म के पहले चरण में विचार किया होता कि कैसी आत्मा को आंमंत्रित करना है, कैसी आत्मा को पकड़ना है, कैसी आत्मा को प्रवेश देना है जीवन में। अगर धर्म की ठीक-ठीक शिक्षा हो सके और एक-एक व्यक्ति को धर्म का विचार, कल्पना और भावना दी जा सके तो बीस वर्षों में आनेवाले मनुष्य की पिढ़ी को बिलकुल नया बनाया जा सकता है। वह आदमी पापी है जो आने वाली आत्मा के लिए प्रेमपूर्ण आमंत्रण भेजे बिना भोग में उतरता है। वह आदमी अपराधी है, उसके बच्चे नाजायज हैं, चाहे उसने बच्चे विवाह के द्वारा पैदा किया हो। जिन बच्चों के लिए उसने अत्यन्त प्रार्थना और पूजा से और परमात्मा को स्मरण करके नहीं बुलाया है, वह आदमी अपराधी है, वह अपराधी रहेगा। कौन हमारे भीतर प्रविष्ट होता है इसपर निर्भर करता है सारा भविष्य। हम शिक्षा की फिक्र करते हैं, हम वस्त्रों की फिक्र करते हैं, हम बच्चों के स्वास्थ्य की फिक्र करते हैं लेकिन बच्चे की आत्मा की फिक्र हम बिलकुल ही छोड़ दिये हैं इससे कभी भी कोई अच्छी मनुष्य जाति पैदा नहीं हो सकती। इसलिए यह बहुत फिक्र न करें कि दूसरे के शरीर में कैसे प्रवेश करें। इस बात की फिक्र करें कि आप इस शरीर में ही कैसे प्रवेश कर गये।

इस संबंध में भी एक मित्रने पूछा है कि क्या हम अपने अतीत जन्मों को जान सकते हैं?

निश्चित ही जान सकते हैं लेकिन अभी तो आप इस जन्म को भी नहीं जानते अतीत के जन्मों को जानना तो फिर बहुत कठिन है। निश्चित ही मनुष्य जान सकता है अपने पिछले जन्मों को क्योंकि जो भी एक बार चित्त पर स्मृति बन गयी है वह नष्ट नहीं होती। वह हमारे चित्त के गहरे तलों में अनकांसस हिस्सों में सदा मौजूद रहती है। हम जो भी जानते हैं उसे कभी नहीं भूलते हैं। अगर मैं आपसे पूछूँ कि १९५० में १ जनवरी को आपने क्या किया था तो शायद आप कुछ भी नहीं बता सकेंगे। आप कहेंगे मुझे क्या याद है, मुझे कुछ भी याद नहीं है। १ जनवरी १९५० कुछ भी ख्याल नहीं आता कि मैंने कुछ किया लेकिन अगर आपको सम्मोहित किया जा सके हिप्नोटाइज किया जा सके और सरलता से किया जा सकता है और आपको बेहोश करके पूछा जाय कि १ जनवरी

५० को आपन क्या किया तो आप सुबह से सांझ तक का ब्योरा इस तरह बता देंगे जैसे अभी वह एक जनवरी आपके सामने से गुजर रही है। आप यह भी बता देंगे कि १ जनवरी को सुबह जो मैंने चाय पी थी उसमे शक्कर थोड़ी कम थी आप यह भी बता देंगे कि इस आदमी ने मुझे चाय दी थी। उस आदमी के शरीर से पसीने की बदबू आ रही थी। आप इतनी छोटी बातें बता देंगे कि जो जूता मैं पहने हुए था वह मुझे पैर में काट रहा था। सम्मोहित अवस्था में आपके भीतर की स्मृति को बाहर लाया जा सकता है। मैंने उस दिशा में बहुत से प्रयोग किये हैं इसलिए आपसे कहता हूं और जिस मित्र को भी इच्छा हो अपने पिछले जन्मों में जाने की उसे ले जाया जा सकता है। लेकिन पहले उसे इसी जन्म में पीछे लोटना पड़ेगा। इस जन्म की ही स्मृतियों में पीछे लौटना पड़ेगा। वहांतक पीछे लौटना पड़ेगा जहां वह मां के पेट में कंसीव हुआ, गर्भ धारण हुआ और उसके बाद फिर दूसरे जन्म की स्मृतियों में प्रवेश किया जा सकता है। लेकिन ध्यान रहे प्रकृति ने पिछले जन्मों को भुलाने की व्यवस्था अकारण नहीं की है। कारण बहुत महत्वपूर्ण है। और पिछले जन्म तो दूर हैं, अगर आपको एक महीने की ही सारी बातें याद रह जायें तो आप पागल हो जाएगे। एक दिन की नींद में अगर सुबह से शाम तक की सारी बातें याद रह जाये तो आप जिन्दा नहीं रह सकेगे। तो प्रकृति की सारी व्यवस्था यह है कि आपका मन जितना तनाव झेल सका है उतनी ही स्मृति आपके भीतर शेष रहने दी जाती है। शेष सब अन्धेरे गर्त में डाल दी जाती हैं। जैसे घर में एक कबाड़ होता है। बेकार चीजें आप कबाड़ घर में डालकर दरवाजा बन्द कर देते हैं वैसे ही स्मृति का एक कलेक्टिव हाउस, एक अनकासेस घर है, एक अचेतन घर है जहां स्मृति में जो बेकार होता चला जाता है जिसे चित्र में रखने की जरूरत नहीं है वह संग्रहीत होता रहता है। वहां जन्म जन्मों की स्मृतियां संग्रहीत हैं। लेकिन अगर कोई आदमी अनजाने, बिना समझे हुए उस घर में प्रविष्ट हो गया तो तत्क्षण पागल हो जाएगा। इतनी ज्यादा हैं वे संस्मृतियां।

एक महिला मेरे पास प्रयोग करती थीं। उनको बहुत इच्छा थी कि वे पिछले जन्मों को जानें। मैंने उनको कहा कि यह हो सकता है लेकिन आगे की जिम्मेदारी समझ लेनी चाहिए, क्योंकि हो सकता है पिछले जन्म को जानने से आप बहुत चिंतित और परेशान हो जायें। उन्होंने कहा कि नहीं, मैं क्यों परेशान होऊंगी। पिछला जन्म तो हो चुका है अब। क्या फिक्र की बात है,। उन्होंने प्रयोग शुरू किया। वे एक कालेज में प्राफेसर थीं। बुद्धिमान थीं, समझदार थीं, हिम्मतवर

थीं। उन्होने प्रयोग शुरू किया और जिस भांति मैने कहा उन्होने गहरे से गहरे मेटडीटेशन किए, गहरे से गहरा ध्यान किया। धीरे धीरे स्मृति के नीचे पतों कों उघाड़ना शुरू किया और एक दिन जिस पहली बार उन्हें पिछले जन्म में प्रवेश मिला वह भागती हुई आईं। उनके हाथ पैर कंप रहे थे। आंखों से आंसू बह रहे थे। एकदम छाती पीट पीटकर रोने लगीं और कहने लगीं कि मैं भूलना चाहती हूं उस बात को जो मुझे याद आ गयी। मैं उस पिछले जन्म में अब आगे नहीं जाना चाहती। मैने कहा अब मुश्किल है : जो याद आ गई उसे भूलने में फिर बहुत वक्त लग जाएगा। लेकिन इतनी घबराहट क्या है। उन्होने कहा, नहीं नहीं पूछिए ही मत। मैं तो सोचती थी कि मैं बहुत पतिव्रता हूं, बहुत सच्चरित्र हूं, लेकिन पिछले जन्म में एक मंदिर में वेश्या थी, दक्षिण की। मैं देवदासी थी और मैने हजारों पुरुषों के साथ सम्भोग किया और मैने अपने शरीर को बेचा। नहीं, मैं उसे भुलाना चाहती हूं। मैं उसे एक क्षण भी याद नहीं रखना चाहती। मैने कहा, अब इतना आसान नहीं है। याद करना बहुत. आसान है, भूल जाना बहुत मुश्किल है।

पिछले जन्म में जाया जा सकता है और जिसकी मर्जी हो उसके रास्ते हैं मेथडोलाजी। महावीर और बुद्ध दोनों मनुष्यों ने मनुष्य जाति को बड़े से बड़ा दान दिया है वह उनकी अहिंसा वहिंसा का सिद्धान्त नहीं है। वह सबसे बड़ा दान है जाति स्मरण का सिद्धान्त। वह है पिछले जन्मों की स्मृति में उतरने की कला। महावीर और बुद्ध दोनों पहले आदमी हैं पृथ्वी पर जिन्होने प्रत्येक साधक के लिए यह कहा कि तबतक तुम आत्मा से परिचित नहीं हो सकोगे जबतक तुम पिछले जन्मों में नहीं उतरते हो और उन्होने प्रत्येक साधक को पिछले जन्म में ले जाने की फिक्र की और एक बार कोई आदमी अपने पिछले जन्मों की स्मृतियों में जाने की हिम्मत जुटा ले वह दुसरा आदमी हो जाएगा, क्योंकि उसे पता चलेगा कि जिन बातों को मैं हजारों बार कर चुका हूं उन्हीं को फिर कर रहा हूं। कैसा पागल हूं, कितनी बार मैने सम्पत्ति इकट्ठी की है,, कितनी बार मैने करोड़ों के अम्बार लगा दिये, कितनी बार मैने महल खड़े किये, कितनी बार इज्जत ज्ञान और पद और कितनी बार दिल्ली के सिंहासनों की यात्रा कर ली है। कितनी बार, कितनी अनन्त बार, और फिर मैं वही कर रहा हूं और हर वह यात्रा असफल हो गई है। वहयात्रा इस बार भी असफल हो जाएगी। तत्क्षण उसकी सम्पत्ति की दौड़ बंद हो जाएगी, तत्क्षण उसके पदों का मोह नष्ट हो जाएगा। वह आदमी जानेगा मैने हजारों–हजारों वर्षा में कितनी स्त्रियां भोगी, स्त्रियां जानेंगी कि मैने

हजारों हजारों वर्षा में कितने पुरुष भोगे और न किसी पुरुष से तृप्ति मिली और न किसी स्त्री से तृप्ति मिली : और अब भी मैं यही सोच रहा हूं कि इस स्त्री को भोगूं, उस स्त्री को भोगूं, इस पुरुष को भोगूं, उस पुरुष को भोगूं । यह करोड़ बार हो चुका है ।

एक बार स्मरण आ जाय इसका तो फिर यह दोबारा नहीं हो सकता । क्योंकि इतने बार जब हम कर चुके हों ओर कोई फल न पाया हो तो फिर आगे उस दोहराये जाने का उपाय नहीं है, कोई अर्थ नहीं है । बुद्ध और महावीर दोनों ने जाति, स्मरण के गहरे प्रयोग किए । अतीत जन्मों की स्मृति के । और जो साधक, एक बार उस स्मृति से गुजर गया वह आदमी दूसरा हो गया, ट्रांसफार्म हो गया बदल गया । जिन मित्र ने पूछा है उनको जरूर कहूंगा कि अगर उनकी इच्छा हो तो उन्हें पिछली स्मृति में ले जाया जा सकता है । लेकिन सोच समझकर ही उस प्रयोग में जाया जा सकता है । इस जिन्दगी की चिंताएं ही काफी हैं, इस जिंदगी की परेशानियां ही बहुत है । इस जिन्दगी को भुलाने के लिए आदमी शराब पीता है, सिनेमा देखता है, तास खेलता है, जुआ खेलता है । इस जिन्दगी को भी भूलने के लिए । दिन भर को भूलने के लिए रात शराब पी लेता है । जो आदमी आज के दिन भर को याद नहीं रख सकता इतना साहस नहीं है कि जिन्दगी को फंस कर ले, वह आदमी कैसे पिछले जन्मों को याद करने की हिम्मत जुटा पाएगा । यह जानकर आपको हैरानी होगी कि सारे धर्मों ने शराब का विरोध किया है और यह सारे बिल्कुल न समझने वाले नेतागण जो दुनियां को समझाते हैं कि शराब का इसलिए विरोध किया है कि उससे चरित्र नष्ट हो जाता है, कि उससे घर की सम्पत्ति नष्ट हो जाती है, कि आदमी लड़ने झगड़ने लगता है । यह सब बेवकूफी की बातें हैं ।

धर्मों ने शराब का विरोध सिर्फ इसलिए किया है कि जो आदमी शराब पीता है वह अपने को भुलाने का उपाय कर रहा है और जो आदमी अपने को भुलाने का उपाय कर रहा है वह अपनी आत्मा से कभी भी परिचित नहीं हो सकता । क्योंकि आत्मा से परिचित होने के लिए तो अपने को जानने का उपाय करना है । इसलिए शराब और समाधि दो विरोधी चीजें बन गयीं । उनका इससे कोई मतलब नहीं है क्योंकि सच तो यह है और यह बात बहुत समझ लेने जैसी है । आमतौर से लोग समझते हैं कि शराबी आदमी बुरा होता है । मैं शराबियों को भी जानता हूं और उनको भी जो शराब नहीं पीते हैं । मैने आजतक हजारों अनुभव में यह पाया है कि शराब पीने वाला न पीने वाले से कई अर्थों में अच्छा

होता है। मैंने शराब पीने वालों में जितनी दया देखी और करुणा, उतनी मैंने गर शराब पीने वालों में नहीं देखी। मैंने शराब पीने वालों में जितनी विनम्रता देखी, जितनी ह्यमिल्टि उतनी मैंने शराब नहीं पीने वालों में नहीं देखी। जितनी अकड़ मैंने देखी शराब न पीनेवालों में उतनी अकड़ शराब पीने वालों में दिखायी नहींप ड़ी : लेकिन इन सारी बातों से नहीं किया है विरोध धर्म ने और यह जो सारे नेतागण समझाते फिरते हैं कि इसलिए विरोध किया है ? इसलिए विरोध नहीं किया है, विरोध किया है इसलिए कि जो आदमी अपने को भुलाने का उपाय करता है वह अपने साहस को छोड़ रहा है, याद करने के, रिमेंबरिंग के, स्मृति के। और जो आदमी इसी जन्म को भुलाने की फिक्र में लगा है वह पिछले जन्मों को याद कैसे कर सकेगा। और जो पिछले जन्मों को याद नहीं कर सकता वह इस जन्म को बदलेगा कैसे। फिर एक अंधा रिपीटीशन चलता रहेगा जो हमने बार बार किया है वही हम बार बार करते चले जायेंगे। अंतहीन है यह प्रक्रिया और जब तक हमें स्मरण नहीं होगा, हम बार बार जन्मेंगे और उन्हीं बेवकूफियों को बार बार करेंगे जिन्हें हमने बार बार किया है और इसका कोई अंत नहीं। इस बोर्डम का, इस श्रृंखला का कोई अर्थ नहीं है क्योंकि बार बार हम फिर मर जायेंगे, फिर भूल जायेंगे, फिर वही शुरू हो जायेगा। एक सर्किल की तरह, कोल्हू के बैल की तरह हम घूमते रहेंगे। जिन लोगों ने इस जिवन को संसार कहा, संसार का आप मतलब समझते हैं ? संसार का मतलब ह्वील, एक घूमता हुआ चाक जिसमें स्पोक जो हैं वे फिर ऊपर चले जाते हैं फिर नीचे, फिर ऊपर चले जाते हैं, फिर नीचे चले आते हैं।

वह जो हिन्दुस्तान के राष्ट्रीय ध्वजप्पर ह्वील बना हुआ है वह पता नहीं हिन्दुस्तान के सोचने समझने वालों ने किस वजह से वहां रख दिया। शायद उनको पता नहीं, वे न मालूम क्या सोचते होंगे। अशोक ने उस चक्र को इसीलिए खोद-वाया था अपने स्तूपों पर ताकि आदमी को पता रहे कि जिन्दगी एक घूमता हुआ चाक है, कोल्हू का बैल है। उसमें हर चीज घूमकर फिर वहीं आजाती है। फिर घूमनी शुरू हो जाती है, फिर घूमनी शुरू हो जाती है। वह जो ह्वील है संसार का प्रतीक है। वह हवील किसी विजय यात्रा का प्रतीक नहीं है। वह जिन्दगी के रोज हार जाने का प्रतीक है, वह इस बात का प्रतीक है कि जिन्दगी जो है वह एक रिपीटीटिव बोर्डम है, वह बार बार दोहरा जानेवाला चाक है। लेकिन हर बार हम भूल जाते हैं इसलिए दोबारा फिर बड़े रसलीन होकर दोहराने लगते हैं। एक यवक एक युवती की तरफ बढ़ रहा हो प्रेम करने को, उसे पता नहीं कि वह

कितनी बार बढ़ चुका है, कितनी युवतीयों के पीछे दौड़ चुका है, लेकिन अब फिर बढ़ रहा है और सोचता है कि जिन्दगी में पहली दफा यह घटना घट रही है। यह अद्‌भुत घटना है, यह अद्‌भुत घटना बहुत दफे घट चुकी है और अगर उसे ही पता चल जाय तो उसकी हालत वैसी हो जायगी जैसे किसी आदमी की एक फिल्म को दसपच्चीस दफा देख कर हो जाती है। अगर आप आज फिल्म देखने गये हैं तो बात और है, कल भी आपको ले जाया जाय तो आप बरदाश्त कर लेंगे। तीसरे दिन आप कहने लगेगे, क्षमा करिए, अब मैं नहीं जाना चाहता हूं। ले किन आपको मजबूर किया जाय कोई पुलिस वाले पीछे लगे हैं ये आपको ले ही जायेंगे और १५ दिन वही फिल्म, तो सोलहवें दिन आप गर्दन दबा कर मरने की कोशिश करेंगे कि अब इस फिल्म को मैं नहीं देखना चाहता हूं। यह हद हो गयी। १५ दिन देख चुका हूं और अब कबतक देखता रहूंगा लेकिन वह पुलिस वाला पीछे लगना चाहता है कि नहीं यह तो देखनी ही पड़ेगी। लेकिन अगर रोज फिल्म देखने के बाद अफीम खिला दी जाय और भूल जायें आप कि मैंने फिल्म देखी थी तो दूसरे दिन फिर आप टिकट लेकर उसी फिल्म में मौजूद हो सकते हैं और बड़े मजे से देख सकते हैं।

आदमी हर बार जब शरीर को बदलता है तब उस शरीर में संजोई गयी स्मृतियों का द्वार क्लोज हो जाता है, बन्द हो जाता है, फिर नया खेल शुरू हो जाता है, फिर वही खेल, फिर वही बात। फिर सब वही जो बहुत हो चुका है। जाति स्मरण से यह स्मरण आता है कि यह तो बहुत बार हो चुका है, यह कहानी तो बहुत बार देखी जा चुकी है, यह गीत तो बहुत बार गाये जा चुके हैं, यह तो बरदाश्त के बाहर हो गयी है बात। जाति स्मरण से पैदा होती है विरक्ति, जाति स्मरण से पैदा होता है वैराग्य, और किसी तरह वेराग्य उत्पन्न नहीं होता। वैराग्य उत्पन्न होता है जाति स्मरण से, रिमेंबरिंग आफ दी पास्ट, वह जो बीत गये जन्म हैं उनकी स्मृति से। और इसीलिए दुनिया में वैराग्य कम हो गया है क्योंकि पिछले जन्मों का कोई स्मरण नहीं, कोई उपाय नहीं। जिन मित्रों ने कहा है उन्हें मैं कहूंगा कि मेरी तैयारी पूरी है, मैं जो भी कहरहा हूं उसे सिर्फ इस-लिए नहीं कह रहा हूं कि मेरे लिए वह कोई सिद्धांत है। मैं जो भी कहा रहा हूं एक एक शब्द पर जिद्द के साथ प्रयोग करने की मेरी तैयारी है और कोई भी आदमी की तैयारी हो तो मुझे बहुत खुशी होगी। कल मैंने आमंत्रण दिया था कि जो लोग संकल्प करने की हिम्मत रखते हैं, दो चार मित्रों के पत्र आये और मुझे बहुत खुशी हुई। उन्होंने खबर दी हैकि हम बहुत उत्सुक हैं और हम

प्रतीक्षा में थे कि कोई हमें बुलाये और आपने पुकार दी तो हम राजी हैं। वह राजी हैं तो मुझे बहुत खुशी है और मेरा द्वार उनके लिए खुला है मैं उन्हें जितनी दूर ले चलना चाहूं वे जितनी चलना चाहें उतनी दूर उन्हें ले जाया जा सकता है। । इस बार जरूरत पड़ गयी दुनिया को कि कमसे कम थोड़े से लोग प्रबुद्ध हो सकें अगर थोड़े से लोग भी प्रबुद्ध हो सके तो हम मनुष्य जाति के सारे के सारे अंधकार को तोड़ सकते हैं।

हिन्दुस्तान में दो प्रयोग चलते थे पिछले पचास सालों में शायद आपको ख्याल में भी नहीं होगा कि हिन्दुस्तान में दो विपरीत ढंग के प्रयोग पचास सालों में चले। एक प्रयोग गांधी ने किया, एक प्रयोग श्री अरविन्द करते थे। गांधी ने एक एक मनुष्य के चरित्र को ऊपर उठाने का प्रयोग किया। उसमें गांधी सफल होते हुए दिखायी पड़े लेकिन बिल्कुल असफल हो गये और गांधी के पीछे जिन लोगों को गांधी ने सोचा था कि इनका चरित्र मैंने उठा लिया वे बिल्कुल मिट्टी के पुतले साबित हुए। जरा पानी गिरा और सब रंग रौगन बह गया। बीस साल में रंग रोगन बह गया वह हम सब देख रहे थे। दिल्ली में उनके नंगे शरीर खड़े हुए हैं, उनका सब रंग रोगन बह गया। कहीं कोई रंग रोगन नहीं है अब वह जो गांधी ने पोतपात के तैयार किया था वह बरसा में बह गया। जब तक पद की वर्षा नहीं हुई थी तबतक उनकी शकलें बहुत शानदार मालूम पड़ती थीं और उनके खादी के कपड़ बहुत धुले हुए दिखायी पड़ेते थे और उनकी टोपियों ऐसी लगती थीं कि मुल्कको ऊपर उठा लेंगी लेकिन आज वे ही टोपियां इस योग्य हो गयीं हैं कि गांव गांव में उनकी होली जलायी जाय क्योंकि वह बुर्जुआ, क्योंकि वह मुल्क के भ्रष्टाचार की प्रतीक बन गयी हैं। गांधी ने एक प्रयोग किया था जिसमें मालूम हुआ कि वे सफल हो रहे हैं लेकिन बिल्कुल असफल हो गये। गांधी जैसा प्रयोग बहुत बार किया गया और हर बार असफल हो गया। श्री अरविन्द एक प्रयोग करते थे जिसमें वे सफल होते हुए नहीं मालूम पड़े, नहीं सफल हो सके लेकिन उनकी दिशा बिल्कुल ठीक थी। वे यह प्रयोग कर रहे थे कि क्या यह संभव है कि थोड़ी सी आत्माएं इतने ऊपर उठ जायें कि उनकी मौजूदगी, उनकी प्रजेंस दूसरी आत्माओं को ऊपर उठाने लगे और पुकारने लगे और दूसरी आत्माएं ऊपर उठने लगें। क्या यह संभव है कि एक मनुष्य की आत्मा ऊपर उठे और उसके साथ पूरी मनुष्य की आत्मा का स्तर ऊपर उठ जाय। यह न केवल संभव है बल्कि केवल वही संभव है। दूसरी आज कोई बात सफल नहीं हो सकती। आज आदमी तो इतने नीचे गिर

चका है कि अगर हमने यह फिक्र की कि हम एक एक आदमी को बदलेंगे तो शायद यह बदलाहट कभी नहीं होगी बल्कि जो आदमी उनको बदलने जायगा उनके सत्संग में उसके खुद के बदल जाने की संभावना ज्यादा है। उसके बदल जाने की संभावना है कि वह भी उनके साथ भ्रष्ट हो जायगा। आप देखते हैं जितने जनता के सेवक, जनता की सेवा करने जाते हैं थोड़े दिन में पता चलता है कि वे जनता के जेब काटनेवाले सिद्ध होते हैं। वह गये थे सेवा करने, वह गये लोगों को सुधारने, थोड़े दिन में पता चलता है कि लोग उनको सुधारने का विचार करते हैं। नहीं यह नहीं हो सकता है। दुनिया का मनुष्य जाति की चेतना का इतिहास यह कहता है कि दुनिया की चेतना किन्हीं कालों में एकदम ऊपर उठ गयी, आपको शायद अन्दाज न हो। २५०० वर्ष पहले हिन्दुस्तान में बुद्ध पैदा हुए, प्रबुद्ध कात्यायन हुआ, मावली गोसाल हुआ, संजय विलाटीपुत्र हुआ। यूनान में सुकरात हुआ प्लेटो हुआ, अरस्तू हुआ, प्लटनस हुआ। चीन में लाओत्से हुआ, कंफ्युशस हुआ, च्वांतसे हुआ। २५०० साल पहले सारी दुनिया में कुल दस पन्द्रह लोग इतनी कीमत के हुए कि उन एक सौ वर्षों में दुनिया की चेतना एकदम आकाश छुने लगी। सारी दुनिया का स्वर्ण युग आ गया ऐसा मालूम हुआ। इतनी प्रखर आत्मा मनुष्य की कभी प्रगट नहीं हुई थी। महावीर के साथ पचास हजार लोग दिये की तरह जल गये और गांव गांव घूमने लगे। बुद्ध के साथ हजार भिक्षु खड़े हो गये और उनकी रोशनी और उनकी ज्योति गांव गांव को जगाने लगी। जिस गांव में बुद्ध अपने दस हजार भिक्षुओं को लेकर पहुंच जाते, तीन दिन के भीतर उस गांव की हवा के अणु बदल जाते। जिस गांव में वे दस हजार भिक्षु बैठ जाते, जिस गांव में वे दस हजार भिक्षु प्रार्थना करने लगते उस गांव से जैसे अंधकार मिट जाता जैसे उस गांव में रोशनी छा जाती। जैसे उस गांव के हृदय में कुछ फूल खिलने लगते जो कभी नहीं खिले थे। कुछ थोड़े से लोग उठे ऊपर और उनके साथ ही नीचे के लोगों की आखें ऊपर उठीं। नीचे के लोगों की आखें तभी ऊपर उठती हैं जब ऊपर देखने जैसा कुछ हो। ऊपर देखने जैसा कुछ भी नहीं है, नीचे देखने जैसा बहुत कुछ है। जो आदमी जितना नीचे उतर जाता है उतनी बड़ी तिजोरी बना लेता है। जो आदमी जितना नीचे उतर जाता है वह उतनी बढ़िया केडलक खरीद लाता है। तो नीचे देखने जैसा बहुत कुछ है। दिल्ली बिल्कुल गड्ढे में बस गयी है, बिल्कुल नीचे। वहां नीचे देखो, पाताल में दिल्ली है। तो जिसको भी दिल्ली पहुंचना हो उसको पाताल में उतरना चाहिए, नीचे नीचे उतरते जाना चाहिए। ऊपर देखने जैसा कुछ भी नहीं है। किसकी तरफ

देखेगे, कौन है ऊपर ओर इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है कि ऊपर देखने जैसी आत्माएं नहीं हैं जिनकी तरफ देखकर प्राणों में आकर्षण उठता है, जिनकी तरफ देखकर प्राणों में पुकार उठती है, जिनकी तरफ देखकर प्राण धिक्कारने लगतेहैं अपने को कि यह दिया तो मैं भी हो सकता था, यह फल तो मेरे भीतर भी खिल सकते थे, यह गीत तो मैं भी गा सकता था। यह बुद्ध, और यह महावीर और यह कृष्ण और क्राइस्टप में भी हो सकता था। एक बार यह ख्याल आजाय कि मैं भी हो सकता था। यहां लेकिन कोई हो तो जिसे देखकर य ह ख्याल आजाय तो प्राण ऊपर की यात्रा शुरू कर देते हैं और स्मरण रहे प्राण हमेशा यात्रा करते हैं, अगर ऊपर की नहीं करते हैं तो नीचे की करते हैं। प्राण रुकते कभी नहीं हैं या तो ऊपर जायेंगे या नीचे, रुकेंगे जैसी कोई चीज नहीं है। ठहराव जैसी कोई बीचीज नहीं है, स्टेशन जैसी कोई जगह नहीं है चेतना के जगत में कि जहां आप रुक जायें और विश्राम कर लें या ऊपर या नीचे। जीवन प्रति क्षण गतिमान है। ऊपर की तरफ चेतनाएं खड़ी करनी हैं।

मैं सारी दुनियां में एक आंदोलन चाहता हूं। बहुत ज्यादा लोगों का नहीं, थोड़े से हिम्मतवर लोगों का जो प्रयोग करने को राजी हों। अगर सौ लोग हिन्दुस्तान में प्रयोग करने को राजी हों और सौ लोग तय कर लें इस बात की कि हम अब आत्मा को उन ऊंचाइयों तक ले जायेंगे जहां आदमी का जाना संभव है। २० वर्ष में हिन्दुस्तान की पूरी शकल बदल सकती है। विवेकानंद ने मरते वक्त कहा था कि मैं पुकारता रहा सो लोगों को, सो लोग आजाओ, लेकिन वे सौ लोग नहीं आये और मैं हारा हुआ मररहा हूं। सिर्फ सो लोग आजाते तो मैं देश को बदल देता, लेकिन विवेकानंद पुकारते रहे, सौ लोग नहीं आये और मैंने तय किया है कि मैं पुकारूंगा नहीं, गांव गांव खोजूंगा, आंख आंख में झांकूंगा कि वह कौन आदमी है। जो आदमी अगर पुकारने से नहीं आता है तो खींचकर लाना पड़ेगा। अगर सौ लोगों को भी लाया जा सके तो यह मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि सौ लोगों की उठती हुई आत्माएं एक एवरेस्ट की तरह, एक गौरीशंकर की तरह खड़ी हो जायेंगी। पूरे मुल्क के प्राण उस यात्रा पर आगे बढ़ सकते हैं। जिन मित्रों को मेरी चुनौती ठीक लगती हो और जिनको साहस और बल मालूम पड़ता हो कि जाने की हिम्मत है उस रास्ते पर जो बहुत अपरिचित है, उस रास्ते पर, उस समुद्र, में जिसका कोई नकशा नहीं है हमारे पास तो उसमें जाने की जिसकी भी हिम्मत हो, जिसका भी साहस हो उसे समझ लेना चाहिक कि उसमें इतनी हिम्मत और साहस सिर्फ इसलिए है कि बहुत गहरे में परमात्मा ने

उसको पुकारा होगा नहीं तो इतना साहस और इतनी हिम्मत नहीं हो सकती थी। भिसर में कहा जाता था कि जब कोई परमात्मा को पुकारता है तो उसे जान लेना चाहिए कि उससे बहुत पहले परमात्मा ने उसे पुकार लिया होगा अन्यथा पुकार ही पैदा नहीं होती। जिनके भीतर भी पुकार है उनके ऊपर एक बड़ा दायित्व है आज जगत के लिए। आज तो जगत के कोने कोने जाकर कहने की यह बात है कि कुछ थोड़े से लोग बाहर निकल आयें और सारे जीवन को समर्पित कर दें ऊंचाइयों अनुभव करने के लिए। जीवन के सारे सत्य, जीवन के आज तक के सारे अनुभव असत्य हुए जा रहे हैं। जीवन के आज तक की जितनी ऊंचाइयां थीं, जो छुई गयीं थीं, वह सब काल्पनिक हुई जा रहीं हैं। पुराण कथाएं हुई जा रही हैं। सौ दो सौ वर्ष बाद बच्चे इन्कार कर देंगे कि बुद्ध और महावीर और क्राइस्ट जैसे लोग नहीं हुए, ये सब कहानियां हैं। एक आदमी ने तो पश्चिम में एक किताब लिखी है और उसने लिखा है कि क्राइस्ट जैसा आदमी कभी नहीं हुआ है। यह सिर्फ एक पुराना ड्रामा है। जो धीरे धीरे लोग भूल गये कि ड्रामा है और लोग समझने लगे कि हिस्ट्री है। अभी हम रामलीला खेलते हैं। हम समझते हैं राम कभी हुए और इसलिए हम रामलीला खेलते हैं। सो वर्ष बाद बच्चे कहेंगे कि रामलीला लिखी जाती रही और लोगों में भ्रम पैदा हो गया कि राम कभी हुए। रामलीला एक नाटक रहा होगा। बहुत दिनों से चलता रहा क्योंकि जब हमारे सामने राम और बुद्ध और क्राइस्ट जैसे आदमी दिखायी पड़ने बन्द हो जायेंगे तो हम कैसे विश्वास कर लें कि ये लोग कभी हुए।

फिर आदमी का मन कभी यह मानने को राजी नहीं होता कि उससे ऊंचे आदमी भी हो सकते हैं। आदमी का मन यह मानने को कभी भी राजी नहीं होता कि मुझसे ऊंचा भी कोई है। हमेशा उसके मन में एक मानने का मन यह होता है कि मैं सबसे ऊंचा आदमी हूं। अपने से ऊंचे आदमी को तो बहुत मजबूरी में मानता है, नहीं तो कभी मानता नहीं है। हजार कोशिश करता है खोजने की कि कोई भूल मिल जाय, कोई खामी मिल जाय, तो बता दूं कि यह आदमी भी नीचा है। तृप्त हो जाऊं कि नहीं यह बात गलत थी। कोई पता चल जाय तो जल्दी से घोषणा कर दूं कि पुरानी मूर्ति खंडित हो गयी, वह पुरानी मूर्ति अब मेरे मन में नहीं रही वह खंडित हो गयी क्योंकि इस आदमी में यह गलती मिल गयी। खोज इसी की चलती थी कि कोई गलती मिल जाय। नहीं मिल जाय तो ईजाद कर लो ताकि तुम निश्चित हो जाओ अपनी मूढ़ता में और तुम्हें लगे कि मैं बिल्कुल ठीक हूं। आदमी धीरे धीरे सबको इन्कार कर देगा क्योंकि उनके प्रतीक,

उनके चिन्ह कहीं भी दिखायी नहीं पड़ते। पत्थर की मूर्तियां कबतक बतायेंगी कि बुद्ध हुए थे और महावीर हुए थे और कागज पर लिखे गये शब्द कब तक समझायेंगे कि क्राइस्ट हुए थे और कबतक तुम्हारी गीता बता पायेगी कि कृष्ण थे। नहीं, ज्यादा दिन यह नहीं चलेगा। हमें आदमी चाहिए जीसस जैसे, कृष्ण जैसे बुद्ध जैसे, महावीर जैसे। अगर हम वैसे आदमी आने वाले पचास वर्षों में पैदा नहीं करते हैं तो मनुष्य जाति एक अत्यंत अंधकारपूर्ण युग में प्रविष्ट होने को है। उसका कोई भविष्य नहीं है। जिन लोगों को भी लगता हो कि जीवन के लिए वह कुछ कर सकते हैं उनके लिए एक बड़ी चुनौती है और मैं तो गांव गांव यह चुनौती देते हुए घूमूंगा और जहा भी मुझे कोई आंखें मिल जायेंगी कि लगेगा कि यह दिया बन सकती है, इनमें ज्योति जल सकती है तो मैं अपना पूरा श्रम करने को तैयार हूं। मेरी तरफ से पूरी तैयारी है। देखना है कि मरते वक्त मैं भी कहीं यह न कहूं कि सौ आदमियों को खोजता था, वह मुझे नहीं मिले।

मेरी बातों को इतने प्रेम और शांति से सुना उसके लिए बहुत अनुग्रहीत हूं और अंतमें सबके भीतर बैठे परमात्मा को प्रणाम करता हूं। मेरे प्रणाम स्वीकार करें। ● ●

आचार्य श्री रजनीश जी के नूतन और मौलिक–सृजनात्मक क्रांतिकारी विचारों का देश का एकमात्र पाक्षिक पत्र :

'युक्रान्द'

(युवक क्रांतिदल का मुख्य पत्र)

जिसका प्रवेश अंक १५ जून, ६९ का सदस्यता हेतु उपलब्ध है।

नियमित प्रकाशन : १ जुलाई, ६९ से।

आजीवन सदस्य शुल्क : २००, रू.

दस वार्षिक सदस्य शुल्क : दस वार्षिक सदस्य शुल्क : १०० रू.

पांच वार्षिक सदस्य शुल्क : ५० रू.

वार्षिक सदस्य शुल्क १२, रू.

संपादक : अजित कुमार, एम् काम., एल. एल. बी.

प्रकाशन एवं प्राप्ति स्थल तथा सदस्यता शुल्क भेजने के लिए पता : अजितकुमार द्वारा : युक्रान्द जबलपुर। प्रकाशन समिति , कमला नेहरू नगर,

युक्रान्द क्या है ?

संकलन : कुमारी पुष्पा पंजाबी

युवक क्रांति दलकी इस पहली बैठक में संबोधित करते हुए मैं अत्यन्त आनंदित हूं। युवक क्रांति दल के संबंध में पहली बात तो यहलेनी जरूरी है कि मैं युवक किसे कहता हूं। युवक क्रांति दल की दृष्टि में युवक होने का संबंध उम्र और आयु से नहीं है। युवक से अर्थ है ऐसा मन जो सदा सीखने को तत्पर है। ऐसा मन जिसे यह भ्रम पैदा नहीं हो गया हैकि जो भी जानने योग्य था वह जान लिया गया है। ऐसा मन जो बूढ़ा नहीं हो गया है और स्वयं को रूपांतरीत और बदलनेको तैयार है। बूढ़े मन से अर्थ होता है एसा मन, जो अब आगे इतना लोचपूर्ण नहीं रहा है कि नये को ग्रहण कर सके, नये का स्वागत कर सके। बूढ़े मन का अर्थ है पुराना पड़ गया है मन। उम्र से उसका भी कोई संबंध नहीं है। आदमी है शरीर की उम्र होती है, मन की कोई उम्र नहीं होती है। मन की दृष्टि होती है, धारणा होती है।

इस देश में युवक हजारों वर्षों से पैदा होने बन्द हो गये हैं। इस देश में बचपन आता है और बुढ़ापा आता है। युवक कभी भी पैदा नहीं होता है। वह बीच की कड़ी खो गयी है इसीलिए तो देश इतना पुराना पड़ गया है, इतना जरा जीर्ण हो गया है, इतना बूढ़ा हो गया है। जिस देश में युवक होते हैं उस देश में इतने बुढ़ापे आने का कोई भी कारण नहीं है। इससे ज्यादा बुढ़ा देश पृथ्वी पर और कहीं नहीं है। हमारी पूरी आत्मा बूढ़ी और पुरानी पड़ गयी है। हमारी सारी तकलीफ और पीड़ा के पीछे बुनियादी कारण यही है कि हमारे पास युवा चित्त, यंग माइंड नहीं है। युवक क्रांति दल इस देश में युवा चित्त को पैदा करना चाहता है। युवा चित्तका अर्थ है जो सख्त नहीं हो गया, कठोर नहीं हो गया, पत्थर नहीं हो गया, अभी बदल सकता है, रूपांतरित हो सकता है, अभी सीख

सकता है। उसने सब कुछ सीख नहीं लिया।

स्वामी रामतीर्थ की उम्र केवल तीस वर्ष थी और वे हिन्दुस्तान के बाहर गये थे। पहली बार उन्होंने जापान की यात्रा की। वे जिस जहाज पर सवार थे उस जहाज के डेक पर एक जापानी बूढ़ा, एक बूढ़ा जिसकी उम्र कोई ९० वर्ष होगी; जिसके हाथ पैर कंपते थे, जिसके चलने में तकलीफ होती थी, जिसकी आंखें कमजोर पड़ गयी थीं, वह चीनी भाषा सीख रहा था। चीनी भाषा जमीन पर बोली जानेवाली कठिनतम भाषाओं में से एक है। चीनी भाषा को सीखना सामान्यतया बहुत श्रम की बात है : कोई दस पन्द्रह वर्ष, बीस वर्ष ठीक से मेहनत करे तो चीनी भाषा में ठीक से निष्णात हो सकता है। बीस वर्ष जिसके लिए मेहनत करनी पड़े, ९० वर्ष का बूढ़ा उसे अब इसे सीखना शुरू कर रहा हो, पागल है। कब सीखेगा वह ? कब सीख पायेगा ? कौन सी आशा है उसको बच जाने की बीस साल बचेगा। और अगर बीस साल बच भी जाय और निष्णात भी हो जाय चीनी भाषा में तो उसका उपयोग कब करेगा ? जिस चीज को सीखने में पन्द्रह बीस वर्ष खर्च करने पड़ें उसके लिए भी तो दस पच्चीस पच्चास वर्ष हाथ में चाहिए। यह उपयोग कब करेगा ? रामतीर्थ परेशान हो गये उसको देख देखकर, और वह सुबह से शाम तक सीखने में लगा हुआ है। नहीं बरदास्त के बाहर हुआ तो उन्होंने तिसरे दिन उससे पूछा कि क्षमा करें, आप इतने वृद्ध हैं, ९० वर्ष पार कर गये मालूम पड़ते हैं, आप यह भाषा सीख रहे हैं, यह कब सीख पायेंगे ? कब बच पायेंगे आप सीखने के बाद, कब इसका उपयोग करेंगे ? उस बूढ़े आदमी ने आंखें ऊपर उठायी और उसने कहा, तुम्हारी उम्र कितनी है ? रामतीर्थ ने कहा, मेरी उम्र कोई तीस वर्ष होगी। वह बूढ़ा हंसने लगा और उसने कहा, मैं अब समझ पाता हूं कि हिन्दुस्तान इतना कमजोर, इतना हारा हुआ क्यों हो गया है। उस ने कहा, जब तक मैं जिन्दा हूं और मर नहीं गया हूं और जबतक जिन्दा हूं तबतक कुछ न कुछ सीख ही लेना है नहीं तो जीवन व्यर्थ हो जायगा। मरना तो एक दिन है। वह तो जिस दिन में पैदा हुआ उसी दिन से तय है, मरना एक दिन है। अगर मैं मृत्यु का ध्यान रखता तो शायद कुछ भी नहीं सीख पाता क्योंकि एक दिन मरना है, लेकिन जबतक जिन्दा हूं मैं पूरी तरह जिन्दा रहना चाहता हूं और पूरी तरह जिन्दा वही रह सकता है जो जीते जीते एक एक पल का, एक एक क्षण का नया कुछ सीखने में उपयोग कर रहा है।

जीवन का अर्थ नये का रोज रोज अनुभव जिसने नये का अनुभव बन्द कर

दिया है वह मर चुका है, उसकी मृत्यु कभी की हो चुकी। उसका अब अस्तित्व बेकार है, वह मरने के बाद अब किसी तरह जी रहा है। उस बूढ़े आदमी ने कहा, मैं सीखूंगा, जबतक जीता हूं और परमात्मा से एक ही प्रार्थना है कि जब मैं मरूं तो मृत्यु के क्षण में भी सीखता हुआ मरूं ताकि मृत्यु, मृत्यु जैसी न मालूम पड़े। वह भी जीवन प्रतीत हो।

सीखने की प्रक्रिया है जीवन। ज्ञान की उपलब्धि है जीवन लेकिन इस देश का दुर्भाग्य है कि हमने सीखना तो हजारों साल से बन्द कर दिया है। हम नया कुछ भी सीखने को उत्सुक और आतुर नहीं हैं। हमारे प्राणों की प्यास ठंडी पड़ गयी है, हमारी चेतना की ज्योति ठंडी पड़ गयी है, हमें एक भ्रम पैदा हो गया है कि हमने सब सीख लिया है, हमने सब पा लिया, हमने सब जान लिया। जानने को अनंत शेष है। आदमी का ज्ञान कितना ही ज्यादा हो जाये, उस विस्तार के सामने ना कुछ है जो सदा जानेने को शेष रह जाता है। ज्ञान तो थोड़ा सा है, अज्ञान बहुत बड़ा है। उस अज्ञान को जिसे तोड़ना है उसे सीखते ही जाना होता है, सीखते ही जाना होगा। लेकिन भारत में यह सीखने की प्रक्रिया और युवा होने की धारणा ही खो गयी है। यहां हम बहुत जल्दी सक्ख्त हो जाते हैं, कठोर हो जाते हैं, लोच खो देते हैं। बदलाहट की क्षमता, रिसिप्टीविटी ग्राहकता सब खो देते हैं। एक जवान आदमी से यह बात करो तो वह इस तरह बात करता है जैसे उसने अपनी सारी धारणाएं सुनिश्चित कर ली हैं। उसका सब ज्ञान ठहर गया है, उसकी आंखों में इन्वेलरी नहीं मालूम होती है, खोज नहीं मालूम होती। ऐसा लगता है उसने पा लिया है, जान लिया है, सब ठीक ठीक है। आगे अब कुछ करने को शेष नहीं रह गया है। प्राण इस तरह बूढ़े हो जाते हैं, व्यक्तित्व इस तरह जराजीर्ण हो जाता है और हजार वर्षों से इस देश का व्यक्तित्व जराजीर्ण है।

युवक क्रांति दल इस जराजीर्ण व्यक्तित्व को तोड़ देना चाहता है। आकांक्षा यह है कि हम भारत की युवा चेतना को जन्म दे सकें। युवा चेतना का दूसरा लक्षण है साहस। भारत से साहस भी खो गया है, सीखना भी खो गया है, जिज्ञासा भी खो गयी। हम तो अंधेरे में जाने से भी भयभीत होते हैं, अनजान रास्ते पर जाने से भयभीत होते हैं, सागर में उतरने से भयभीत होते हैं और बहुत छोटी चीजें हैं। जो इन अनजान चीजों से भयभित होता है वह चेतना के अनजान लोकों में, अननोन में कैसे प्रवेश करेगा, वहां तो वह डर के लौट आयेगा, वहीं बैठा रहेगा जहां है। जीवन की कुछ अनजान गहराइयां, ऊँचाइयां हैं, उनकी यात्रा भी

बन्द है। हमने कुछ सूत्र याद कर लियें हैं, हम उन्हीं को याद करके चुप बैठे रह जाते हैं। व्यक्तित्व हमारी एक साहसपूर्ण, एक एडवेंचरस खोज नहीं है, न तो बाहर के जगत में। हिमालय पर चढ़ने के लिए बाहर से यात्री आते रहे हैं, प्रतिवर्ष उनके दल के दल आते रहे। वे मरते रहे, टूटते रहे, पहाड़ों से गिरते रहे, खोते रहे, लेकिन उनके दलों के आने में कमी नहीं हुई, वे आते रहे। हिमालय पर चढ़ना था, एक अज्ञात शिखर बाकी था जहां मनुष्य के पैर नहीं पहुंचे थे। लेकिन हम, हम हंसते रहे कि कैसे पागल हैं, क्या जरूरत है एवरेस्ट पर जाने की, क्या प्रयोजन है ? क्यों अपनी जान जोखिम में डालते हैं। हम हंसते रहे कि ये पागल हैं, क्यों अपनी जान जोखिम में डालते हैं ? हम, जिनका एवरेस्ट है उन्होंने उसपर चढ़ने की कोई तीव्र आकांक्षा पैदा नहीं की। यह सवाल एवरेस्ट पर चढ़ने का और हिन्द महासागर की गहराइयों में उतर जाने का ही नहीं है। इससे हमारे व्यक्तित्व का पता चलता है कि हम अज्ञान के प्रति आतुर हैं कि उसका पता उघाड़लेंगे, कि उसे हम जानने में लग जायेंगे। फिर जीवन का बहुत कुछ अज्ञान है, पदार्थ का अज्ञात लोक है, साइंस उसे खोजती है। हमने कोई साइंस विकसित नहीं की।

तीन हजार वर्ष के लंबे इतिहास में हमने कोई साइंस विकसित नहीं की क्यों ? एक ही उत्तर हो सकता है कि हमें अज्ञानत की पुकार सुनाई नहीं पड़ती। वह जो अननोन है, वह जो चारों तरफ से घेरे हुए है वह हमें बुलाता है लेकिन हमें सुनायी नहीं पड़ता। हम बहरे हो गये हैं, हमें तो जो ज्ञात है हम उसी के घर में बैठकर जी लेते हैं और समाप्त हो जाते हैं। क्यों हमें अज्ञात की पुकार सुनायी नहीं पड़ती ? अज्ञान का आवाहन हमारे प्राणों को आंदोलित नहीं करता क्यों ? सिवाय इसके कि हमारे भीतर, साहस नहीं है क्यों कि अज्ञात को जानेके लिए साहस चाहिए। ज्ञात को, नोन को जीने के लिए किसी साहस की जरूरत नहीं है। इसीलिए तो भारत ने कभी भारत के बाहर जाकर अभियान नहीं किये। उन्होंने कोई लंबी यात्राएं नहीं कीं, उन्होंने पृथ्वी की कोई खोज बीन नहीं की। वे नहीं गये दूर दूर उत्तर ध्रुवों तक, नहीं दक्षिण ध्रुव तक। न ही वे आज चांद तारों पर जाने की आकांक्षा से भरे हैं। साहस नहीं है। साहस की कमी होती है तो हम वहीं रहना चाहते हैं जहा परिचित लोग हैं, जहां जाना माना है उसी रास्ते पर चलते हैं जिसपर बहुत बार चल चुके हैं क्योंकि अनजान रास्ते पर कांटे हो सकते हैं, गड्ढे हो सकते हैं, भटकना हो सकता है। अनजान रास्ते पर भूल हो सकती है, अनजान रास्ते पर हम खो सकते हैं। इस सारे भयों ने हमें इतना

पकड़ लिया है कि हम ज्ञात पर ही चलते हैं कोल्हू के बैल की तरह हम चक्कर लगाते रहते हैं। लकीर है जानी हुई वह पीटते रहते हैं।

ऐसे कभी इस देश की आत्मा का उदय होगा ? ऐसे भयभीत होकर कभी इस देश के प्राण जागरूक हो सकेंगे ? ऐसे डरे डरे हम जगत की दौड़ में साथ खड़े हो सकेंगे जहां चेतनाएं दूर दूर की यात्रा कर रही हों, जहां रोज अज्ञात की पुकार सुनी जाती हो, जहां रोज अज्ञात की दिशा में कदम रखे जाते हों, जहां जीवन के एक एक रहस्य में प्रवेश करने की सारी चेष्टा की जा रही हो। उन सारे दुनिया के युवकों के मुल्क, युवकों के सामने, युवक मुल्कों के सामने हमारा बूढ़ा और पुराना देश खड़ा रह सकेगा ? हम जी सकेंगे उनके सामने ? नहीं, हम नहीं जी सकेंगे। और फिर हमारे नेता कहते हैं कि हमारा युवक सिर्फ नकल करता है। नकल नहीं करेगा तो क्या करेगा ? अपनी तो कोई खोज नहीं कर सकता है इसलिए जो खोज करते हैं उनकी नकल करने के सिवाय हमारे पास कुछ भी नहीं बचा है, हमारा पूरा व्यक्तित्व इमीटेशन है, पश्चिम का। हम पश्चिम की नकल कर रहे हैं। करेंगे हम, क्योंकि उनके साथ खड़े होने का इसके अतिरिक्त कोई उपाय नहीं है। हमारी तो अपनी कोई खोज नहीं है, हमारा तो अपना कोई उद्घाटन नहीं, अन्वेषण नहीं, हमारी तो अपनी कोई शोध नहीं, हमारे तो अपने कोई रास्ते नहीं हैं। हमें उनकी नकल करनी ही पड़ेगी। और ध्यान रहे, एक चार बार जब हम बाहर के जगत में नकल करना शुरू करते हैं तो भीतर हमारी आत्मा मरनी शुरू हो जाती है। क्यों ? क्योंकि आत्मा कभी भी नकल नहीं बन सकती है। आत्मा कार्बन कापी नहीं बन सकती है। आत्मा का अपना व्यक्तित्व है, अनूठा यूनिक। और जब भी बाहर से नकल करना शुरू करते हैं तभी भीतर हमारे प्राण सिकुड़ जाते हैं, तभी भीतर हमारे प्राण मुर्झा जाते हैं क्योंकि उन प्राणों की अपनी प्रतिमा का अपना द्वार होता, अपना मार्ग होता है। बाहर से नकल करने वाले लोग भीतर से मर जाते हैं लेकिन हम हमेशा नकल करते रहे हैं।

आप कहेंगे कि पश्चिम की नकल तो हमने अभी अभी शुरू की है। पहले ? पहले हम अतीत की नकल करते थे अब पश्चिम की नकल कर रहे हैं इतना फर्क पड़ा है और कोई फर्क नहीं पड़ा है। पहले हम जो बीत चुका था उसकी नकल करते थे, जो हो चुका था जा चुका था, उस इतिहास की जो पीछे था हमारे उसकी हम नकल करते थे क्योंकि कंटेम्पररी जगत का हमें भी पता नहीं था। तो हमारे सामने एक ही जगत था, बीता हुआ और हम थे। तो हम बीते की नकल करते थे। राम की, कृष्ण की, बुद्ध की, महावीर की हम नकल करते थे। हम अतीत की

नकल करके जीते थे ।अब हमारे सामने कंटेम्परेरी वर्ल्ड खुल गया है । अब इतिहास घुंघला मालूम होता है । चारों तरफ फैली हुई दुनियां हमें ज्यादा स्पष्ट दिखायी पड़ती है । हम उसकी नकल कर रहे हैं । लेकिन हम हजारों साल से नकल ही कर रहे हैं चाहे बीते हुए लोगों की और चाहे हमसे दूर जो आस पास खड़ा हुआ जगत है उसकी । लेकिन हमने अपनी आत्मा को विकसित करने की हिम्मत खो दी, साहस खो दी ।

युवक क्रांतिदल साहस को पुनरुज्जीवित करना चाहता है बाहर के जगत जीवन में भी और अंतस के जगत और जीवन में भी । साहस टूट सके, वह कारा टूट सके, दीवालें टूट सकें और साहस की धारा बह सके भीतर से उसकी फिक्र करनी है । लेकिन हमारी सारी धारणाएं साहस के विरोध में हैं । अगर साहस करना है तो संदेह करना पड़ेगा और अगर साहस नहीं करना है तो विश्वास कर लेना हमेशा अच्छा है । साहस करना है तो डाउट चाहिए और अगर साहस नहीं करना है तो फेथ, बिलीव्हस श्रद्धा, विश्वास चाहिए । हमारा सारा देश विश्वास करनेवाला देश है । मान लेना है हमें जो कहा जाता है उसपर सोचना नहीं है, विचार नहीं करना है क्योंकि सोचने और विचार करने में फिर खतरा है । हो सकता है मानी हुई मान्यताओं से विपरीत जाना पड़े हमें । हो सकता है मानी हुई मान्यताएं तोड़नी पड़ सकती हैं, जो स्वीकृत है, जो पक्ष है हमारा वह गलत सिद्ध हो यह हम सहने को राजी नहीं हैं इसलिए उसकी तरफ आंख हो नहीं खोलनी है । शुतुर्मुर्ग निकलता है और अगर दुश्मन उसका आ जाय तो वह रेत में मुंह गड़ा के खड़ा हो जाता है ।आंख बन्द हो जाती है रेत में तो शुतुर्मुर्ग कोदिखाई नहीं पड़ता है । दुश्मन खुश हो जाता है । वह मान लेता है जो नहीं दिखाई पड़ता है वह नहीं है । शुतुमुर्ग को क्षमा किया जा सकता है, आदमी को क्षमा नहीं किया जा सकता । लेकिन भारत शुतुर्मुर्ग के तर्क का उपयोग कर रहा है आजतक । वह कहता है, जो चीज नहीं दिखाई पड़ती है वह नहीं है इसलिए विश्वास का अन्धापन ओढ़ लेता है और जीवन को देखना बन्द कर देता है । जीवन में नग्न सत्य है । जिन्हें देखने में पीड़ा हो सकती है, लेकिन वे हैं । चाहे उनकी कितनी ही पीड़ा हो, उन्हें आंख खोलकर देखना पड़ेगा । क्योंकि आंख खोलकर देखने पर ही हम उन्हें रूपान्तरित करने में बदलने में, ट्रांसफर करने में भी सफल हो सकते हैं । आंख बन्द कर लेने से हम अन्धे हो सकते हैं लेकिन तथ्य बदल नहीं जाते । हम सारे तथ्यों को छिपाकर जी रहे हैं । क्योंकि विश्वास की एक गैर साहसपूर्ण धारणा हमने पकड़ ली है । सन्देह की साहसपूर्ण यात्रा हमारी नहीं है । इस वजह से कि

साहस कम हो गया है, अकेले होने की हिम्मत हमारी समाप्त हो गई है। और ध्यान रहे, युवक का अनिवार्य लक्षण है अकेले होने की हिम्मत। दि करेज टू स्टेण्ड एलोन। वह युवक होने का एक अविार्य लक्षण है। हम भीड़ के साथ खड़े हो सकते हैं जहां सारे लोग जाते हैं वहां हम जा सकते हैं। हम वहां नहीं जा सकते जहां आदमी को अकेला जाना पड़ता है। नयी जगह तो आदमी को सदा अकेला जाना पड़ता है। किसी एक व्यक्ति को अकेले चलने की हिम्मत करनी पड़ती है। क्योंकि भीड़ तो पहले प्रतीक्षा करेगी कि पता नहीं रास्ता कैसा है। अकेले आदमी को हिम्मत जुटानी पड़ती है। हमने अकेले होने की हिम्मत कब खो दी, पता नहीं। हम अकेले खो ही नहीं सकते। हमें भीड़ चाहिए हमेशा साथ ही हम खेड़े हो सकते हैं। फिर हम युवा नहीं रह जाते। फिर वह जो यंग माइंड हैं वह हममें पैदा नहीं हो पाता।

युवक क्रांति दल चाहता है, अकेले होने का साहस, एक एक युवक में पैदा होनी चाहिए। जिस दिन एक एक युवक अकेला खड़े होने की हिम्मत करता है उस पहली बार उसकी आत्मा प्रगट होनी शुरू होती है, उसकी प्रतिभा प्रगट होनी शुरू होती है। जब वह कहता है कि चाहे सारी दुनिया यह कहती हो लेकिन जबतक मेरा विवेक नहीं मानता, मैं अकेला खड़ा रहूंगा। मैं सारी दुनियां के प्रवाह के विपरीत तैरूंगा। नदी इस तरफ जाती है पूरब। मुझेन हीं प्रतीत होता। मुझे नहीं तर्क कहता, नहीं विवेक कहता कि पूरब जाऊं। मैं पश्चिम की तरफ जाऊँगा और टूट जाऊंगा। नदी की धार में। लेकिन कोई फिक्र नहीं। धार के साथ तभी तैरूंगा जब मेरा विवेक मेरे साथ होगा। जिस दिन कोई व्यक्ति जीवन की धारा के विपरित अपने विवेक के अनुकूल तैरने की कोशिश करता है पहली बार उसके जीवन में वह चेलेन्ज आती है, वह संघर्ष आता है, वह स्ट्रगल आती है जिसमें संघर्ष और चुनौती में गुजर के उसकी आत्मा निखरती है, साफ होती है। आग से गुजर कर पहली दफा उसकी आत्मा कुन्दन बनती है, स्वर्ण बनती है लेकिन वह हमने खो दिया। अकेले होने की हिम्मत हमने खो दी।

मैंने सुना है एक स्कूल में एक पादरी कुछ बच्चों को समझाने गया था। वह उन्हें करेज, मारल करेज, नैतिक साहस के बाबत उनको समझाता था। उस पादरी से एक बच्चे ने पूछा कि आपकोई छोटी कहानी से समझा दें तो शायद हमें समझ में आ जाता। तो उस पादरी ने कहा कि तुम जैसे तीस बच्चे अगर पहाड़ पर घूमने गये हो और दिनभर के थके मांदे वापस लौटे हो, ठंडी हो रात,

थकान हो, हाथ पैर टूटते हों, बिस्तर आमंत्रण देता हो, बढ़िया बिस्तर हो, अच्छ कम्बल हों, उनमें सोने का मन होता हो, उन्तीस लड़के शीघ्र जाकर अपने अपने बिस्तारों पर सो गये हैं, सर्दी की रात में। लेकिन एक बच्चा एक कोने में बैठकर घुटन टेक के अपनी रात्रि की अंतिम प्रार्थना कर रहा है। तो उस पादरी ने कहा कि उस बच्चे को मैं कहता हुं कि उसमें साहस है। जबकि उन्तीस बच्चे सोने के लिए चले गये हैं। रात सर्द है दिन भर का थका हुआ है। उन्तीस बच्चों का टेम्पटेशन है। भीड़ के साथ होने की सुविधा है। कोई कुछ कहेगा नहीं, कुछ कहने की बात नहीं है लेकिन नहीं, वह अपनी रात्रि की अंतिम प्रार्थना पूरी करता है और सर्द रात में थके हुए। इसे मैं साहस कहता हूं–नैतिक साहस, अकेले होने का साहस। उस पादरी ने कहा। महीने भर बाद वह फिर आया उस स्कूल में और उसने कहा कि पिछली बार मैंने नैतिक साहस के बारे में बात कही थी। क्या तुम भी कोई बता सकते हो, नैतिक साहस की कहानी सुना के। एक बच्चा खड़ा हुआ। उसने कहा कि मैंने बहुत सोचा और मुझे याद आया कि उससे भी बड़ा नैतिक साहस की एक घटना हो सकती है। उस पादरी ने कहा, खुशी से तुम कहो। उस बच्चे ने कहा, आप जैसे ३० पादरी पहाड़ पर गये हुए हैं दिन भर के वे थके मांदे, भूखे प्यासे। रात सर्द है, वापस लौटे हैं। तीसों पादरी हैं, दिन भर की थकान, ठण्डी रात, आधी रात। २९ पादरी प्रार्थना करने बैठ गये हैं हाथ जोड़कर और एक पादरी बिस्तर पर जाकर सो गया है। उस बच्चे ने कहा, यह पहले करेज से ज्यादा बड़ा करेज है, ज्यादा बड़ा साहस है क्योंकि हो सकता है कि पहला बच्चा यह सोच रहा हो कि मैं धार्मिक हूं और ये सब नास्तिक अधार्मिक सो रहे हैं। सो जाओ, नर्क में सड़ोगे, यह सोच सकता है वह बच्चा। अक्सर धार्मिक और प्रार्थना करनेवाले लोग इसी भाषा में सोचते हैं कि दूसरे को कैसे नर्क में सडवा दें। सारा चिंतन जितना वह बेचारा प्रार्थना करते हैं, उपवास करते हैं उतना ही क्रोध उनका दुनिया के ऊपर बढ़ता चला जाता है। वे कहते हैं, एक एक को नर्क में डलवा देंगे। सड़कपर जिसको भी देखते हैं कि कुछ चमकदार और रंगीन, खूबसूरत कपड़े पहने हुए हैं, मन ही में सोचते हैं, नरक में सड़ोगे। किसी को थोड़ा मुस्कराते देखते हैं सोचते हैं सड़ोगे नर्क में। वह अपनी उदास सूरत का बदला तो लेंगे किसी से। वह अपनी गमगीन और रोती हुई आत्मा का बदला तो लेंगे किसी से। तो हो सकता है, उस बच्चे ने कहा कि वह बच्चा यह मजा ले रहा हो कि कोई फिक्र नहीं, आज मैं अकेला हूं तो कोई फिकर नहीं है, नरक की अग्नि में सड़ोगे

तो मैं अकेले खड़ा देखूंगा २९ सड़ते होगे। इसलिए वह साहस बहुत बड़ा नहीं भी हो सकता है, लेकिन दूसरा साहस उसने कहा, बहुत बड़ा है। २९ पादरी जब स्वर्ग जाने की व्यवस्था कर रहे हैं, तब एक बेचारा नर्क जाने की तैयारी कर है, तब उसे कोई कांसुलेशन भी नहीं है, कोई सांत्वना भी नहीं है कि इनको नर्क भेज दूंगा, टेम्पटेशन बड़ा है तब उसे यह भी पता है कि यह २९ दुनिया में जाकर कल सुबह क्या कहेगें। हो सकता है रात भी न सो पाये। धार्मिक आदमी बड़े खतरनाक होते हैं। हो सकता है, आधी रात में पड़ोसी को जगा के कह आयें कि पता है, उस पादरी की अब फिकर मत करना, वह आदमी भ्रष्ट हो गया है, उसने आज प्रार्थना नहीं की। लेकिन कुछ भी, चाहे पहला साहस रहा हो या दूसरा, लेकिन साहस का अर्थ हमेशा अकेले होने का साहस है।

क्या आप युवक हैं? अगर युवक हैं तो जीवन में अकेले खड़ा होने की हिम्मत जुटानी पड़ती है और ध्यान रहे, अकेले खड़ा होने का अर्थ होता है विवेक को जगाना क्योंकि जो विवेक को नहीं जगा सके वह अकेला खड़ा नहीं हो सकता है इसलिए तीसरी बात युवक क्रांतिदल चाहता है इस देश में व्यक्ति व्यक्ति के भीतर विवेक, बोध, समझ, अण्डरस्टेंडिग को जगाने की कोशिश क्योंकि अकेला आदमी तभी अकेला हो सकता है, चाहे दुनिया उसके साथ न हो, उसके साथ विवेक है। उसकी आंख में स्पष्ट दिखायी पड़ रहा है कि जो वह कर रहा है वह ठीक है। उसका तर्क, उसके प्राण उससे कह रहे हैं कि वह जो कर रहा है वह ठीक है चाहे सारी दुनिया विपरीत हो।

जीसस को जिस दिन शूली पर लटकाया होगा, जिसस जवान आदमी रहा होगा। ऐसे उम्र से भी वह जवान ही थे, ३३ वर्ष उम्र थी लेकिन वे ७० वर्ष के भी होते तो कोई फर्क नहीं पड़ता। जीसस युवा आदमी था। सारी दुनिया उसके विपरीत थी। एक लाख आदमी इकट्ठे थे उसे शुली पर लटकाने को। वह चाह-तातो माफी मांग सकता था, माफी उसे जरूर मिल जाती। वह चाहता तो कह सफता था कि मुझसे गलती हो गयी, यह मैने क्या पागलपन करदिया। वह मुक्त हो जाता। एक गांव में बैठकर बढ़ईगीरी का काम करता। उसकी शादी होती, उसके बच्चे पैदा होते और मजेसे मर जाता, लेकिन नहीं, उस आदमी ने अकेले खड़े होने की हिम्मत की शूली पर भी। लेकिन वह अकेला खड़ा होकर किसी को नर्क नहीं भेज रहा है, अकेला खड़ा होकर किसी को सड़ाने का आयोजन नहीं कर रहा है, किसी के प्रति क्रोध नहीं है उसके मन में, अकेला खड़ा है अपने विवेक के कारण, किसी के प्रति क्रोध के कारण नहीं। शूली पर लटकते हुए

उसने अंतिम प्रार्थना की और कहा, हे परमात्मा, इन सब लोगों को माफ कर देना क्योंकि इन्हें पता नहीं कि ये क्या कर रहे हैं लेकिन उन्हें पता है कि वह क्या कर रहे हैं। उसे दिखायी पड़ रहा है कि वह क्या कर रहा है, वह ठीक है, क्योंकि पूरे प्राणों से सोचकर, विचार कर, अनुभव से उसकी पूरी बुद्धि की सलाह से उसको यह क्या है वह जानता है और जिस दिन मेरा विवेक मेरे साथ होता, है उस दिन सारी दुनिया दो कौड़ी की हो जाती है, उस दिन हम अकेले खड़े हो सकते हैं। विवेक की शक्ति इतनी बड़ी है कि सारी दुनिया की शक्ति क्षीण हो जाती है। इसलिए तीसरी बात युवक क्रांतिदल चाहता है, विवेक कैसे विकसित हो, बुद्धिमता कैसे विकसित हो।

ज्ञान विकसित हो जाना एक बात है और बुद्धिमता विकसित होनी बिल्कुल दूसरी बात है। नोलेज आना एक बात है और विसिडम आनी बिल्कुल दूसरी बात है। नालेज और ज्ञान तो स्कूल, कालेज और विद्यालय देते हैं लेकिन विसडम कौन देगा ? सूचनाएं, इन्फर्मशन तो कालेज और विश्वविद्यालय देते हैं युवकों को और उनको दे दे के जवानी में ही उनको बूढ़ा कर देते हैं। क्योंकि जितना उनको भ्रम पैदा हो जाता है कि हम जानते हैं। उतने ही जाननेकी जिज्ञासा कम हो जाती है। विद्यालय के मंदिर से निकलने के वक्त युवक को ऐसा नहीं लगता कि वह जानने के एक नयी यात्रा पर जा रहा है। अब उसे ऐसा लगता है, जानने का काम हुआ बन्द। यह सर्टिफिकेट मिल गई है, बात हो गई समाप्त। अबमुझे जानना नहीं है। अब जानने की तो बात ही खत्म हो गई। ठीक विश्वविद्यालय तो तब होगा जब विश्वविद्यालय हमें विद्या का मंदिर नहीं मालूम पड़े। विद्या के मंदिर की सिर्फ सीढ़ियां मालूम पड़ेंगी। विश्व विद्यालय वहां छोड़ता है, जहां सीढ़ियां समाप्त होती हैं और असली ज्ञान का मंदिर शुरू होता है। लेकिन उस ज्ञान का नाम नालेज नहीं है। उस ज्ञानका नाम विसडम है, उसका नाम है समझ, उसका नाम है बुद्धिमत्ता। युवक क्रांति दल चौथी बात बुद्धिमता, विसडम पैदा करने के प्रयोग करना चाहता है और इसलिए भी कि सारे जगत में ही हिन्दुस्तान में तो, क्योंकि अभी तो काम यहां है, युवक के पास, सारी बुद्धिमता ऐसा लगता है, पैदा ही नहीं हो पा रही है। वह जो भी कर रहा है, बुद्धिहीन है। उसका सारा उपक्रम बुद्धिहीन है, उसका विद्रोह बुद्धिहीन है, उसकी बगावत बुद्धिहीन है। मैं बगावत का विरोधी नहीं हूं। मुझसे ज्यादा बगावत का प्रेमी खोजना मुश्किल है। मैं विद्रोह का विरोधी नहीं हूं। मैं तो विद्रोह को धार्मिक कृत्य मानता हूं। रिबेलियन मनुष्य का अधिकार मानता हूं। लेकिन जब विद्रोह बुद्धिहीन हो जाता है तो विद्रोह

से किसी का कोई हित नहीं होता है शिवाय अहित के। और तब विद्रोह अर्थहीन हो जाता है और तब विद्रोह एक विवेकपूर्ण कृत्य नहीं होता। तो वह दूसरे को तो नुकसान कम पहुंचाता है, विद्रोह को ही नष्ट कर डालता है।

हिन्दुस्तान का युवक एक विद्रोह की गति पर जा रहा है, एक दिशा पर जहां बुद्धिमता बिल्कुल नहीं है, युवक क्रांति दल एक बुद्धिमता जगाने की चेष्टा करना चाहता है। बुद्धिमता जगाने के उपाय हैं। बुद्धिमता जगाने की विधि है जिससे ज्ञान पैदा होता है। सूचनाएं इकट्ठी करने से जिस तरह ज्ञान इकट्ठा होता है, अध्ययन से, मनन से, चिन्तन से जहां बुद्धिमता उत्पन्न होती है, ध्यान से, मेडिटेशन से। युवक क्रांतिदल ध्यान का एक आन्दोलन चलाना चाहता है पूरे भारत में। एक एक युवक के पास ध्यान की क्षमता होनी चाहिए, एक एक युवक के पास मेडिटेशन की विधि होनी चाहिए। वह जब चाहे तब अपने के गहरे से गहरे कामों में प्रविष्ट कर सके। वह जब चाहे तब अन्दर के द्वार खोल सके और अन्दर के मंदिर में प्रविष्ट हो सके। जिस दिन कोई व्यक्ति अपनी आत्मा के जितने निकट पहुंच जाता है उतना ही बुद्धिमान हो जाता है। बुद्धिमता का सम्बन्ध है, कौन व्यक्ति अपनी आत्मा के कितने निकट है उतना ही वाइज, उतना ही विसडम उसके पास होती है। जो आदमी अपनी आत्मासे जितना दूर है उतना ही कम बुद्धिमान होता है। बुद्धिमता आती है ध्यान से। जैसे ज्ञान नालेज लाता है अध्ययन से, मनन से, शिक्षण से उसी तरह बुद्धिमता आती है ध्यान से। इस देश के युवक को ध्यान की प्रक्रिया में ले जाने का एक मूवमेन्ट फार मेडिटेशन सारे देश के कोने कोने में बच्चे बच्चे तक ध्यान की खबर पहुंचानी है और ध्यान की प्रक्रिया पहुंचानी है। वह क्रांतिदल करना चाहता है। ध्यान व्यक्ति को उपलब्ध हो तो व्यक्ति शान्त हो जाता है और जितना शांत व्यक्ति होगा उतने सुन्दर समाज के सृजन का घटक बन जाता है। जितना शान्त व्यक्ति होगा, उतने सत्य, उतने साहस, उतने अकेले होने की हिम्मत, उतने अज्ञात की तरफ जाने की कामना ओर उतना जोखिम उठाने के व्यक्तित्व में मजबूती आ जाती है। जितना शान्त व्यक्ति होगा उतना कम भयभीत होता है, जितना शांत व्यक्ति होगा उतना स्वस्थ होता है। जितना शांत व्यक्ति होगा उतना जीवन को झेलने और जीवन का सामना करने की शक्ति उसके पास होगी। हमारा युवक जीवन के सामने बैंकरप्ट, दिवालिया की तरह खड़ा हो जाता है। उसके पास कुछ भी नहीं है। कुछ सर्टिफिकेट हैं, कागज के कुछ ढेर हैं। उनका वह पुलिन्दा बांधकर जिन्दगी के सामने खड़ा हो जाता है। उसके पास भीतर और कुछ भी नहीं है।

यह बड़ी दयनीय अवस्था है। यह बहुत दुखद है और फिर इस स्थिति में स्फ्रट-रेशन पैदा होता है, विशाद पैदा होता है, तनाव पैदा होता है, क्रोध पैदा होता है। और इस क्रोध में वह समाज को तोड़ने में लग जाता है। चीजें नष्ट करने में लग जाता है। आज सारे मुल्क का बच्चा बच्चा क्रोध से भरा है। क्रोध में वह कुर्सियां तोड़ रहा है, फर्निचर तोड़ रहा है, बसें जला रहा है। नेता हैं मुल्क के। वे कहते हैं कुर्सियां मत तोड़ो, बसें मत जलाओ, मकान मत मिटाओ खिड़कियां मत तोड़ो, लेकिन नेता भी जानते हैं कि वे भी नेता कुर्सियां तोड़ के, बसें जला के और कांच फोड़ कर हो गये हैं। उनकी सारी नेतागिरी इसी तरह की तोड़-फोड़ पर निर्भर खड़ी हो गई है। यह बच्चे भी जानते हैं कि नेता होने की तरकीब यही है कि कुर्सियां तोड़ो, मकान तोड़ो, आग लगावो। इसलिए वे पुराने नेता जो कल यही करते रहे थे आज यही दूसरे को समझायेंगे। वह समझ में आने वाली बात नहीं है। फिर उन नेताओं को यह भी पता नहीं है कि कुर्सियां तोड़ी जा रही हैं। यह सिर्फ सिम्बालिक हैं। कुर्सियों से बच्चों क्या मतलब हो सकता है। किसी आदमी को कुर्सी तोड़ने से मतलब हो सकता है ? बस जलाने से क्या मतलब हो सकता है ? बस से किसी की दुश्मनी है ? ऐसा पागल आदमी खोजना मुश्किल है जिसकी बस से दुश्मनी हो कि कांच तोड़ने में कुछ रस आता हो नहीं, ये सवाल नहीं है। ये सवाल ही नहीं हैं। ये बिल्कुल असंगत है। इससे कोई सम्बन्ध नहीं है। युवक है भीतर अशांत, पीड़ित और परेशान। आदमी कुछ भी चीज तोड़ सकता है तो थोड़ी सी राहत मिल जाती है।

एक मनोवैज्ञानिक के पास एक बीमार को लाया गया था। वह एक दफ्तर में नौकर था। उस दफ्तर में उसका मालिक उसे कभी बुरा शब्द बोलता, कभी अपमानित कर देता। मालिक के खिलाफ वह कुछ कर नहीं सकता था। लेकिन भीतर क्रोध तो आता था। क्रोध आता था तो घर जाकर पत्नी पर टूट पड़ता था। क्रोध आता था तो कभी गुस्से में अपनी चीजें तोड़ लेता था। लेकिन फिर ख्याल में आता था, यह क्या पागलनपन है। फिर क्रोध बढ़ता चला गया। फिर उसके मन में ऐसा होने लगा कि होगा जो कुछ होगा एकदिन। जूता निकालकर मालिक की सेवा कर दी जाय। हाथ उसके जूते पर जाने लगे तो वह बहुत घबराया कि यह तो बहुत खतरनाक बात हुई जा रही है। अगर जूता मैंने मार दिया तो मुश्किल में पड़ जाऊंगा। फिर वहजूता घर छोड़कर आने लगा। क्योंकि किसी भी दिन खतरा हो सकता सकता था लेकिन जूता घर छोड़कर आने से क्या सम्बन्ध था। वह जूता तो केवल प्रतीक था। वह स्याही

की दावात उठाकर फेंकने का ख्याल करने लगा। तब उसे घबराहट आई और उसने घर जाकर मित्रों को कहा कि मैं बड़ी मुश्किल में पड़ गया हूं। बस कुछ भी मिल जाय मैं मालिक को मारना चाहता हूं। वह एक मनोवैज्ञानिक के पास उसे ले गया। मनोवैज्ञानिक ने कहा, कुछ मत करो। मालिक की एक तस्वीर घर में बना लो और रोज सुबह पांच जूते बिल्कुल रिलीजसली तसवीर को मारो। बिल्कुल इसमें भूल चूक न हो। पुजारी पूजा करता है और माला फेरनेवाले माला फेरते हैं। ऐसा रिलीजसली। उसको बिल्कुल पांच जूता मारो फिर दफ्तर जाओ। दफ्तर से लौटकर पहला काम उसको पांच जूता मारो आने पर दूसरा काम करो। वह आदमी हंसा। उसने कहा इससे क्या होगा। यह सुनकर ही उसके चेहरे पर जो भाव आया वह एक रिलेगजेशन का था। एक शांति का था। उस मनोवैज्ञानिक ने कहा होगा तुम फिक्र मत करो। कल से यह कार्य शुरू करो। उसको पांच जूता सुबह ही उठकर मारो। बड़ी जल्दी रही। रात में कई दफा नींद खुली कि जल्दी सुबह हो जाय। सुबह हुई। उसने पांच जूते मारे। पांच जूते मारकर वह बड़ा हैरान हुआ। मन उसका बड़ा हल्का सा लगा और मालिक जो कि जूता खाये हुए सामने पड़े थे उनपर बड़ी दया महसूस हुई। वह दफ्तर गया। उस दिन तो उसका व्यवहार बड़ा भिन्न था। पन्द्रह दिन रोज जूता मारता रहा और दफ्तर में वह दूसरा आदमी हो गया। उसका मालिक उससे पूछने लगा, क्या हो गया है तुम्हें। तुम बिल्कुल बदल गये। तुम कितने शान्त हो गये हो तुम इतनी कुशलता से काम करते हो। उसने कहा, मालिक वह पूछें ही मत कि क्या तरकीब से काम कर रहे हैं। इसमें नौकरी जाने का खतरा है। इस आदमी को क्या हुआ ? इसके भीतर तोड़ने फोड़ने की, किसी को मिटाने की. किसी को नीचा दिखाने की तीव्र भावना काम कर रही थी। वह भावना किसी भी रूप में निकल सकती थी। वह टेबल तोड़ सकती थी, कांच तोड़ सकती थी। घर में पत्नियां जानती हैं, भलीभांति कि पति से झगड़ा होता है, बर्तन बेचारे टूट जाते हैं। माताएं जानती हैं भलीभांति पिता से झगड़ा होता है, बच्चे पिट जाते हैं।

क्रोध यहां वहां से निकलना शुरू होता है। युवक के पास क्रोध तो बहुत है, शान्ति बिल्कुल नहीं है। इसलिए सारा उपद्रव हो रहा है। उपद्रव बढ़ेगा, उपद्रव गहरा होगा। अभी वह मकान तोड़ रहा है, कल व मकान जलाएगा। अभी वह बसें जला रहे हैं कल वे आदमियों को जलायेंगे पचास साल के भीतर। आदमी जलाया जाएगा। अगर युवक क्रोध इसी तरह गति करता रहा। और उसे शान्ति की दिशा में लेजाने का कोई उपाय नहीं मिल सका।

मैंने सुना है, हालैण्ड में मेरे एकमित्र थे। उन्होंने मुझे वहां से लिखा कि यहां एक अजीब बात हो गई है। युवकों और विद्यार्थियों का एक नया आन्दोलन है जो सर्टडे नाइट मूवमेन्ट। शनिवार की रात को सड़कों पर और लड़कियां पत्थर फेंकते हैं, शोर गुल करते हैं अकारण। कोई कारण नहीं है। सर्टडे नाइट मूवमेन्ट ही है वह। सत्य से कोई सम्बन्ध नहीं है। सड़कों पर नाचते हैं, गालियां बकते हैं, शराब पीते हैं, मेसकलीन लिसर्जिक, एसिड, मारिजुआना का उपयोग करते हैं और फिर चौगड्डों पर इकट्ठे होकर विचार करते हैं कि हम आज ऐसा क्या करें कि पुलिस हमें जेल भेज सके। कोई कारण नहीं है, कोई झगड़ा नहीं है, कोई फीस कम नहीं करवानी है, कुछ और मामला नहीं है, लेकिन क्रोध इतना इकट्ठा है कि उसको रिलीज चाहिए। उसे कहीं से निकलना होगा। नेता चिल्लाते रहेगे। कुछ नहीं हो सकता है, क्योंकि नेता खूद अशान्त और पीड़ित और परेशान हैं। राजनीतियों से ज्यादा अशान्त आदमी पृथ्वी पर और कौन हो सकते हैं, तो वे बेचारे कहते हैं शांति रखो, शांति रखो। लेकिन भीतर उनके भी अशांति चलती है, उनकी शांति का कोई अर्थ नहीं। उन्हें पता भी नहीं है कि क्या हो रहा है मनुष्य की चेतना में। मनुष्य की चेतना ने ज्ञान तो अर्जित कर लिया है, बुद्धिमता अर्जित नहीं की। मनुष्य की चेतना ने सूचनाएं तो इकट्ठे कर ली हैं, लेकिन चेतना ज्ञानवान नहीं हो पाई है – मनुष्य ने महत्वाकांक्षा तो सीख ली है और सारी शिक्षा का एक ही फल हुआ है कि आदमी को महत्वाकांक्षी बना दिया है। लेकिन शांति उसके पास बिल्कुल नहीं है। तो युवक क्रांतिदल ध्यान के माध्यम से शांति का एक आन्दोलन चलाना चाहता है। व्यक्ति को चाहिए शांति और समाज को चाहिए क्रांति। ये बातें युवक क्रांतिदल के बुनियादी आधार हैं। व्यक्ति को चाहिए शांति और समाज को चाहिए क्रांति। व्यक्ति हो इतना शांत कि उसके भीतर कोई पीडा, कोई दुख कोई क्रोध न रह जाय। और समाज है गलत, समाज है रुग्ण, समाज है अग्ली, समाज है कुरूप। हजारों साल की बेकूफियों के आधार पर समाज हमारा निर्मित है। उन सब बेवकूफियों को आग लगा देना है। उन सबको, जिनके आधार पर हम खड़े हैं। अभी आज हिन्दुस्तान में शुद्र है। आज भी बीसवीं शदी में, मुनि महाराज ने तीन हजार वर्ष पहले जिन शुद्रों को खड़ा किया था वे अब भी खड़े हैं। करोड़ों करोड़ों लोगों, को, मनुष्यों की आज भी जीवन स्थिति उपलब्ध नहीं है। उसे तोड़ देना पड़ेगा। हजारों वर्षों से स्त्रियों को गुलाम की तरह खड़ा किया गया है। आज नामचारे को वे स्वतंत्र मालूम पड़ती हैं लेकिन आज भी वे स्वतंत्र नहीं हैं। आज भी शिष्ट से शिष्ट

नगर में किसी लड़की का रात अकेले निकलना असम्भव है। यह कोई स्वतंत्रता है ? बूढ़ी से बूढ़ी स्त्री निकलती हो तो छोटे से छोटे बच्चे गाली बकेंगे। पत्थर फेकेंगे, धक्का मार जाएगे, यह कोई स्वतंत्रता है ? स्त्री की यह कोई स्थिति है। सोचना है फिर से कि इन तीन हजार वर्षों में जो हमने किया है उसमें हमारे जीवन के प्रति जो दृष्टिकोण हैं वह गलत रहा होगा, अन्यथा स्त्री ओर पुरुष के बीच ऐसा दुर्भाव नहीं हो सकता था जैसा दुर्भाव है। स्त्री और पुरुष दो अलग जाति के प्राणी मालूम होते हैं। एक ही जाति के प्राणी नहीं मालूम होते। ऐसा मालूम होता है यह स्पेसीज ही अलग है। यह अलग ही दो तरह की कोमें हैं। ये साथ साथ किसी तरह जीते हैं, लेकिन साथ साथ हैं नहीं। इतनी लम्बी दीवाल खड़ी की है आदमी और औरत के बीच। उस आदमी और औरत के बीच जितनी बड़ी दीवाल उठाई गई है उतनी ही मुश्किल होती चली गई है, क्योंकि जितनी बड़ी रुकावट डाली जाती है उतना ही आकर्षण तीव्र हो जाता है। स्त्री और पुरुषों के बीच जितना फासला पैदा करने की कोशिश की गई है, स्त्री और पुरुष को उतना ही सेक्युअल, कामुक बनाया गया है। वे सारे फासले तोड़े जाने जरूरी हैं। स्त्री और पुरुष को निकट लाना जरूरी है ताकि यह सम्भव न रह जाय कि कोई स्त्री को धक्का दे। यह तभी तक सम्भव है जबतक स्त्री और पुरुष बहुत निकट नहीं हैं। उन्हें साथ खेलना है बचपन से, साथ पढ़ना है। आज युनिवर्सिटी की क्लास में भी जाओ, लड़कियां अलग बैठी हैं, लड़के अलग बैठे हैं। क्या बेहूदगी है। युनिवर्सिटी के तल पर लड़के अलग बैठे हैं एक कोने में, और शिक्षक का कुल काम एक परहेदार का काम है कि वह देखता रहे कि। लड़कियां कहीं पास तो नहीं आ जाते हैं। ये पुलिसवाला बनाये हुए हैं प्रोफेसर को उसको आदमी बननें दो। वह दूसरे काम से यहां आया हुआ है। इस बेवकूफी में पड़ने को नहीं। लेकिन एक ही भय है कि कहीं स्त्री पुरुष पास न आ जायें यह भय क्या है। हमारे सेक्स के प्रति जो धारणाएं हैं। वह नासमझी की हैं, अवैज्ञानिक हैं। स्त्री और पुरुषों को निकट लाने की जरूरत है। जब हम उनको करीब नहीं ले आपाते फिर करीब आने की पारवर्टड कोशिश करते हैं। फिर विकृत करने की कोशिश करते हैं, फिर बेचारे दूर से ही कंकड़ मारके स्पर्श करने की कोशिश करते हैं। जब हाथ से स्पर्श नहीं करने दोगे तो कंकड़ से, फ्लाइंगकिस। अजीब है बात। फ्लाइंग्किस भी हो सकता है ? लेकिन होता है और होगा। निकट आने कीसारी सम्भावनाहमने क्षीण कर दी है। उसकी वजहसे कितना परवर्सन है, इतनी सेक्युअलिटी है, इतनी कामुकता है।

उसे मिटाना है। समाज को क्रांति चाहिए। एक सेक्युअल रेबुलेशन काम के प्रति एक क्रांतिकारी दृष्टिकोण और परिवर्तन चाहिए तो हम स्वस्थ हो सकेंगे, नहीं तो ऊपर से ब्रह्मचर्य की बातें चलती रहेगी और गीता में कोई गन्दी किताब छिपाकर पढ़ता रहेगा। ये दोनों बातें एकसाथ चलेगी। जल्दी पिताजी आयेंगे तो गीता दिखाई पड़ने लगेगी। पिताजी गये तो भीतर से न मालूम क्या निकल आयेगा। गन्दी तस्वीरें होंगी। नंगी तस्वीरें होंगी, सड़कों पर नंगी तस्वीरें किस बात की सबूत हैं। सड़कों पर नंगी तस्वीरें इस बात का सबूत है कि स्त्री और पुरुष को एक दूसरे को नग्न देखने की इच्छा पूरी नहीं हो पाती। बचपन से ही जिज्ञासा है। स्त्री का शरीर कैसा है, पुरुष का शरीर कैसा है। वह जिज्ञासा पूरी नहीं हो पाती। आदिवासी समाज में नहीं किसी को जिज्ञासा है। हमें क्यों जिज्ञासा है इतनी। हमने शरीर को भी इस तरह छिपाया है। इससे उसमें जुगुप्सा पैदा कर देते हैं। उसके चारो तरफ की, उसे देखने की आकांक्षा है। फिर उसके देखने की आकांक्षा से फिल्म बनती है। नंगी तसवीर बनती है, नंगा उपन्यास बनता है। उसपर हमरोक लगाते हैं कि यह नहीं होना चाहिए। तब वह नंगा उपन्यास अण्डरग्राउण्ड चला जाता है, तब तक वह नीचे से बिकता है, तब वह हर दूकान पर मिलता है, उसके ज्यादा पैसे चुकाने पड़ते हैं, उसके ऊपर नाम कुछ होता है, भीतर कुछ होता है। नंगी तस्वीरें बिकती हैं और आदमी रुग्ण होता जाता है। नहीं, छोटे बच्चे नग्न होने चाहिए। जितनी देर संभव हो सके, पांच वर्ष ६ वर्ष, घर में जितनी देर तक वे नंगे खेल सकें, खेलने देना चाहिए ताकि वे जान लें कि शरीरों में कुछ नहीं है। शरीर में कुछ है नहीं जिसके लिए परेशान हैं जिन्दगी भर। अगर थोड़े से बोधपूर्वक, पांच सात वर्ष के बच्चे अगर बोधपूर्वक हों और नग्न रहें, कभी नग्न खेल सकें, कभी नग्न स्नान कर सकें तो उनकी जिज्ञासा हमेशा को समाप्त हो जायेगी। अभी हालत यह है कि ७० वर्ष के बूढ़े की जिज्ञासा भी शांत नहीं होती। वह ७० वर्ष का बूढ़ा भी स्त्री को देखता है तो उसकी आखें, उसके कपड़ों के भीतर प्रवेश करने लगती हैं। उदाहरण के लिए हमने कहा, कि हमें एक कामुक काम के प्रति एक क्रांति से गुजरने की जरूरत है, अर्थ के प्रति एक क्रांति से गुजरने की जरूरत है। यह क्या बात है, इतना बड़ा मुल्क गरीब होता चला जाय और थोड़े से लोगों के पास पैसे इकट्ठे होते चले जायं। यह बरदाश्त करने के बाहर है कि सारी संपदा एक तरफ इकट्ठी हो जाय और सारा मुल्क नंगा, दीनहीन, दुखी और पीड़ित हो जाय। नहीं, मुल्क में इकोनामिक रिवोल्युशन की जरूरत है। संपत्ति का समान वितरण जरूरी है।

संपत्ति सबतक पहुंचनी चाहिए, सबकी है, जैसे आकाश सबका है, पृथ्वी सबकी है, संपत्ति भी सबकी है। सब उसे संयुक्त मिलकर पैदा करते हैं, सब उसके मालिक होने के हकदार हैं। संपत्ति राष्ट्र की हो. समाज की हो. व्यक्ति की नहीं। व्यक्तिगत संपत्ति से मुक्त हुए बिना इस देश के जीवन में कभी सुख का उदय नहीं हो सकता है, कितना ही हम चिल्लायें कि भ्रष्टाचार न हो, चोरी न हो, बेईमानी न हो, वह होगी, क्योंकि जबतक संपदा एक तरफ इकट्ठी होगी, एकतरफ शोषक होंगे, दूसरी तरफ शोषितों का बड़ा समाज होगा तबतक चोरी कैसे बन्द होगी. बेईमानी कैसे बन्द होगी, भ्रष्टाचार कैसे बन्द होगा। नहीं बन्द होगा। चाहे ऋषि, मुनि कितना ही समझायें, ऋषि मुनि कितना ही कहें कि धैर्य रखो, संतोष रखो, चोरी मत करो, कितना ही समझायें, कोई सुनेगा नहीं। उनके चिल्लाने से कुछ भी नहीं होगा। वे चिल्लाते रहेगे और कुछ भी नहीं होगा। उनके चिल्लाने से सिर्फ एक फर्कपड़ता है, वे सच्चा आदमी तो पैदा नहीं कर पाते, एक पाखण्डी जरूर पैदा कर देते हैं। पाखण्डी आदमी का मतलब यह कि वह कहेगा कि मैं कहां चोरी करता हूं। मैं तो अणुव्रती हूं, मैं तो अणुव्रत का पालन करता हूं, मैं तो मानता हूं कि कमसे कम में संतोष रखना चाहिए। मैं तो धार्मिक आदमी हूं, मैं कहां चोरी करता हूं। ऊपर से वह एक चेहरा बनायेगा जिसपर तिलक लगा हुआ है, चोटी बंधी हुई और पीछे एक दूसरा ही आदमी होगा जो दिखायी पढ़ जाय तो आप पहचान नहीं सकेगे कि क्या यह वही सज्जन हैं। वह भीतर जो आदमी छिपा हुआ है वह बिल्कुल दूसरा है। रोशनी में वह दूसरा दिखायी पड़ता है, अंधेरे में वह आदमी बिल्कुल दूसरा है। रोशनी में वह बड़ा धार्मिक मालूम पड़ता है, मंदिर में पूजा करता दिखायी पड़ता है, अंधेरे में लोगों की जेबें काट रहा है, उनकी गर्दनें काट रहा है। पाखण्डी आदमी पैदा हो गया है, यह हिपक्रेप ह्युमिनिटी पैदा हो गयी है।

यह कैसे पैदा हो गयी है ? यह पैदा होगयी है कि जहां जिन्दगी का असली सवाल है उनको बदलना नहीं चाहता और झूठी बातें बदलने की बातें करते हैं। कहते हैं भ्रष्टाचार मिटायेगे। जब तक शोषण है तबतक कुछ भी नहीं मिट सकता। शोषण मिटेगा तो यह सब मिटजायेगा। शोषण के मिटते ही चोरी समाप्त हो जाती है। जबतक व्यक्तिगत संपत्ति है दुनिया में तबतक चोरी चारी रहेगी। न तुम्हारी अदालतें रोक सकती हैं, न तुम्हारे जज रोक सकते हैं, न तुम्हारी पुलिस रोक सकती है। सिर्फ इतना ही होगा कि पुलिस भी चोरी करेगी, अदालत भी चोरी करेगी, जज भी चोरी करेगा, नेता भी चोरी करेंगे। कुछ भी नहीं

रुकने वाला है। व्यक्तिगत संपत्ति के जाते ही चोरी जायेगी क्योंकि व्यक्तिगत संपत्ति की बाई प्रोडेक्ट है चोरी। वह उससे पैदा हुई है, वह उसके साथ ही जा सकती है, उसके बिना नहीं जा सकती।

देश को एक आर्थिक क्रांति की जरूरत है। देश को और बहुत तलोंपर क्रांति की जरूरत है, पारिवारिक क्रांति की जरुरत है, शैक्षणिक क्रांति की जरूरत है। उस सबके विस्तार में आज तो नहीं जा सकूंगा, इतना ही कहना चाहूंगा कि देश को आमूल क्रांति की जरूरत है, पूरी जड़ें बदलने की जरूरत है। युवक क्रांति दल समाज में एक क्रांति लाना चाहता है, खबर पहुंचाना चाहता है गांवगांव, देहात तक, एक एक व्यक्ति तक कि सोचो, विचार करो, जिन्दगी कहां कहां बदलने जैसी है उसे बदलना है। व्यक्ति को चाहिए शांति और समाज को चाहिए क्रांति, यह युवक दल का ख्याल है और योजना है। जो युवक उससे संबंधित होगे वे एक वैचारिक वातावरण, एक रिनासा, एक पुनर्जागरण पैदा करने की कोशिश करेंगे। उनका कोई आज राजनीतिक सवाल नहीं है, न कोई लक्ष्य है। राजनीति से उन्हें कुछ सीधा लेना नहीं है। इस मुल्क में अभी तो जरूरत है एक मानसिक परिवर्तन की, एक मेंटल चेंज की। तो युवक क्रांति दल का कोई राजनीतिक सवाल नहीं है। उसका सवाल है कि वह मुल्क की आत्मा को क्रांति के लिए तैयार करने की हवा दे सके। उस हवा से अपने आप राजनीति भी बदल जायेगी, अपने आप उसे बदलना पड़ेगा, । अभी तो देश की आत्मा को सब पहलुओं पर क्रांति की, दृष्टि, सिर्फ दृष्टि काफी है, अभी तो एक थिंकिंग, एक विचार काफी है। अभी युवक क्रांति दल की योजना एक सांस्कृतिक क्रांति की हवा, एक कल्चरल रेव्यु-लूशन की हवा वातावरण, एक साइकिक एटमास्टफियर पैदा करने का है। उसके बाद जो आज युवक है विश्वविद्यालय में पड़ते हैं, स्कूल पढ़ते हैं कल वे जिन्दगी में जायेगें, वे राजनीति में जायेगें, वे अधिकार पद पर होगे, तब आज जो उनके चित्त में हवा पैदा हो जायगी तो कल जब उनके हाथ में सत्ता होगी, वे समाज को आमूल बदलने में समर्थ हो सकेंगे। यह जो युवक क्रांति दल है यह इस चेष्टा में संलग्न रहेगा कि युवक जबशक्ति में पहुचे इसके उनके व्यक्तित्व का आमूल रूपान्तरण हो जाय। भीतर वे शांत हो जायं और उनका मस्तिष्क जीवन को बदलने की तेज आग से भर जाय, जीवन को बदलने की तीव्र पीड़ा उन्हें पकड़ ले। तो कल, जो आज युवक में हैं, युवा हैं, उनके हाथ में होगा देश। हम चाहें तो बीस साल में इस देश की पूरी काया पलट कर सकते हैं क्योंकि बीस साल में एक पीढ़ी बदल जाती है। बीस साल में नयी पीढ़ी केहाथ में ताकत आजाती है।

युवकों ने अगर इसपर नहीं सोचा तो यह देश रोज रोज अधेरे से अंधेरे में उतरता चला जायगा। इस देश के पास बचाने का और कोई उपाय नहीं है। न कोई नेता बचा सकता है इसे, न कोई गुरू बचा सकता है इसे और न. परमात्मा से की गयी प्रार्थनाएं बचा सकती हैं। इसे बचाया जा सकता है तो एक ही हालत में। वह जो युवक आत्मा है, वह जो यंग माइंड है उसका जन्म हो सके तो इस देश को हम बचा सकते हैं।

ये थोड़ी सी बातें मैने, कही मेरी बात को इतने प्रेम और शांति से सुना उससे बहुत अनुग्रहीत हैं और अंत में सबके भीतर बैठे परमात्मा को प्रमाण करता हूं, मेरे प्रमाण स्वीकार करें। ● ●

आचार्य श्री रजनीश जी की तत्त्वानुभूतियों से परिचित कराने की दिशा में एक अनुपम कृति :

'आचार्य रजनीश : समन्वय विश्लेशन संसिद्धि'

लेखक : डा. **रामचंद्र प्रसाद**, एम. ए., पी. एच.डी. (एडिनबरा) डी. लिट. (पटना)
रीडर, अंग्रेजी विभाग, पटना विश्वविद्यालय।

प्रकाशन एवं प्राप्ति स्थान :

(१) मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली –७।

(२) चोक, वाराणसी –१ (उ. प्र.)

(३) अशोक राजपथ, पटना–४ (बिहार)

मूल्य ७–५० न. पै.

नारी और क्रांति

संकलन : श्री सरस्वती बहन

मनुष्य के इतिहास में नारी जाति के साथ जो अत्याचार और अनाचार हुआ है उस सम्बन्ध में थोड़ी सी बात प्रारम्भ में कहना चाहता हूं और नारी के साथ जो हुआ है उसके परिणाम से पूरी मनुष्य जाति के जो अहित हुए हैं, उस सम्बन्ध में थोड़ी बात कहना चाहता हूं।

मनुष्य की पूरी जाति, मनुष्य का पूरा जीवन, मनुष्य की पूरी सभ्यता और संस्कृति अधूरी है क्योंकि नारी ने उस संस्कृति के निर्माण में कोई भी दान, कोई भी कंट्रीब्यूशन नहीं किया। नारी कर भी नहीं सकती थी। पुरुष ने उसे करने का कोई मौका भी नहीं दिया। हजारों वर्षों तक स्त्री पुरुष से नीचे और छोटी और हीन समझी जाती रही है। कुछ तो देश ऐसे थे जैसे चीन में हजार वर्ष तक यह माना जाता रहा कि स्त्रियों के भीतर कोई आत्मा नहीं होती। इतना ही नहीं, स्त्रियों की गिनती जड़ पदार्थों के साथ की जाती थी। आज से सौ बरस पहले चीन में अपनी पत्नी की हत्या पर किसी पुरुष को, किसी पति को कोई भी दण्ड नहीं दिया जाता था क्योंकि पत्नी उसकी सम्पदा थी। वह उसे जीवित रखे या मार डाले, इससे कानून का और राज्य का कोई सम्बन्ध नहीं।

भारत में भी स्त्री को पुरुषों के सम्मान में, पुरुषों की समानता में कोई अवसर और जीने का मौका नहीं मिला। पश्चिम में भी वही बात थी। चूंकि सारे शास्त्र और सारी सभ्यता और सारी शिक्षा पुरुषों ने निर्मित की है इसलिए पुरुषों ने अपने आप को बिना किसी से पूछे श्रेष्ठ मान लिया है, स्त्री को श्रेष्ठता देने का कोई कारण नहीं। स्वभावतः इसके घातक परिणाम हुए। सबसे बड़ा घातक परिणाम तो यह हुआ कि स्त्रियों के जो भी गुण थे वे सभ्यता के विकास में सहयोगी न हो सके। सभ्यता अकेले पुरुषों ने विकसित की।

अकेले पुरूष के हाथ से जो सभ्यता विकसित होगी उसका अंतिम परिणाम युद्ध के सिवाय और कुछ भी नहीं हो सकता। अकेले पुरुष के गुणों पर जो जीवन निर्मित होगा वह जीवन हिंसा के अतिरिक्त और कहीं नहीं ले जा सकता। पुरुषों की प्रवृत्ति में, पुरुष के चित्त में ही हिंसा का, क्रोध का, युद्ध का कोई अनिवार्य हिस्सा है। नीत्से ने आज से कुछ ही बीसी पहले यह घोषणा की कि बुद्ध और क्राइस्ट स्त्रैण रहे होंगे क्योंकि उन्होंने करुणा और प्रेम की इतनी बातें कही हैं वे बातें पुरुषों के गुण नहीं हैं। नीत्से ने क्राइस्ट को और बुद्ध को स्त्रैण, स्त्रियों जैसा कहा है। एक अर्थ में शायद उसने ठीक ही बात कही है वह इस अर्थ में कि जीवन में जो भी कामन गुण है, जीवन के जो भी माधुर्य से भरे सौंदर्य, शिव की कल्पना और भावना है वह स्त्री का अनिवार्य स्वभाव है। मनुष्य की सभ्यता माधुर्य और प्रेम और सौंदर्य से नहीं भर सकी, क्रूर और पुरुष हो गयी, कठोर और हिंसक हो गयी और अंतिम परिणामों में केवल युद्ध लाती रही।

इसके पीछे दो बातों का ही हाथ है। एक तो स्त्री के गुणों को कोई सम्मान नहीं दिया गया और दूसरी स्त्री ने कभी अपने गुणों को विकसित करने की कोई चेष्टा और कोई सक्रिय उपाय नहीं किया। यह जानकर आपको हैरानी होगी, अगर कोई स्त्री पुरुषों के गुणों में आगे हो जाय तो उसे जोन आफ आर्क या रानी लक्ष्मी बाई और सारे जगत में इस बात की प्रशंसा होती है कि रानी लक्ष्मी बाई बहुत बहादुर, बहुत सम्मान योग्य स्त्री है। लेकिन क्या कभी आपने यह सुना है कि कोई पुरुष स्त्रियों के गुणों में विकसित हो जाय तो उसका कभी कोई सम्मान हुआ था? अगर कोई पुरुष स्त्रियों जैसा प्रतीत हो तो उसका अपमान होगा और कोई स्त्री पुरुष के जैसा प्रतीत हो तो उसका सम्मान होगा और चौरस्तों के ऊपर उसकी मूर्तियों खड़ी की जायेंगी। पुरुषों ने अपने गुणों को अनिवार्य रूप से स्वीकार कर लिया है और स्त्रियों ने भी इसपर स्वीकृति दे दी, यह बहुत आश्चर्य की बात है। स्त्रियों ने कभी सोचा भी नहीं कि उनके व्यक्तित्व की भी अपनी कोई गरिमा, अपना कोई स्थान, अपनी कोई प्रतिष्ठा है। इस तीन चार हजार बरस की गुलामी के बाद एक विद्रोह, एक प्रतिक्रिया, एक रीएक्शन पैदा होना शुरू हुआ और स्त्रियों ने यह घोषणा करनी शुरू कर दी कि हम पुरुषों के समान हैं और बराबर हैसियत और बराबर अधिकार मांगते हैं। लेकिन फिर दोबारा भूल हुई जा रही है जिसको आपको शायद पता न हो। उस भूल के सम्बन्ध में भी समझ लेना जरूरी हैं।

मैं कहना चाहता हूं कि स्त्रियों न तो पुरुषों से हीन हैं और न समान हैं। स्त्रियां पुरुषों से भिन्न हैं, वे बिल्कुल भिन्न हैं। न उनके नीचे होने का सवाल है, न उनके समान होने का सवाल है, स्त्रियों पुरुषों से बिल्कुल भिन्न हैं और जबतक स्त्रियों अपनी भिन्नता की भाषा में, अपने अलग व्यक्तित्व की भाषा में सोचना शुरू नहीं करेंगे तबतक या तो वे पुरुष की दास होंगी या पुरुष की अनुयायी होंगी और दोनों स्थितियां खतरनाक हैं। पश्चिम में स्त्रियों ने एक बगावत की है, एक विद्रोह किया है और परिणाम यह हुआ है कि स्त्रियां पुरुषों जैसे होने की दौड़ में, होड़ में पड़ गयीं। जो पुरुष करते हैं और जैसे पुरुष हैं वैसे ही स्त्रियों को भी हो जाना चाहिए। जो शिक्षा पुरुषों को मिलती है वही स्त्रियों को भी मिलनी चाहिए। अगर पुरुष युद्ध के मैदान में लड़ने जाते हैं तो स्त्रियों को भी युद्ध के ऊपर सैनिक बनकर उपस्थित होना चाहिए। इस बात की कल्पना भी नहीं है आपको कि पुरुषों की नकल में स्त्रियां हमेशा द्वितीय कोटि की होंगी, प्रथम कोटि की कभी भी नहीं हो सकती। क्योंकि जिन गुणों में वे प्रतिस्पर्धा करने जा रही हैं वे पुरुषों के लिए सहज गुण हैं और स्त्रियों के लिए असहज धर्म। ऐसी स्थिति में स्त्रियां एकदम कुरूप, अपने स्वभाव से च्युत, जो हो सकती थीं उससे वंचितहो जायेंगी और परिणाम बड़े घातक होंगे जिनका हमें कोई धारणा नहीं, कोई सपना भी नहीं।

जो शिक्षा पुरुषों को मिलती है वही शिक्षा स्त्रियों को देना अत्यन्त खतरनाक है, एकदम गलत है। उचित है कि पुरुष गणित सीखे, उचित है कि पुरुष विज्ञान सीखे लेकिन बहुत उचित होगा कि स्त्री कुछ और सीखे जो पुरुष नहीं सीखता। उसे जीवन में कुछ और करना है। उसके ऊपर जीवन ने कोई और दायित्व दिया है, कोई दूसरा रिस्पोंसबिल्टी है उसके ऊपर। उसके ऊपर प्रेम का, सृजन का कोई दूसरा भार है। गणित सीख लेने से दूकानें चल सकती होंगी, बच्चे नहीं बड़े किये जा सकते। साइन्स से फैक्टरी चलती होगी लेकिन परिवार नहीं चल सकते और परिणाम यह हुआ है कि स्त्री को पुरुष जैसी दीक्षा और शिक्षा और समानता के भाव ने स्त्रियों से जो भी उनका महत्वपूर्ण मातृत्व था वह सब छीन लिया है। उनके जीवन में जो भी गौरवपूर्ण पत्नीत्व था वह सब छीन लिया है। उनके भीतर जो भी स्त्रैण था वह सब नष्ट किया जा रहा है। वे करीब करीब पुरुष की नकल में निर्मित की जा रही हैं और वे बहुत प्रसन्न भी मालूम होती हैं। इस प्रसन्नता के लिए हजार हजार आंसू आज नहीं कल स्त्रियों को तो रोने ही पडेंगे, शायद हमें इस बात का ख्याल नहीं कि स्त्री

और पुरुष के चित्त में बुनियादी भेद और भिन्नता है और यह भिन्नता अर्थपूर्ण है। पुरुष और स्त्री का सारा आकर्षण उसी भिन्नता पर निर्भर है। वे जितनी भिन्न हों, वे जितनी दूर हों, उनके भीतर पोलरिटी हो उत्तर और दक्षिण ध्रुवें की तरह उनमें भिन्नता हो उतना ही उनके बीच आकर्षण, ग्रेविडेशन होगा। उतना ही उनके बीच प्रेम का जन्म होगा। जितना उनका फासला हो, उनकी भिन्नता हो, जितने उनके व्यक्तित्व अनूठे और अलग हों, जितने वे एक दूसरे जैसे नहीं बल्कि एक दूसरे के परिपूरक, कम्प्लीमेटरी हों। अगर पुरुष गणित जानता हो और स्त्री भी गणित जानती हो तो ये दोनों बातें उन्हें निकट नहीं लातीं। ये बातें उन्हें दूर ले जायेंगी। अगर पुरुष गणित जानता हो और स्त्री काव्य जानती हो, संगीत जानती हो, नृत्य जानती हो तो वे ज्यादा निकट आयेंगे, वे जीवन में ज्यादा गहरे साथी बन सकते हैं और जब एक स्त्री पुरुषों जैसी दीक्षित हो जाती है तो ज्यादा से ज्यादा वह पुरुष को स्त्री होने का साथ भर दे सकती है लेकिन उसके हृदय के उस अभाव को जो स्त्री के लिए प्यास और प्रेम से भरा होता है, उस अभाव को पूरा नहीं कर सकती।

पश्चिम में परिवार टूट रहा है, भारत में भी परिवार टूटेगा और परिवार के टूटने के पीछे आर्थिक कारण उतने नहीं हैं जितना स्त्रियों का पुरुषों जैसा शिक्षित किया जाना। पुरुष की भांति शिक्षित होकर स्त्री एक नकली पुरुष बन जाती है असली स्त्री नहीं बन पाती। भिन्नता का लेकिन हमें कोई ख्याल नहीं है और भिन्न शिक्षा और दीक्षा का हमें कोई विचार नहीं है। यह बात सारी जगत की स्त्रियों को कह देने जैसी है—उन्हें अपने स्त्री होने को बचाना है। कल तक पुरुषों ने उन्हें हीन समझा था, नीचा समझा था और इसलिए नुकसान पहुंचा था, आज अगर पुरुष राजी हो जायगा कि तुम हमारे समान हो, तुम हमारी दौड़ में सम्मिलित हो औ जाओ। इस दौड़ में स्त्रियों कहां पहुंचेंगी और सवाल यही नहीं है कि स्त्रियों को नुकसान होगा, सवाल यह है कि पूरा जीवन नष्ट होगा।

सी. एम. जोड ने, पश्चिम के एक विचारक ने एक बड़ी अद्भुत बात लिखी। उसने लिखा कि जब मैं पैदा हुआ था तो मेरे देश में घर थे, होम्स थे लेकिन अब जब मैं बूढ़ा हो कर मर रहा हूं तो मेरे देश में होम जैसी कोई चीज नहीं है, घर जैसी कोई चीज नहीं है, केवल मकान, केवल हायसेस रह गये हैं। होम और हाउस में कुछ फर्क है? घर और मकान में कोई भेद है? होटल में और घर में कोई फर्क है? अगर कोई भी फर्क है तो वह सारा फर्क

स्त्री के ऊपर निर्भर है और किसी पर निर्भर नहीं है। हाउस होम बन सकता है, एक मकान घर बन जाता है अगर उसके बीच में केन्द्र पर कोई स्त्री हो। लेकिन स्त्री अगर पुरुष जैसी हो जाती है तो घर में मकान रह जाता है, घर निर्मित नहीं हो पाता। दो साथ रहनेवाले लोग होते हैं लेकिन पति और पत्नी नहीं होते। बच्चे पैदा होते हैं लेकिन नर्स और बच्चे का सम्बन्ध होता है, मां का और बेटे का सम्बन्ध स्त्री का नहीं होता। क्योंकि वह जो स्त्री थी, जो मां बन सकती थी उसके विकास के लिए हमने कुछ भी नहीं किया है। हमारे स्कूल और कालेज क्या सिखा रहे हैं? स्त्रियों के लिए क्या दे रहे हैं? वे ही उपाधियां दे रहे हैं जो बरसों से दी जा रही है। वे उन्हीं परीक्षाओं में से उन्हें निकाल रहे हैं जिनमें से पुरुषों का निकाला जा रहा है। वे उसी भांति की कवायद, उसी भांति के खेल खिला रहे हैं स्त्रियों को जो पुरुष खेल रहे हैं। और बड़े आश्चर्य की बात है इस सदी में जब कि मनुष्य के शरीर और फिजियोलोजी के सम्बन्ध में बहुत कुछ जानते हैं, हमें इतना भी पता नहीं है कि वही कवायद, वही एक्सरसाइज पुरुष और स्त्री को नहीं करवायी जा सकती है। स्त्री के शरीर के नियम, स्त्री के शरीर की बनावट बहुत भिन्न है। उसे अगर वही कवायद करवायी जाती है और उसे भी एन सी सी में वही लेफ्ट राइट करवाया जाता है जो पुरुष सैनिक सीख रहे हैं तो हम स्त्री के भीतर किसी बुनियादी तत्व को तोड़ देंगे जिसका हमें कोई पता ही नहीं, जिसका हमें ख्याल ही नहीं है। अतीत के लोग नासमझ नहीं थे। पुरुषों के लिए उन्होंने व्यायाम खोजे, स्त्रियों के लिए नृत्य खोजा। कोई अर्थ था, कोई कारण था। नृत्य में एक रीधम है, नृत्य में एक लययुक्तता है जो स्त्रियों के शरीर के हार्मोन्स को, उसके शरीर के रासायनिक तत्वों को एक और तरह की गतिमयता और संगीत से भरते हैं। कवायद बात दूसरी है। कवायद के अर्थ और प्रयोजन भिन्न हैं। कवायद मनुष्य के भीतर जो क्रोध है उसे सजग करती है, मनुष्य के भीतर जो लड़ने की प्रवृत्ति है उसे तीव्र करती है। मनुष्य के भीतर जो दूसरे के साथ हिंसा होने का भाव है उसे मजबूत करती है, बलवान करती है। कवायद अगर स्त्रियों को सिखायी गयी तो घर नष्ट हो जाने वाले हैं इसका हमें कोई ख्याल ही नहीं। हम उनके पूरे शरीर को नुकसान पहुंचा रहे है। यहां तक आप हैरान होंगी, जिन मुल्कों में स्त्रियों को पुरुषों जैसी सौन्दर्य शिक्षा दी जा रही है वहां जवान लड़कियों को भी होठों पर मूंछ आनी शुरू हो जाती हैं। यह बहुत आसान है, कठिन नहीं है। अगर ठीक पुरुषों

जैसी कवायद करवायी जाय बच्चियों को तो उनके होठों पर मूंछों के बाल आन शुरू हो जायेंगे। शरीर के हार्मोन्स अलग तरह से काम करना शुरू करते हैं और शरीर की जो व्यवस्था है वह अलग तरह से काम करती है। छोटी छोटी बात से फरक पड़ता है। शरीर को भी हम पुरुषों के जैसे स्त्रियों का ढालने की कोशिश कर रहे हैं और अब तो हम पुरुषों जैसे कपड़े पहनाने की भी सारी दुनिया में व्यवस्था कर रहे हैं। शायद हमें इस बात का कोई भी विचार नहीं है कि जीवन की छोटी छोटी बात सारे जीवन को प्रभावित करती है।

पूरब के लोग ढीले कपड़े पहनते रहे हैं, पश्चिम के लोग चुस्त कपड़े पहनते रहे हैं। चुस्त कपड़े आदमी को लड़ने को तत्पर बनाते हैं, ढीले कपड़े आदमी को शान्त करते हैं, मौन करते हैं। आज तक दुनिया में किन्हीं साधुओं की किसी भी परम्परा ने चुस्त कपड़ नहीं पहने। यह ऐसे ही व्यर्थ नहीं था। ढीला कपड़ा व्यक्तित्व को एक शिथिलता और शांति देता है, कसे हुए कपड़े व्यक्तित्व को एक तेजी और चुस्ती देते हैं इसलिए हम सैनिकों और नौकरों को चुस्त कपड़े पहनाते हैं लेकिन मालिक दुनिया में कभी चुस्त कपड़े नहीं पहनते हैं। अगर आप चुस्त कपड़े पहनी हुई सीढ़ियां चढ़ती हों तो आप दो सीढ़ियां एक साथ छलांग लगा जायेंगे। आपको पता भी नहीं चलेगा कि कपड़े आपको दो सीढ़ी इकटठे चढ़वा रहे हैं। अगर आप ढीले कपड़े पहनी हुई हैं तो आप एक गरिमा से एक डिग्नीटी से सीढ़ियों को पार करेंगी और चढ़ेंगी। स्त्रियों के कपड़े पुरुषों जैसे कभी भी नहीं होने चाहिए। स्त्रियों के जीवन में हम कुछ और अपेक्षा किये हुए हैं। उनसे घर में भी एक शांत वातावरण की अपेक्षा है। उनसे घर में एक प्रेमपूर्ण झरने की, एक शांत झील बन जाने की अपेक्षा है। उन्हें चुस्त कपड़े नहीं पहनाये जा सकते और अगर वे पहनती हों तो वे भूल में पड़ गयीं हैं और उस भूल के लिए बहुत मंहगी कीमत चुकानी पड़ेगी। कपड़ों तक प्रभावित करते हैं तो शिक्षा तो प्रभावित करेगी ही। मन की ट्रेनिंग हम जो सीखते हैं वह हमारे सारे व्यक्तित्व को निर्मित करता है। हम जो सोचते हैं वह हमारे पूरे जीवन को प्रभावित करता है, हम जो विचारते हैं, हम वैसे हो जाते हैं। हमें क्या सिखाया जा रहा है और क्या विचार करने के लिए हमें सामग्री दी जा रही है? स्त्रियों को कौन सी बातें सिखायी जा रही हैं वे सारी बातें, गणित में जो आदमी दीक्षित होता है, विज्ञान में जो आदमी दीक्षित होता है उसकी जीवन के प्रति पकड़ दूसरी होती है। संगीत में और काव्य में जो आदमी दीक्षित होता है उसकी जीवन के प्रति पकड़ दूसरी होती है और छोटी

सी पकड़ से सब कुछ भिन्न हो जाता है।

गांधी जी के आश्रम में एक आदमी आना शुरू हुआ है। कुछ लोगों ने शिकायत की गांधी से कि यह आदमी अच्छा नहीं है। इस आदमी को आश्रम आने देना उचित नहीं है, इस आदमी का चरित्र ठीक नहीं है। इसके गलत जीवन के बाबत बहुत गलत खबरें आश्रम में सुनी जा चुकी हैं। गांधी ने कहा, अगर आश्रम में बुरे आदमी नहीं आ सकेंगे तो आश्रम किस के लिए निर्मित किया गया है? बुरे आदमी आते हैं, हम उनका स्वागत करेंगे। लेकिन एक दिन तो बाद बहुत आगे बढ़ गयी और कुछ लोगों ने आकर गांधी को कहा कि अब तो सीमा के बाहर बात चली गयी। जिस व्यक्ति को हम रोकने को कहते थे वह आज शराब घर में बैठा हुआ शराब पी रहा है, हम आंखों से देखकर आये हैं और आप चलकर देख सकते हैं। खादी पहने हुए वह आदमी शराबखाने में बैठा हो तो बड़ा अपमानजनक है यह आश्रम के लिए। गांधी की आंखों में खुशी के आंसू आ गये और गांधी ने कहा कि अगर मैं उस आदमी को वहां शराबखाने में देखता तो हृदय आनन्द से भर जाता। मैं इसलिए आनंदित हो उठता कि अच्छे दिन मालूम होते हैं आने शुरू हो गये। शराब पीनेवाले लोगों ने भी खादी पहननी शुरू कर दी। वे लोग जो खबर लाये थे, वे खबर लाये थे कि खादी पहने हुए आदमी शराब पी रहा है यह बहुत बुरी खबर है लेकिन गांधी ने कहा, मेरा हृदय खुशी से भर जायगा अगर हमें यह पता चल जाय कि शराब पीनेवाले लोगों ने भी खादी पहननी शुरू कर दी है।

यह जीवन को दो तरफ से देखना है। जिन मित्रों ने गांधी को आकर कहा था उनकी जीवन को देखने की जो दृष्टि है वह एक अदालत की दृष्टि है, वह एक वकील की दृष्टि है। गांधी ने जिस तरफ से देखा वह एक मां की दृष्टि है, वह एक स्त्री की दृष्टि है। वह एक वकील की, वह एक अदालत की, एक कानून की दृष्टि नहीं है। क्या फर्क है दोनों दृष्टियों में? पहली दृष्टि में कंडमनेशन है उस आदमी का, उस आदमी की निन्दा है, उस आदमी को छोड़ देने का आग्रह है, उस आदमी से अलग हट जाने की बात है। दूसरी दृष्टि में उस आदमी के भीतर किसी शुभ के दर्शन की कोशिश, उस आदमी के भीतर भी सुन्दर को खोजने का ख्याल है, उस आदमी के सम्बन्ध में भी आशा है अभी। दूसरे विचार में वह आदमी समाप्त नहीं हो गया है, उसके बदल जाने की गुंजाइश हो सकती है। मां का एक बेटा बिगड़ता चला बिगड़ता चला जाय, सारी दुनिया आकर उसको कहे कि लड़का छोड़ देने जैसा हो गया है, यह लड़का

बिगड़ गया है, यह घर में घुसने जैसा नहीं है। लेकिन मां कहेगी अभी बहुत आशा है।

मैं एक छोटे से स्टेशन पर रुका हुआ था। मेरी गाड़ी आन में देर थी, वह एक छोटे से देहात का स्टेशन था और एक बूढ़ी स्त्री को कुछ लोग ले जा रहे थे उसके सिर पर पट्टियां बंधी थी। शायद किसी ने उसको लकड़ियों से चोट की थी। दो तीन स्त्रियां भी उसके साथ थीं। वे बाहर बड़े नगर में अस्पताल में उसे ले जाने को लाये हैं। मैंने पूछा, इस स्त्री को किसने मार दिया है? उसके साथ की स्त्रियों ने कहा कि इसका एक ही लड़का है और उसी लड़के ने इसको लकड़ी से चोट पहुंचाई है, इसके सिर में लहूलुहान कर दिया, यह बेहोश हो गयी थी, अभी अभी होश में आयी है। हम इसे अस्पताल ले जा रहे हैं। दूसरी स्त्री ने जो उसी के साथ थी, कहा कि ऐसे लड़के तो पैदा ही न हों तो अच्छा है लेकिन उस बूढ़ी ने, जिसके सिर से खून बह रहा था उस दूसरी स्त्री के मुंह पर हाथ रख दिया और कहा, ऐसा मत कहो, अगर लड़का न होता तो आज मुझे मारता भी कौन। लड़का है तो उसने मार भी दिया लेकिन लड़का नहीं होता तो मुझे मारता भी कौन? लड़के का होना ही बहुत है। उसने मारा यह तो बहुत छोटी सी बात है और फिर वह बूढ़ी कहने लगी। लड़के ही हैं, अभी समझ कितनी है। मार दिया, कल समझ वापस आ जायेगी।

यह एक मां का हृदय है जो गणित में नहीं सोचता जो कानून में नहीं सोचता। जो किसी प्रेम और आशा से सोचता है।

स्त्रियों की शिक्षा एकदम भिन्न होनी चाहिए ताकि उनकी दृष्टि भिन्न हो। वे जीवन को किन्हीं और ढंगों से सोचने में समर्थ हो सकें। लेकिन नहीं, यह नहीं हो रहा है। हम उन्हें उन्हीं दृष्टियों में, उन्हीं दर्शनों में, उन्हीं विचारों में दीक्षित कर रहे हैं जिनमें पुरुष दीक्षित है और पुरुष ने जो दुनिया बनायी है वह गलत सिद्ध हो चुकी है इसे कुछ कहने की जरूरत नहीं है। पिछले तीन हजार वर्षों में पुरुषों की दुनिया में १५ हजार युद्ध हुए हैं। शायद ही कोई दिन ऐसा हो जब जमीन पर युद्ध नहीं हो रहे हों। प्रति दिन युद्ध हो रहा हैं, प्रति क्षण युद्ध हो रहा है, प्रतिक्षण आदमी काटे जा रहे हैं और मारे जा रहे हैं। यह अकेले पुरुषों की बनायी हुई दुनिया है, यह हार चुकी है, असफल हो चुकी है यह प्रयोग हो चुका है। क्या हम एक प्रयोग नहीं करेंगे कि स्त्रियां भी इस दुनिया के बनाने में कोई महत्वपूर्ण हिस्सा बटाएं? एक नयी दुनिया को बनाने

के लिए कोई आधार रखें या कि वे भी पुरुष की नकल करेंगी और आज नहीं कल सैनिकों के वस्त्र पहनकर नगरों पर एटम बम गिरायेंगी ? पुरुष बहुत प्रशंसा करेंगे आपकी जिस दिन आप एटम बम गिराने में समर्थ हो जायेंगी और तब पुरुष कहेंगे कि बहुत अच्छी स्त्री है। अब ठीक हो गया है सब। जब आप युद्ध के मैदान पर बन्दूकें लेकर खड़ी हो जायेंगी तो पुरुष आपको बहुत तकमें बाटेंगे, पद्मश्री और भारतभूषण की उपाधियां देंगे महावीर चक्र देंगे और कहेंगे कि अब स्त्रियां ठीक हो गयी हैं।

पुरुष अपनी ही भाषा में सोचता है, अपनी ही भाषा में स्त्रियों को भी निर्मित करलेना चाहता है बिना इस बात को जाने हुए कि पुरुष खुद बहुत गलत है। उस गलत पुरुष की और संख्या बढ़ाने कि कोशिश मत करिये। अकेले पुरुष ही काफी हैं दुनिया को नष्ट करने के लिए और अगर आप भी पुरुषों जैसा व्यवहार करती हैं तो कल मनुष्य जाति का अंत और निकट आ सकता है और कुछ भी नहीं हो सकता। लेकिन अगर स्त्रियां चाहें तो सारे जगत में एक बड़ी क्रांति ला सकती हैं। अगर स्त्रियां चाहें तो पृथ्वी से युद्ध बन्द हो सकते हैं, अगर स्त्रियां चाहें तो सारी बेवकूफिया बन्द की जा सकती हैं, सारी हिंसा बन्द की जा सकती हैं, सारा क्रोध बन्द किया जा सकता है। लेकिन उसके लिए बिल्कुल और तरह की स्त्री को जन्म देना जरूरी है, पुरुष की नकल नहीं। स्त्री अपने ही गुणों में परिपूर्ण गरिमा को उपलब्ध हो, इसकी दिशा में कुछ काम करना जरूरी है। पुरुष ने जो स्थिति बना ली है, मैं एक छोटी सी कहानी से आपको समझाने की कोशिश करूंगा।

ईश्वर बहुत घबरा गया है पुरुष की इस दुनिया को देखकर। बहुत परेशान हो गया है। आदमी ने जो किया है आदमी के साथ, उसकी कथा इतनी दर्दपूर्ण, इतनी दुख भरी है कि जिसका कोई हिसाब नहीं। कितनी हत्याएं हुई हैं। हमारी तो स्मृति बहुत कमजोर है इसलिए हम हिसाब भूल जाते हैं। तैमूरलंग ने, नादिर शाह ने, चंगेज खां ने और अभी अभी स्टैलिन और हिटलर ने क्या किया है उसकी कल्पना ही हमें नहीं। अकेले स्टैलिन ने रूस में साठ लाख लोगों की हत्या करवा दी है। अकेले हिटलर ने पांच सौ लोग, जब तक वह हुकूमत में रहा, रोज के हिसाब से मारे। प्रति दिन पांच सौ की संख्या पूरी की और अब तो इन पुरुषों ने बहुत बड़ी ईजाद कर ली है, एटम और हाईड्रोजन बम बना लिया है और आज नहीं कल वे सारी दुनिया को नष्ट करने के आयोजन में संलग्न है। उनकी तैयारी पूरी है कि आदमी को नहीं बचने देंगे। तो ईश्वर

बहुत घबरा गया होगा। उसने दुनिया के तीन बड़े राष्ट्रों के प्रतिनिधियों को अपने पास बुलाया, रूस और ब्रिटेन और अमरीका। और उन प्रतिनिधियों से कहा ईश्वर ने कि मैं बहुत चिन्तित हो गया हूं ऐसे तो जब से मैंने आदमी को बनाया तबसे नींद मुझे नहीं आसकी। रात्र मेरी बेचैनी से गुजरती है कि यह आदमी पता नहीं कब क्या कर दे और जबसे मैंने आदमी को बनाया, तुम्हें पता होगा उसके बाद मैंने फिर कुछ भी नहीं बनाया क्योंकि आदमी को बनाकर मैं इतना घबरा गया कि तबसे सृष्टि का सारा काम ही मैंने बन्द कर दिया और तबसे मैंने सृष्टि बन्द कर दी है, तबसे आदमी ने चीजें बनानी शुरू कर दी और आदमी ने आखिर में एटम और हाईड्रोजन बम बनाये। अबतो बहुत घबराहट हो गयी है। मैं पूछता हूं, तुम चाहते क्या हो। तुम्हारी मंशा क्या है, तुम्हारे इरादे क्या हैं? इतनी हत्या का आयोजन किस लिए, इतना श्रम किस लिए? अरबों डालर रोज खर्च किया जा रहा है। सारी जमीन पर आदमी भूखा मर रहा है और एटम बनाने में रुपये खर्च किये जा रहे हैं, आदमी भूखे मरे जा रहे हैं, बिना वस्त्रों के हैं, बिना दवाइयों के हैं और दूसरी तरफ हम आदमी के मिटाने की सारी सम्पत्ति नष्ट कर रहे हैं। पृथ्वी की आधी सम्पत्ति हमेशा युद्धों में लगती रही है। अगर युद्ध नहीं होते तो आदमी आज कितना खुशहाल होता? कहना बहुत कठिन है। ईश्वर ने पूछा, उनसे, तुम चाहते क्या हो? मैं तुम्हें वरदान दे दूं और तुम्हारी इच्छा पूरी कर दूं। तुम एक एक वरदान मांग लो। अमरीका के प्रतिनिधि ने कहा, हे प्रभु, हमारी एक ही आकांक्षा है और फिर कभी कोई युद्ध न होंगे। फिर हमारे प्रति कोई शिकायत न होगी। पृथ्वी तो रहे, पृथ्वी पर रूस का कोई निशान न रहे तो हमारी आकांक्षा पूरी हो जायगी। ईश्वर ने बहुत वरदान दिये हैं लेकिन कभी कल्पना भी नहीं की थी कोई ऐसा वरदान मांगेगा। उसने बहुत भय से रूस की तरफ देखा। जब अमरीका ही यह कहता है तो रूस क्या कहेगा इसकी तो कल्पना ही की जा सकती है। रूस के प्रतिनिधि ने कहा महानुभाव, हमें तो विश्वास ही नहीं कि ईश्वर कहीं होता भी है। मुझे तो डर लगता है कि शायद मैं ज्यादा शराब पी गया हूं और आप दिखायी पड़ रहे हैं या हो सकता है मै कोई सपना देख रहा हूं और आप दिखायी पड़ रहे हैं। क्योंकि रूस में आपको पता है, पचास साल से तय कर लिया कि ईश्वर है ही नहीं और सारे मुल्क ने तय कर लिया है एक मत से, ईश्वर नहीं है, फिर आप हो कैसे सकते हैं और यह तो लोकतंत्र का जमाना है जनता जो तय कर लेती है। वही होता है। हमन तय कर

लिया कि ईश्वर नहीं है, आप हो कैसे सकते हो? जरूर मैं कोई सपना देख रहा हूं या आज ज्यादा शराब पी ली है। लेकिन फिर भी कोई हरजा नहीं। हो सकता है कि हम आपकी पूजा फिर से शुरू कर दें और अपने चर्चों में आपकी मूर्तियां फिर बिठा दें, लेकिन एक इच्छा हमारी पूरी हो जाये। जमीन का नकशा तो हो, पृथ्वी का भूगोल तो हो, लेकिन उस नकशे में हम अमरीका के लिए कोई रंग, कोई रेखा नहीं देखना चाहते हैं। बस इतना हो जाय फिर सब ठीक है, फिर हमारा कोई विरोध आपसे भी नहीं। हम आपकी भी पूजा करेंगे। हमने, पहले आपके मंदिर थे वहां कम्युनिस्ट पार्टी के दफ्तर खोल दिये हैं। अब जहां जहां कम्युनिस्ट पार्टी के दफ्तर है हम फिर से मन्दिर बना देंगे, हमें कोई कठिनाई नहीं है लेकिन इतनी हमारी इच्छा पूरी हो जानी चाहिए। भगवान ने बहुत घबराकर ब्रिटेन की तरफ देखा और ब्रिटेन ने जो कहा वह ख्याल में रख लेने जैसी चीज है। ब्रिटेन के प्रतिनिधि ने भगवान के चरणों पर सिर रखकर कहा कि हे महाप्रभु, हमारी अपनी कोई आकांक्षा नहीं। इन दोनों की आकांक्षा एकसाथ पूरी हो जाय तो हमारी आकांक्षा पूरी हो जाय। हम कुछ और नहीं मांगते हैं, इन दोनों की आकांक्षा एक साथ पूरी हो जाय तो हमारी आकांक्षा पूरी हो जाय। हम कुछ और नहीं मांगते हैं। इन दोनों ने जो मांगा वह पूरी कर दें फिर हमें कुछ भी नहीं चाहिए।

यह आदमी ने जो दुनिया बनायी है, पुरुष ने जो दुनिया बनायी है वह यहां ले आयी है। स्त्रियों का इस दुनिया की बनावट में अबतक कोई हाथ नहीं है। क्या स्त्रियां चुपचाप देखती रहेंगी पुरुषों की इस दुनिया को? या कि वे कोई भाग लेंगी? कुछ कंट्रीब्युट करेंगी? में सोचता हूं, स्त्रियों के पास एक महान शक्ति सोई हुई पड़ी है। दुनिया की आधी से बड़ी ताकत उनके पास है। आधी से बड़ी ताकत कहता हूं। आधी तो इसलिए कहता हूं कि स्त्रियां आधी तो हैं ही दुनिया में, आधी से बड़ी इसलिए कि बच्चे बच्चियां उनकी छाया में पलते हैं और वे जैसा चाहें उन बच्चे और बच्चियों को परिवर्तित कर सकती हैं। पुरुषों के हाथ में कितनी ही ताकत हो, लेकिन पुरुष एक दिन स्त्री की गोद में होता है, वहीं से वह अपनी यात्रा शुरू करता है और चाहे वह कितना ही बड़ा हो जाय और चाहे वह वृद्ध ही क्यों न हो जाय वह अपनी पत्नी के सान्निध्य में अपनी पत्नी की निकटता में निरन्तर अपनी मां का अनुभव करता ही है, निरन्तर अपनी मां की छाया देखता ही है। मां की छाया में बड़ा होता है। मां बचपन से उसके जीवन में छाया बनी रहती है। एक बार स्त्री की पूरी

शक्ति जाग्रत हो जाय और वे निर्णय कर लें कि किसी प्रेम की दुनिया को निर्मित करेंगी जहां युद्ध नहीं होंगे, जहां हिंसा नहीं होगी, जहां राजनीति नहीं होगी, जहां पोलीटीसियंस नहीं होंगे, जहां जीवन में कोई बीमारियां नहीं होंगी। अगर एक ऐसी दुनिया तय कर लें स्त्रियां, बनानी तो बहुत कठिन नहीं है कि वे एक नयी दुनिया बनाकर खड़ी कर दें और वह दुनिया पुरुषों की बनायी दुनिया से बहुत बेहतर होगी। आज भी जगत में जिन लोगों ने कुछ महत्वपूर्ण दिया है उन सारे लोगों में स्त्रियों के गुण अद्‌भुत थे। गांधी के ऊपर तो एक स्त्री ने किताब भी लिखी है :—"बापू माई मदर" "गांधी मेरी मां"। गांधी के पास बहुत लोगों को लगा कि उनके मन में मां जैसे बहुत कुछ गुण हैं। बुद्ध के पास जाकर लोगों को लगता था, क्राइस्ट के पास जाकर लोगों को लगता था कि शायद इन आदमियों के भीतर, इन पुरुषों के भीतर भी स्त्रियों की अद्‌भुत क्षमता है।

जहां भी प्रेम है, जहां भी करुणा है, जहां भी दया है वहां स्त्री मौजूद है। इसलिए मैं कहता हूं कि स्त्री के पास आधी से भी ज्यादा बड़ी ताकत है और वह पांच हजार बरसों से बिल्कुल सोयी हुई पड़ी है, बिल्कुल सुप्त पड़ी है। नारी की शक्ति का कोई उपयोग नहीं हो सका है। भविष्य में यह उपयोग हो सकता है। उपयोग होने का एक सूत्र यही है कि स्त्री यह तय कर ले कि उन्हें पुरुषों जैसा नहीं हो जाना है। दूसरी बात, वे पुरुषों से भिन्न हैं, इस बात को अनुभव कर लें। उनका व्यक्तित्व, उनका शरीर, उनका मन, उनकी चेतना किन्हीं अलग रास्तों से जीवन में गति करती है, किन्हीं अलग मार्गों से जीवन की खोज करती है। उनकी चेतना, उनकी कौंसेसनेस पुरुषों की चेतना से भिन्न है। इस भिन्नता का बोध स्पष्ट होना चाहिए और तीसरी बात उनकी शिक्षा, उनके वस्त्र, उनके चिन्तन, उनकी दीक्षा, उनके विचार सब भिन्न होनी चाहिए, पुरुषों जैसी नहीं, तो हम नारी की शक्ति का मनुष्य की संस्कृति में उपयोग कर सकते हैं और वह उपयोग अत्यन्त मंगलदायी सिद्ध हो सकता है।

यह कौन करेगा ? यह बात पुरुषों पर नहीं छोड़ी जा सकती, स्त्रियों को अपने ही हाथ में ले लेनी होगी। उन्हें खुद ही सोचना होगा, खुद ही विचार करना होगा, खुद ही रास्ते खोजने होंगे। उन्होंने विचार करना शुरू किया है लेकिन वह विचार बिल्कुल पुरुषों का अनुकरण है और नकल है। उनका कोई अपना चिन्तन, कोई अपनी दृष्टि नहीं है। उसमें कोई उनकी अपनी समझ नहीं है। ये थोड़ी सी बातें मैंने आपसे कहीं। आप सोचें, विचारें नारी की शक्ति का अपव्यय हुआ है या उपयोग ही नहीं हुआ है। या उपयोग हुआ है तो गलत

दिशाओं में हुआ है और अब इतने जोर से नारी दीक्षित की जा रही हैं पुरुषोंकी नकल में, पुरुषों के कालेजों में, पुरुषों के स्कूलों में इतने जोर से उसे ढांचे में ढाला जा रहा है कि यह हो सकता है, सौ बरस बाद दो तरह के पुरुष पृथ्वी पर हों लेकिन स्त्रियां नहीं रह जायेंगी। उससे बड़ा कोई दुर्भाग्य नहीं हो सकेगा। मनुष्य ने बहुत दुर्भाग्य जाने हैं लेकिन अगर सारी स्त्रियां पुरुषों जैसी हो जायें तो इससे बड़ा दुर्भाग्य नहीं हो सकता। जीवन का सारा आनन्द और जीवन का सारा आकर्षण नष्ट होगा और जीवन भरेगा विषाद से और पीड़ा से और विषाद और पीड़ा में सिवाय आत्मघात के कोई विकल्प नहीं रह जायगा या आदमी अपने को नष्ट कर दे और समाप्त कर दे।

ये थोड़ी सी बातें मैंने कहीं इस आशा में कि हो सकता है मेरी बात आपके हृदय की वीणा का कहीं कोई तार छू दे, कोई चिन्तन का वहां जन्म हो जाय, कोई चीज आपको दिखायी पड़ने लगे, कोई चीज आपके जीवन में सक्रिय हो जाय और आपके जीवन में अगर कोई चीज सक्रिय हो जाती है, एक स्त्री के जीवन में अगर कोई चीज सक्रिय हो जाती है तो एक पूरे परिवार के प्राणों में परिवर्तन होना शुरू हो जाता है। एक स्त्री को बदल लेना पचास पुरुषों के बदलने के बराबर है। इतनी बड़ी शक्ति जिनके हाथ में हो, इतनी बड़ी जिनके हाथ में सामर्थ्य हो, इतने जीवन को बदलने का जिनके लिए अवसर हो वे अगर जीवन के लिए कुछ भी नहीं करती हों तो निश्चित अपराधी हैं। स्त्री अपराधी है, उसने जीवन को कुछ भी नहीं दिया है। उसने जीवन को बनाने के लिए कोई बुनियाद ही नहीं रखी। लेकिन ये बुनियादें रखी जा सकती हैं। जो गाड़ी है सभ्यता की, यह बिल्कुल एक चाक से भागी जा रही है। इससे बड़े एक्सीडैंट होते रहे हैं, बड़े एक्सीडैंट होने की आगे सम्भावना है। दूसरा चाक बिल्कुल जाम है। यह गाड़ी से निकल कर अलग पड़ा हुआ है। परमात्मा करे कि मनुष्य की इस संस्कृति को पूर्णता दे दे। स्त्री भी अपना दान, अपने प्रेम, अपने आनन्द, अपने काव्य, अपने संगीत को जोड़ दे। इस दुनिया में जो अकेले गणित ने, फिजिक्स और केमिस्ट्री ने खड़ी की है, स्त्री भी जोड़ दे अपनी प्रार्थना को उस राजनीति में जो अकेले पुरुषों ने केवल महत्वाकांक्षा के आधार पर खड़ी की है। स्त्री भी जोड़ दे अपनी थोड़ी सी पंक्तियों को उस गीत में जो पुरुष अबतक अपने क्रोध और युद्ध के आवेश में अकेला ही गाता रहा है तो शायद एक ज्यादा सर्वांगीण, ज्यादा इन्टीग्रेटेड, ज्यादा अखंड सभ्यता का जन्म हो सकता है और अगर वह सभ्यता नहीं जन्मी तो यह सभ्यता मरने के करीब है।

इसे मरने से कोई भी नहीं बचा सकेगा। या तो दूसरी सभ्यता जन्मेगी या पूरे मनुष्य के अन्त का क्षण करीब आ गया है। मनुष्य के बचने की बहुत ज्यादा सम्भावना नहीं है।

अन्त में आप सबके भीतर बैठे हुए परमात्मा को प्रणाम करता हूं।

मेरे प्रणाम स्वीकार करें।

द्वारका (सौराष्ट्र) में आध्यात्मिक शिबिर

आचार्य श्री रजनीश के सान्निध्य में ता. २८-२९-३०-३१ अक्टूबर ६९

विषय : "मृत्यु पर विजय"

शिबिर स्थल : **श्री लोहाणा कन्या छात्रालय-द्वारका**

पत्रव्यवहार का पता : **श्री पुष्कर भाई गोकाणी** जवाहर रोड, **द्वारका** (सौराष्ट्र)

हजारों मुमुक्षु साधकोने शिबिरों में भाग लेकर जीवन जीने की दिशा में एक नया मार्गदर्शन पाया है। यह शिबिर समुद्रके किनारे अपने ढंगका अद्वितीय होगा। आप मित्रों और परिवारसहित अवश्य पधारें।

समाचार विभाग :

धर्म चक्र पवर्त्तन :

आचार्यश्री के देशव्यापी कार्यक्रम :

स्वयं से भागो नहीं, जागो । क्योंकि भागने से जो स्वयं में शून्य है । वही जागने से पर्ण बन जाता है ।"

बंबई में त्रिदिवसीय क्रांतिकारी प्रवचनमाला :

बंबई जीवन जागृति केन्द्र द्वारा पूज्य आचार्यश्री के क्रांतिकारी प्रवचनों का आयोजन बंबई महानगरी के विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है । इस बार यह आयोजन रुईया कालेज के प्रांगण में किया गया था । ३०, ३१ जनवरी तथा १ और २ फरवरी ये कार्यक्रम आयोजित थे । इन कार्यक्रमों में बंबई महानगर के प्रबुद्ध तथा प्रेमी नागरिक बहुत बडी संख्या में उपस्थित होते रहे । आचार्यश्री मनुष्य के जीवन की आंतरिक समस्याओं पर अपने क्रांतिकारी सृजनात्मक विचार देते हुये कहा: "मनुष्य के जीवन की मूल समस्या क्या है ? वह पहेली कौनसी है, जिसमें उलझकर अधिक लोग व्यर्थ ही समाप्त हो जाते हैं ? और जो इस मूल समस्या को बिना जाने ही जीवन पथ पर चल पडता है, निश्चय ही वहयदि भटक जाता हो तो कोई आश्चर्य नहीं । और दुर्भाग्य से अधिक लोग जीवन भर भागते हैं, दौडते हैं, और गिरते हैं और समाप्त भी हो जाते हैं, बिना यह जाने कि वे क्यों दौड रहे थे और क्या कर रहे थे । क्या आपको उस मूल समस्या का बोध है ? क्या आप उसके प्रति सचेत हैं ? नहीं । नहीं । जरा भी नहीं । अन्यथा आप दुखी न होते, अन्यथा आप जीवन को

एक बोझ की भांति न ढोते। क्योंकि जो उस समस्याको जान लेता है, वह हल भी कर लेता है। उसे ठीक से जान लेना ही उसका समाधान भी है। वह समस्या यह है कि मनुष्य स्वयं को भरने और पूरा करने के लिये दौड रहा है। मनुष्य पाता है कि वह भीतर खाली और रिक्त है। एक अभाव उसे स्वयं के प्राणों में अनुभव होता है। इस अभाव को, इस रिक्तता और अकेलेपन को भरनेके लिये ही वह दौडता फिरता है। धन की, यश की, पद की, सारी खोजें इसी अभाव को भरने के लिये हैं। लेकिन सब पाकार भी पाया जाता है कि वह खाली का खाली है। और यही विफलता. . . . यही अनिवार्य विफलता उसे जीते झी मुर्दा बना देती है। यह विफलता अनिवार्य है, क्योंकि अभाव है उसके भीतर और जिससे वह उसे भरना चाहता है, वह सब है उसके बाहर। और आंतरिक रक्तता बाह्य संपदा से कैसे भर सकती है ? इसलिये बाहर संपत्ति का ढेर लग जाता है और भीतर की विपत्ति उससे अछूती ही रह जाती है। और संपदा के ढेर में भी मनुष्य स्वयं को दरिद्र ही पाता है। यह विफलता मनुष्य को त्याग और तप और धर्म की ओर भी लेना सकती है। लेकिन वे भी बाहर ही हैं और वे भी व्यर्थ हैं। वस्तुतः सवाल कहीं धन में या धर्म मेंभागने का नहीं है। सवाल है स्वयं में जागने का अभाव क्या है. . . . रिक्तता क्या है. . . यह स्वयं में जो शून्यता है, यह क्या है, इसे जाने बिना जो भागता है, वह तो बाहर ही भागेगा क्योंकि वह तो भीतर से भयभीत जो है। और उसकी सारी गति स्वयं से पलायन ही होगी। जबकि स्वयं से कोई कैसे भाग सकता है ? स्वयं का होना यदि शून्यता भी है तो उससे भागा नहीं जा सकता है। वह जो भी है, वही है। भागना असंभव है। इसलिये उसके प्रति जागना है। और जागते ही आश्चर्यों का आश्चर्य घटित होता है। क्योंकि, स्वयं के प्रति जागते ही पाया जाता है कि जो शून्य जैसा प्रतीत होता था वह तो पूर्ण है। पूर्ण के प्रति पीठ हो तो वह शून्य है और शून्य के प्रति आंखें हों तो वही पूर्ण है। शून्य और पूर्ण एक ही सत्य के दो अनुभव हैं। निद्रा में पूर्ण शून्य मालूम होता है और जागरण में शून्य पूर्ण हो जाता है।

★

"चाहिये युवा मन. जो खतरों में शांतिपूर्वक उतर सके।"

युवक क्रांति दल के बीच उद्‌बोधन :

बंबई में युवकों की विशाल संगोष्ठी को आचार्यश्री ने २ फरवरी के सुबह उद्‌बोधित किया। ये युवक पूज्य आचार्यश्री से प्रेरणा और मार्गदर्शन पाकर

युवक क्रांति दल को जन्म दे रहे हैं। युवक क्रांति दल क्या है ? इस पर आचार्यश्री ने विस्तार से युवकों को समझाया। आचार्यश्री ने कहा : "हमारे देश में युवा होते ही नहीं। या तो बच्चे हैं अथवा वृद्ध। क्योंकि युवा होने के लिये चाहिये खतरे में उतरने का साहस। न तो हमारा युवक जीवन के बाह्य संघर्षों में उतरता है, जो इतना विराट् जीवन है, उसमें सक्रिय रूप से हिस्सेदार नहीं होता। न तो उसे पहाडों की ऊंचाई चुनौती देती मालुम पडती है और न समुद्र की गहराई। और जबतक कोई कौम बाहर के जगत् की चुनौतियों को स्वीकार नहीं करती, उसकी चेतना विकसित नहीं होती। मैं चाहता हूं एक ऐसी युवा पीढी जो बाहर के संघर्षों की चुनौतियों को स्वीकार कर सके और अपने भीतर के जगत् में अपनी अंतर्चेतना की खोज से शांतिपूर्ण व्यक्तित्व को जन्म दे सके। और तभी हमारी युवा पीढी अपने जीवन को और समाज के जीवन को स्वास्थ्य दे सकेगी, अन्यथा हमारे सामने कोई जीवन नहीं है, सिवाय मृत्यु के।

★

"नारी को पुरुष से प्रतिस्पर्धा में नहीं उतरना है।"

महिला विश्वविद्यालय, एस. एन. डी. टी. में वार्ता :

बंबई महानगर में महिला विश्वविद्यालय के आमंत्रण पर पूज्य आचार्यश्री ३ फरवरी के मध्यान्ह "नारी और क्रांति" विषय पर वार्त्ता हेतु एस. एन. डी. टी. महिला विश्वविद्यालय में पधारे। यहां पर आपने महिलाओं की विशाल सभा को उद्‌बोधित करते हुये कहा : "महिलाओं को किसी मूल्य पर पुरूषों से प्रतिस्पर्धा में नहीं उतरना है। पुरुष का कार्यक्षेत्र और उसका व्यक्तित्व नारी से सर्वथा भिन्न है। नारी तो प्रेम की जीवन्त सरिता है और पुरुष से अगर वह प्रतिस्पर्धा में उतरी तो उसका सारा व्यक्तित्व कुरुप और खंडित हो जायेगा। इससे नारी को अपने स्वयं के जीवन में प्रेम की सरिता में बहकर मानवीय जीवन को प्रभु के प्रकाश से आलोकित करते रहना है।"

★

"खोजो स्वतंत्रता। और फिर स्वतंत्र चित में सत्य तो वैसे ही चला आता है, जैसे सागर में सरितायें आती हैं।"

रींवा में सत्संग :

अचार्यश्री ८ तथा ९ फरवरी को रींवा पधारे। ये दो दिवस रींवा के प्रबुद्ध नागरिकों के लिये अविस्मरणीय हो गये हैं। आचार्यश्री ने यहां हा : "सत्य के

मार्ग की यात्रा केवल वे ही कर सकते हैं जो कि स्वतंत्र हैं। स्वतंत्र चित्त... समस्त परंपराओं, संस्कारों और विचारों से स्वतंत्र चित्त ही वस्तुतः वह मार्ग है जो कि सत्य तक ले जाता है। स्वतंत्रता ही सत्य का द्वार है। स्वतंत्रता ही सत्य है। इसलिये मैं कहता हूं कि सत्य मत खोजो। सत्य तो स्वतः आता है। खोजो स्वतंत्रता। लेकिन हम तो परतंत्रता खोजते हैं और साथ ही सत्य भी चाहते हैं। यह असभव है। ऐसा कभी नहीं हो सकता। क्योंकि, जहाँ स्वतंत्रता ही नहीं है, वहां तो अज्ञात की यात्रा प्रारंभ नहीं होती है। परतंत्र चित्त यानी ज्ञात में बंधा चित्त। स्वतंत्र चित्त यानी ज्ञात से मुक्ति। और निश्चय ही जो ज्ञात से बंधा है, वह अज्ञात को कैसे जान सकता है? जबकि सत्य अज्ञात है, और परमात्मा अज्ञात है। अज्ञात को पाने के लिये ज्ञात को छोडना ही पडता है। और यही है सबसे बडा साहस। क्योंकि ज्ञात में सुरक्षा है। क्योंकि ज्ञात परिचित है, और अज्ञात अपरिचित। इसी परिचय और सूरक्षा के कारण मनुष्य स्वयं ही अपनी जंजीरों को मजबूत करता रहता है। जब कि चाहिये अज्ञात और अपरिचित और अनजान में प्रवेश का साहस। ऐसा साहस ही साधना बनता है और ऐसे साहसी व्यक्ति को ही मैं धार्मिक कहता हूं। साहस करो, स्वतंत्र बनो और सत्य को पा लो। सत्य तो सदा द्वार पर खडा है लेकिन हम में आंखें खोलकर उसे देखने का साहस ही नहीं है। परमात्मा तो निकट है, लेकिन हम स्वयं की निर्मित परतंत्रताओं में ही बंधे हैं और उसकी ओर एक इंच की भी यात्रा करने में असमर्थ है।"

★

"भय का धर्म से क्या संबंध? धर्म तो वहीं है, जहां अभय है।"

लायन्स क्लब रींवा में :

आचार्यश्री ९ फरवरी को रात्रि लायन्स क्लब के आमंत्रण पर वहां बोलने पधारे। आपने कहा : "मनुष्य के मन को सब भांति के भयों से मुक्त करना है। भय से बडी और कोई आत्मिक बीमारी नहीं है। इस भय के कारण ही धर्म के नाम पर मनुष्य का अतिशय शोषण हुआ। जबकि वस्तुतः धर्म और भय विरोधी दिशायें हैं। धर्म का भय से क्या संबंध? धर्म तो वहीं हैं, जहां अभय है।"

★

"प्रेम है जीवन। प्रेम है प्रार्थना और प्रेम ही परमात्मा है।"

बडौदा में विशाल सत्संग :

आचार्यश्री का १३, १४, १५ तथा १६ फरवरी को बडौदा नगर में बहुत

विशाल सत्संग हुआ। कोई २५ से लेकर ३५ हजार व्यक्तियों ने प्रतिदिन उपस्थित होकर अपनी प्रबुद्ध चेतना का परिचय दिया। इन दिनों बडौदा की हवा में आचार्यश्री के विचार कण विद्युत के प्रवाह की तरह व्याप्त हो गये। चारों ओर जनमानस में एक अदभुत चेतना का संचार आचार्यश्री की मृतमयी वाणी से हुआ। आपने यहां कहा : "मैं प्रेम के अतिरिक्त और किसी प्रार्थना को नहीं जानता हूं। और मैं कहता हूं कि जो प्रेम में समग्रतः प्रविष्ट हो जाते हैं, वे परमात्मा को भी पा लेते हैं। लेकिन प्रेम को पाने के लिये स्वयं को खोना पडता है। क्योंकि अहंकार की चट्टान के अतिरिक्त प्रेम के झरने को रोकने में और क्या बाधा है ? प्रेम तो प्रत्येक के हृदय में भरा है, लेकिन अहंकार द्वार को रोके है। अहंकार को छोडो यदि प्रेम को पाना है। और प्रेम को पाना आवश्यक है, यदि परमात्मा को पाना है। अहंकार दुख है। परमात्मा आनन्द, अहंकार अंधकार है, परमात्मा आलोक। अहंकार परतंत्रता है। परमात्मा स्वतंत्रता। और अहंकार से, अंधकार से, परतंत्रता से जो परमात्मा तक, प्रकाश तक, परम मुक्ति तक जाना चाहता है, उसके लिये मार्ग क्या है ? उसके लिये मार्ग है : प्रेम, प्रेम, प्रेम और प्रेम। प्रेम ही जीवन है, प्रेम ही प्रार्थना है और अंततः प्रेम ही परमात्मा है। लेकिन हम प्रार्थनायें भी करते हैं। और परमात्मा के मनुष्य निर्मित मंदिरों की परिक्रमायें भी करते हैं, पर प्रेम से हमारे हृदय बिल्कुल शून्य हैं। इसलिये न हमारी प्रार्थनाओं का कोई मूल्य है और न हमारे परमात्माओं का। उल्टे वे और भी मनुष्य को मनुष्य से तोडने के कारण बन गये हैं। और क्या जो मनुष्य को मनुष्य से ही तोड देता हो, वह कभी उसे परमात्मा से जोड सकता है ? प्रेम के अतिरिक्त और कोई धर्म नहीं है। क्योंकि प्रेम के अतिरिक्त स्वयं और समग्र के बीच और कोई सेतु नहीं है। प्रार्थनायें छोडो और प्रेम करो। परमात्मा को छोडो और प्रेम करो, और आप अंततः पाओगे कि प्रार्थना पूरी हो गई है और परमात्मा स्वयं ही उपलब्ध हो गया है।"

★

"सेक्स के दमन से नहीं, सेक्स को समझकर, उससे मुक्ति संभव." बडौदा विश्व-

बडौदा विश्वविद्यालय में 'विद्यार्थी और सेक्स' पर क्रांतिकारी प्रवचन

१६ फरवरी के सुबह पूज्य आचार्यश्री बडौदा विश्वविद्यालय में युवकों के मध्य 'विद्यार्थी और सेक्स" विषय पर बोलने पधारे। आचार्यश्री को सुनने के लिये सभाभवन खचाखच भरा हुआ था और बैठने के लियेभी स्थान शेष न था। आपने कहा : "अभी

तक भारत में सेक्स के संबंध में स्वस्थ जीवन दृष्टि नहीं है। परिणामतः भारत का मन बुरी तरह कामुकता से जकड गया। है। और सारी कौम की शक्ति केवल एक ओर ही प्रवाहित हो रही है। यह काम की गलत दिशा है। सेक्स को भारत में सब तरफ से दबाया गया है और परिणाम जो आया है वह एकदम सामने है। अतः अब सेक्स को दबाकर नहीं, उससे समझकर ही जीवन में काम की शक्ति को प्रेम की ऊर्जा में परिवर्तित कर, आनन्द को उपलब्ध हुआ जा सकता है।"

★

"विचार को जगाओं और विश्वासों से बचो, क्योंकि विशस में ले जाते हैं।"

बम्बई मेडीकल कालेज में वार्ता :

आचार्यश्री ने १७ फरवरी के मध्यान्ह में बंबई मेडिकल कालेज के विद्यार्थियों के मध्य अपने विचार प्रगट किये। उन्होंने कहा : "विचार को जगाओ। सम्यक् तर्क को जगाओ। और विश्वास से बचो। क्योंकि विश्वास अंधेपन में ले जाता है। मनुष्य के दुर्भाग्य की सारी कथा उसके अंधे विश्वासों के अभाव में घटित नहीं हो सकती। और स्मरण रहे कि विश्वास मात्र अंधे होते हैं। फिर वे विश्वास चाहे आस्तिकों के हों चाहे नास्तिकों के। मैं तुमसे निवेदन करता हूं कि तुम विश्वासों से अपने को मत बांधना। क्योंकि जो विश्वासों से बंध जाता है, उसकी खोज निष्पक्ष और निर्दोष नहीं रह जाती है और वह सत्य को जानने में असमर्थ हो जाता है। और सत्य को जाने और पाये बिना न जीवन में अर्थ है, न अभिप्राय है, न आनन्द है इसलिये सदा अपने चित्त को निष्पक्ष रखना और मन के द्वार खुले रखना और अपनी जिज्ञासा को सतेज और जीवन्त, ताकि एकदिन तुम उसे जान सको, जो कि समस्त जीवन का मूल है और उसे जानकर और पाकर उस धन्यता और कृतार्थता को पा सको, जिसे पाने के लिये ही प्रत्येक व्यक्ति जन्मता है, जिसे बहुत थोडे से लोग ही उपलब्ध हो पाते हैं। क्योंकि अधिक लोग विश्वासों से बंध जाते हैं और उस निष्पक्ष खोज की आंखों को खो देते हैं, जिनके प्रभाव में सत्य के दर्शन होने असंभव हैं। विश्वास नहीं, विवेक... यदि यही तुम्हारी यात्रा की दिशा बन सकी तो तुम निश्चय ही उसे जान पाओगे जो कि सत्य है, जो कि परमात्मा है। सत्य ही परमात्मा है। उसके अतिरिक्त और कोई परमात्मा नहीं है। और सत्य को जानने का मार्ग विवेक है।

★

"ईश्वर मर गया है। मनुष्य निर्मित ईश्वर मर गया है। और उस ईश्वर को खोजना है, जोकि मनुष्य निर्मित नहीं है, और न कभी जन्मता है और न मरता है।"

जबलपुर जीवन जागृति केन्द्र में :

२२ फरवरी संध्या पूज्य आचार्यश्री जबलपुर जीवन जागृति केन्द्र में एक विशाल जनसभा में पधारे। आचार्यश्री ने कहा: "मैं एक खबर लाया हूँ कि ईश्वर मर गया है। लेकिन घबडायें नहीं और न शोक मनावें। क्योंकि जो ईश्वर मर गया है, वह मनुष्य निर्मित ही था। और यह शुभ ही है कि वह मर गया है। क्यों,कि उसके कारण ही मनुष्य उस ईश्वर को जानने से वंचित था जिसका कि न जन्म है और न मृत्यु है। जीवन अस्तित्व, जो है. . . वह अपनी समग्रता में ही तो ईश्वर है। लेकिन मनुष्य ने अपनी अपनी कल्पना से हजारों छोटे बडे ईश्वर गढ रखे थे। वे धीरे धीरे मरते गये हैं और अब वह मंदिर खाली पडा है, जो कि उससे बुरी तरह भरा हुआ था। इस खाली मंदिर में. . . . इस खाली मन में. . . . . इस शून्य में अब उस सत्य को जाना और जिया जा सकता है, जिसकी कि कोई भी कल्पना संभव नहीं है। ईश्वर हमारी कल्पना नहीं है, और जो हमारी कल्पना है, वह ईश्वर नहीं है। उसे जानने को तो सारी कल्पनाओं को विदा दे देनी अनिवार्य है। कल्पना की प्रतिमायें जबतक चित्त को घेरे रहती हैं तबतक है जो निराकार है, कैसे जाना जा सकता है ? लेकिन जैसे ही आकारों और रुपों को विदा दी जाती वैसे ही ही पाया जाता है कि वह तो है. . . . वह तो सदा से हैं।"

★

"ज्ञान के लिये पराये ज्ञान से मुक्ति आवश्यक। क्योंकि जो स्वयं का नहीं, वस्तुतः वह ज्ञान ही नहीं है।"

जूनागढ, सौराष्ट्र में विशाल सत्संग :

जुनागढ़ में २५, २६ और २७ फरवरी को पूज्य आचार्यश्री के सान्निध्य में सत्संग आयोजित हुआ। सत्संग में कोई २० से २५ हजार व्यक्ति प्रतिदिन उपस्थित होते रहे। तीन दिन तो जूनागढ़ के नागरिकों के लिये अमृत वर्षा के दिन रहे और भाव विभोर होकर नागरिकों ने पूज्य आचार्यश्री की वाणी को सुना। उन्होंने अपने प्रवचन में कहा : "सत्य शब्दों से नहीं पाया जा सकता है। इसलिये वह किसी और से भी नहीं पाया जा सकता। सत्य है स्वानुभूति। उसे तो स्वयं में और स्वयं ही खोजने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है। लेकिन हम सत्य को खोजते हैं : शास्त्रों से शब्दोंमें और सिद्धातों में। और इस भांति पाया गया ज्ञान, ज्ञान तो नहीं बनता, विपरीत ज्ञान के लिये अवरोध बन जाता है। क्योंकि जो व्यक्ति जितना अधिक तथाकथित ज्ञान से आबद्ध हो जाता है, वह उतना ही स्वयं के ज्ञान को पाने में असमर्थ

हो जाता है। वह दिशा ही उसे विस्मृत हो जाती है। वह उधार और पराये ज्ञान को अपना मानकर ही तृप्त हो जात है, इस लिये उसके स्वयं के ज्ञान की सोयी शक्ति के जागने का अवसर ही खो जाता है। वह स्मृति को और स्मृति में संग्रहीत सूचनाओं को ही ज्ञान मान लेता है, और परिणामतः सदा के लिये उस ज्ञान से वंचित रह जाता है, जो कि ज्ञान है इसलिये मैं कहता हूं कि सत्य की खोज में सबसे पहला कदम तो यही है कि हम उस ज्ञान से मुक्त हो जावें जो कि हमारा नहीं है। क्योंकि तभी हमारी खोज ज्ञान के उस आयाम में प्रारंभ होती है जो कि स्वयं में ही सोया हुआ है वहीं, उसी आलोक में जो स्वयं की चेतना से आविर्भूत होता है, सत्य है और और वहीं परमन्मा है।"

★

"प्रेम ही है द्वार, और प्रेम ही है मार्ग :

केशोद रोटरी क्लब में वार्ता :

२७ फरवरी के मध्यान्ह पूज्य आचार्यश्री केशोद पधारे। यहां पर रोटरी क्लब में आचार्यश्री ने 'प्रेम और जीवन' पर एक वार्त्ता दी। उन्होंने कहा : "मैं प्रेम के अतिरिक्त जीवन सत्य की ओर ले जाने का और कोई मार्ग नहीं देखता जब जीवन में प्रेम नहीं होता, तो जो होता है, उसका स्पष्ट चित्रण आज का विश्व है। आज मनुष्य जीवन मृत्यु की कगार पर पहुंच चुका है, और आणविक युद्ध ने सारी मानवता को जीवन के अंत तक पहुंचा दिया है। यह विषाक्त स्थिति प्रेम के अभाव का परिणाम है। जैसे प्रकाश का अभाव अंधेरा है, वैसे ही प्रेम का अभाव विश्व युद्ध है। जब व्यक्ति का चित्त प्रेम से भरा नहीं होता तो शैतान खुलकर खेलता। बडे बडे षडयंत्र शैतान के प्रेम के नारों के पीछे काम करते हैं। ऐसे प्रेम को, बडे सिद्धांतों की झूठी चादर ओढाकर मानव जीवन को विनाश के गर्त की ओर ढकेला जाता है। इससे जानना चाहिये कि जो प्रेम परिणाम में सृजन न लाये वह थोथा है और मानव जीवन का विनाशक है। प्रेम होता है तो सृजन होता है, और अखंड जीवन दृष्टि पैदा होती है।"

★

"महत्वाकांक्षा है युद्धों की जननी। वह उवर आनेवाली पीढियों को न दें . इतना ही हम कर सकें, तो इससे बडी मनुष्यता की दूसरी सेवा नहीं है।"

लायन्स क्लब जेतपूर में :

आचार्यश्री नें २८ फरवरी के सुबह लायन्स क्लब जेतपुर के सदस्यों के मध्य अपने विचार प्रगट किये। आपने यहां कहा : "मनुष्यता युद्धों से पीडित है। हम

सदा लडते ही रहे हैं और लडने के कारण जीने का अवसर ही नहीं मिल पाता। जीवन के अनुभव और आनन्द के लिये शांति चाहिये। व शांति के अभाव जीवन में जो भी श्रेष्ठ है, शुभ है, सुन्दर है, सत्य है, वह सब अपरिचित हो रह जाता है। इसलिये ही हमारा जीवन इतनी व्यर्थता, ऊब और उदासी से भरगया है : लेकिन शांति कैसे संभव है ? महात्वाकांक्षी चित्त शांत नहीं हो सकता है। महत्वाकांक्षा ही मूलतः समस्त हिन्सा का आधार है। वह ही युद्धों की जननी है। और हम आनेवाली पिढियों को भी महत्वाकांक्षा के ज्वर में ही दीक्षित किये जा रहे हैं महत्वाकांक्षाका ज्वर नहीं, सिखाना है, सिखाना है आत्मानंद। महत्वाकांक्षा दूसरे के सूख से ईर्ष्या है। वह दूसरे को पार करने की होड है। आत्मानन्द का दूसरे से कोई संबंध नहीं वह स्वयं के आनन्द की सत् खोज है। वह निरंतर स्वयं का ही अतिक्रमण है। ऐसे व्यक्ति ही उस समाज का निर्माण कर सकते हैं जहां कि हिन्सा न हो, युद्ध न हो, और मनुष्य की शक्तियां आत्मविनाश में नहीं, आत्म सँगन में लग सकें। इस दिशा में कार्य करने में जो संलग्न है, उसे ही मैं मनुष्यता का सेवक कहता हूँ।"

★

"मूर्च्छा... . . स्वयं के प्रति मूर्च्छा है दुख : क्योंकि वह उससे परिचित नहीं होने देती है जो कि आनन्द है। आत्मा आनन्द है।"

अहमदाबाद में त्रिदिवसीय विराट सत्संग :

आचार्यश्री सान्निध्य में १, २ और ३ मार्च को अहमदाबादमें बहुत विराट् सत्संग आयोजित हुआ। कोई ३५ हजार व्यक्तियों ने उपस्थित होकर आचार्यश्री की सृजनात्मक क्रांतिकारी वाणी को सुना।

यहां आपने कहा : "वह शक्ति क्या है, जो मनुष्य को दुख से बांधे रखती है ? क्या वह मनुष्य के बाहर है ? नहीं। वह शक्ति बाहर नहीं है। वह भी मनुष्य के भीतर है। वह है मनुष्य की स्वयं के प्रतिमूर्च्छा। हम स्वयं के प्रति करीब करीब सोये ही हुये हैं। यह निद्रा ही हमारा दुख है क्योंकि इसके कारण ही हम उस आनन्द से परिचित नहीं हो पाते हैं जो कि स्वयं में ही छिपा है। जागना है। स्वयं के प्रति जागना है। स्वयं के प्रति जागते ही दुख नहीं है। मृत्यु नहीं है, अंधकार नहीं है।"

★

"मैं युवा पीढी के विद्रोह का स्वागत करता हूं, लेकिन वह विद्रोह जीवन के और देश के बडे मसलों के लिये होना सुखकर है।"

अहमदाबाद युनिवर्सिटी विद्यार्थियों के बीच :

अहमदाबाद विश्वविद्यालय में पूज्य आचार्यश्री ३ मार्च के मध्यान्ह पधारे। विश्वविद्यालय भवन में विद्यार्थियों का अपूर्व समूह आचार्यश्री की वाणी को सुनने उपस्थित हुआ था। आपने यहां कहा : "आज का युवा विद्यार्थी पुराने जीवन मूल्यों को तोड रहा है। शिक्षा ने और संस्कारों ने जो नैतिक आचरण जबरदस्ती थोप दिये थे, उनको विद्यार्थी आज जगह जगह तोड रहा है। इसकी पूरे मुल्क में बहुत आलोचना की जाती है और विद्यार्थी बिल्कुल अनुशासनहीन हो गया है, यह कहकर विद्यार्थियों को निन्दित किया जाता है। मैं आज की युवा पीढी के विद्रोह का स्वागत करता हूं, लेकिन अभी वह विद्रोह केवल जीवन की बहुत छोटी छोटी समस्याओं के लिये है, इस कारण उसका बहुत मूल्य नहीं है। आज युवा पीढी के सामने बहुत बडे मसले हैं, और उनपर विद्रोह की आवश्यकता है। आज देश में शोषण और गरीबी का बडा जाल है, उसे युवकों को तोडना है, धर्म के नाम पर केवल संप्रदायों की तलाशें रह गई हैं, उन्हें विद्यार्थियों को गिराना है और जो धर्म है, उसको जन्म देना है। इससे मैं कहता हूं कि विद्रोह के लक्षण जो युवकों में दिखाई पडने शुरु हुये हैं वे बहुत शुभ हैं, उससे संस्कारों में जो जडता है, वह टूटती है, लेकिन विद्रोह बडी समस्याओं के लिये हो उसका बहुत सृजनात्मक मूल्य है।"

★

"प्रतिस्पर्धा नहीं, प्रेम जीवन विकास का सूत्र"

भावनगर में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के बीच :

पूज्य आचार्यश्री ने २५ फरवरी से और १२ मार्च तक सौराष्ट्र का तूफानी दौरा किया और जो जीवन वीणा के सृजनात्मक स्वर दिये वे सौराष्ट्र के कण कण में व्याप्त हो गये लाखों लोगों ने दौरे के मध्य संपर्क साधा जनसभाओं से, व्यक्तिगत चर्चा से तथा विचार संगोष्ठियों के माध्यम से। भावनगर के महाविद्यालयीन विद्यार्थियों को उद्‌बोधित करते हुये पूज्य आचार्य श्री ने कहा : "आज की शिक्षा का सारा ढांचा प्रतिस्पर्धा पर खडा है। और प्रतिस्पर्धा से जिस समाज का निर्माण हुआ है, उसका स्पष्ट चित्र हमारे सामने है। प्रतिस्पर्धा महत्वाकांक्षा को जन्म देती है और परिणाम में जीवन में अंधी दौड प्रारंभ हो जाती है। इसका अंत बडा दुखद होता है। अतएव शिक्षा प्रतिस्पर्धा पर नहीं, प्रेम पर आधारित होना चाहिये। शिक्षा से काम के प्रति प्रेम पैदा हो तो ही शिक्षा से वास्तविक मनुष्य का जन्म हो सकता है। ऐसा व्यक्ति जीवन के बीच अपने कामों के बीच आनन्द और शांति को उपलब्ध होता है।"

"धर्म कहां है ? तीर्थों में ? नहीं । मंदिरों में ? नहीं । संगठकों में. . . . संप्रदायों में ? नहीं । धर्म तो वहां है, जहां हम उसे खोजते ही नहीं हैं । वह तो स्वयं में है ।

राजकोट में सत्संग :

आचार्यश्री के सान्निध्य में आयोजित सत्संग से राजकोट की जनता में एक अत्यंत विचारोत्तेजक भावदशा निर्मित हुई । उनके शब्द तो अग्नि की भांति हैं, जो कि जलाते भी हैं और निखारते भी हैं । उन्होंने यहां कहा : "धर्म का ह्रास धर्मों के कारण हुआ है । मनुष्य को धर्मों ने जोडा नहीं है, उल्टे तोडा है । उन्होंने बात तो प्रेम की की, लेकिन घृणा के संगठन खडे किये हैं । वस्तुतः संगठन मात्र के पीछे घृणा और हिन्सा होती है । धर्म का संगठन से कोई संबंध नहीं है । धर्म संगठन नहीं है । धर्म साधना है । और इसीलिये, धर्म अत्यंत वैयक्तिक है । व्यक्ति जितना ही स्वयं में प्रविष्ट होता है, उतना ही वह धर्म के सत्य को जानता और अनुभव करता है । स्वयं की आत्यंतिक निजता में ही धर्म का सत्य उपलब्ध होता है । इसलिये संगठन में धर्म को मत खोजो । वह तो निज के एकान्त और मौन में है । इसलिये भीड और समूह में उसे मत खोजो । वह तो स्वयं में ही है । शांत होकर उसे स्वयं में देखो तो पाओगे कि उसकी ज्योति तो निरंतर जल रही है । वह न मंदिरों में है, न तीर्थों में । वह तो वहां छिपा है, जहां हम खोजते ही नहीं हैं । वह तो स्वयं में ही छिपा है ।"

★

"सरिताओं के सागर को पाने का रहस्य क्या है ? वही परमात्मा को पाने का रहस्य भी है ।"

मोरबी में प्रवचन :

६ मार्च की रात्रि को मोरबी की एक विशाल जनसभा को जिसमें १५ हजार नागरिक उपस्थित थे, आचार्यश्री ने संबोधित किया । उन्होंने कहा : "परमात्मा को खोजने मंदिरों में जो जाता है, उसे पता ही नहीं है कि परमात्मा वहां नहीं है । मनुष्य द्वारा निर्मित मंदिर इतने छोटे हैं कि परमात्मा उनमें कैसे समा सकता है ? उसे पाना हो तो मंदिरों की, और मस्जिदो की सारी दीवारें गिरा देनी आवश्यक हैं । मन का मंदिर जहां दीवारों से मुक्त जाता है, वहीं परमात्मा है । मनुष्य मिटता है, तभी उसे पाता है । सरिताओं के सागर को पाने का जो रहस्य है, परमात्मा को पाने का रहस्य भी वही है ।"

★

"मैं कौन हूं...? पूछो, स्वयं से पूछो। और पूछते ही जाओ तो एकदिन अवश्य ही वह उत्तर उपलब्ध होता है जो कि मुक्तिदायी है।"

जामनगर में विशाल आमसभायें :

जामनगर में ७ तथा ८ मार्च को पूज्य आचार्यश्री के कार्यक्रम आयोजित हुये। यहां पर दोनों दिवस बहुत बडी विशाल जनसभायें हुईं : इन जनसभाओं में ३० हजार व्यक्तियों ने भाग लिया, तथा आचार्यश्री की अभूतपूर्व अमृतमयी वाणी का श्रवण किया। आचार्यश्री को सुनना अपने में एक अभूतपूर्व आनन्द है। उन्हें सुनते सुनते ही जैसे चेतना किसी और ही लोक में चली जाती है। उन्हें सुनना मात्र सुननाही नहीं, वरन् स्वयं में एक यात्रा भी है। उन्होंने यहां कहा : "मैंने कौन हूं ? इस प्राथमिक प्रश्न का उत्तर ही जिसके पास नहीं है, उसके जीवन में कोई भी अर्थ कैसे हो सकता है ? और जिनके पास इस प्रश्न के उधार और सीखे हुये उत्तर हैं, उनकी स्थिति तो और भी दुर्भाग्यपूर्ण है। क्योंकि, उन्हें स्वयं के सत्य का तो कोई अनुभव है ही नहीं, उल्टे उधार उत्तरों को सीख लेने के कारण उनकी खोज भी अवरुद्ध हो जाती है। सत्य सीखा नहीं जा सकता है। सत्य की कोई भी शिक्षा नहीं है, और न शास्त्र है। सत्य को तो स्वयं के श्रम से ही खोजना और स्वयं में ही खोदना पडता है। उस खोज की पहली शर्त है किसी अन्य का उत्तर किसी भी मूल्य पर स्वीकार न करना। यदि प्रश्न हो और उत्तर न हो तो वह, प्रश्न ही एक तीर की भांति स्वयं में गहरे जाने का मार्ग बन जाता है। और यदि अनथक उस प्रश्न के साथ जिया जाये तो एक दिन वह उस उत्तर को खोद ही निकालता है जो किस्वयं में ही प्रसुप्त और प्रच्छन्न है। ऐसा ज्ञान ही केवल ज्ञान है जोकि स्वयं में ही आविर्भूत होता है। अतिरिक्त शेष सब अज्ञान है जोकि स्वयं को छिपाने के लिये ज्ञान के वस्त्र पहने होता है।"

★

"अहंकार चाहते हो तो आनन्द न चाहो। क्योंकि, दोनों को एक ही साथ नहीं पाया जा सकता है।"

जामनगर में लायन्स तथा रोटरी क्लब में प्रवचन :

आचार्यश्री का जामनगर में लायन्स तथा रोटरी क्लब के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक: ८ मार्च की रात्रि एक प्रवचन आयोजित हुआ। आचार्य श्री ने यहां कहा: "अहंकार दुख है। अहंकार पीडा है। अहंकार अंधकार है। लेकिन हम उसमें

ही जीते हैं और इसलिये न तो हम जीवन को जान पाते हैं और न सत्य को, न सौन्दर्य को, न शांति को। अहंकार कारागृह है। और उस कारागृह में सूर्य का आलोक नहीं पहुंचता है। लेकिन हम आलोक भी चाहते हैं, आनन्द भी चाहते हैं, और अहंकार के कारागृहों की दीवारों को ऊंचा भी उठाये जाते हैं। क्या यह विरोधाभास आपको दिखाई नहीं पडता है ? इस विरोधाभास के दिखाई पडते ही जीवन में एक क्रांति हो जाती है। क्योंकि कोई भी व्यक्ति यदि ऐसे विरोधाभास को देख ले तो फिर विरोधी दिशाओं में एक ही साथ नहीं जी सकता है।"

★

"मैं शून्य सिखाता हूं। क्योंकि शून्य में ही व्यक्ति वहां होता है, जहां कि वस्तुतः वह है :"

जामखंभालिया में आमसभा :

आचार्यश्री ९ मार्च के सुबह जामखंभालिया पधारे। उनके सान्निध्य में एक आमसभा आयोजित हुई। उन्होंने यहां कहा: "मैं मौन सिखाता हूं। मैं शून्य सिखाता हूं। क्योंकि, शून्य में ही व्यक्ति वहां होता है, जहां कि वस्तुतः वह है। वह केन्द्र ही परमात्मा है।"

★

"जीवन को जिओ, उसकी समग्रता में। क्योंकि वहीं वह अवसर है जहां स्वयं में जो सोया है, वह जागता है और जीवन् बनता है।"

द्वारिका मे विराट जनसभा :

पूज्य आचार्यश्री ने ९ मार्च की रात्रि को द्वारिका में समुद्रतट पर एक विशाल जनसभा को संबोधित किया। द्वारिका केवल १५ हजार आबादी की बस्ती है, जिसमें से लगभग् ७ हजार नागरिक पूज्य आचार्यश्री की क्रांतिमयी सजनात्मक वाणी को सुनने उपस्थित थे। उन्होंने कहा : "जीवन अखंड है। उसे खंड खंड में बांटना अत्यंत भ्रामक है। धर्म जीवन विरोधी नहीं है। और जो जीवन विरोधी है, वह धर्म नहीं है। इसलिये मैं समग्र जीवन को ही साधना मानता हूं। जो साधना जीवन से भागकर ही होती है, वह साधना नहीं, पलायन है। और पलायन कमजोरी है। फिर पलायन से, भागने से क्या कभी कोई समस्या हल होती है ? समस्या को और उसकी चुनौती को जो सामने से स्वीकार नहीं करता है, वह तो उसे और भी उलझा लेता है। भय से भागना पैदा होता है, और भागने

से और भय बढता है । ऐसे एक दुष्टचक्र पैदा हो जाता है । जबकि चित्त सजग हो और समग्र रूप से जीवन की समस्या का साक्षात् करता हो तो पाया जाता है कि समस्या है ही नहीं । वह थी हमारी मूर्च्छा में । जागरण में वह वैसे ही नहीं पाई जाती है, जैसे कि सूर्य के आनेपर अंधकार नहीं पाया जाता है । जीवन को जियो । उसकी पूर्णता में जीवन को जिओ । जागृत और अमूर्च्छित जीवन को स्वीकार करो । उससे भागो नहीं । क्योंकि वहीं वह अवसर है, जहां स्वयं में जो सोया है, वह जाग सकता है ।"

★

"मिटो, ताकि पा सको । मनुष्य जहां नहीं है, मन जहां नहीं है, वहीं वह है, जो है ।"

पोरबंदर में त्रिदिवसीय सत्संग :

आचार्यश्री के सान्निध्य में पोरबंदर में १०, ११ तथा १२ मार्च को एक विशाल सत्संग का आयोजन हुआ । इस सत्संग से एक क्रांति की लहर ही पैदा हो गई । आचार्यश्री ने यहां कहा : "धर्मों में धर्म नहीं है । और जिसे धर्म को पाना है, उसे धर्मों से मुक्त होना पडता है । धर्म तो एक है, क्योंकि सत्य एक है । और इस सत्य को पाने के लिये सत्य के संबंध में प्रचारित और स्वीकृत सारी धारणायें छोडनी आवश्यक हैं । जो उनधारणाओं को लेकर चलता है, वह सत्य को नहीं, बस अपनी धारणाओं के अनुभव को उपलब्ध होता है । निश्चय ही वैसी अनुभूतियां स्वयं की मनोकल्पनाओं से ज्यादा नहीं होती हैं । और कल्पनायें करने में मनुष्य का मन खूब समर्थ है । प्रकार प्रकार के ईश्वर इसी मन से पैदा होते हैं । लेकिन 'जो है' उसे जानने में ऐसा मन असमर्थ हो जाता है । तथाकथित धार्मिक लोग इसीलिये कभी सत्य को नहीं जान पाते हैं । क्योंकि वे स्वयं ही सत्य को गढने में संलग्न होते हैं । ऐसे गृह निर्मित सत्यों के कारण ही धर्मों का जन्म हो गया है । जबकि धर्म में प्रवेश के लिये सत्यों के गढने का यह गृह उद्योग बिल्कुल ही बंद करना होता है । मन जब सब भांति धारणाशून्य, विचारों से रिक्त और कल्पनाओं से मुक्त होता है, तभी वह जाना जाता है, जो है, वही है सत्य । वही है परमात्मा । और उसे जानना ही मुक्ति है । निश्चय ही स्वयं सत्य को नहीं गढना है, वरन् स्वयं को मिटाना है ताकि सत्य प्रगट हो सके । और तब चित्त धारणाओं, और विचारों और कल्पनाओं से शून्य होता है तो मिट ही जाता है । इस नकारात्मक दशा में ही सत्य जाना जाता है । मन की कोई भी विधायक क्रिया उसे पाने में बाधा है । मनुष्य सत्य को नहीं पा सकता है । हां, जहाँ वह नहीं है, वहीं सत्य जरूर है ।

पटना : विश्व हिन्दू धर्म सम्मेलन की एक झलक
उद्योगपतियों की अनुकम्पा

[शिवप्रतापसिंह]

पटना में द्वितीय विश्व हिन्दू धर्म सम्मेलन के अवसर पर बहुत दिलचस्प बहस छिड़ गई जो अब भी जारी है । इसमें एक पक्ष है उन लोगों का जो वेदों और शास्त्रों को चिरकाल-सत्य मानते हैं और विज्ञान और आधुनिक युग की चुनौतियों की बात शुरू होते ही चिढ़ जाते हैं और दूसरा पक्ष है उन लोगों का जो पुरानी धारणाओं एवं मान्यताओं को आज के लिए बिल्कुल व्यर्थ करार देते हैं और धर्म में निहित स्वार्थों के प्रभाव का बिना लाग-लपेट के पर्दाफाश करते हैं ।

पटना में द्वितीय विश्व हिन्दू सम्मेलन गत २९ मार्च से शुरू हुआ था । सम्मेलन की सज – धज देखते ही बनती थी । पिछले कई वर्षों में ऐसी तड़क-भड़क शायद ही किसी सम्मेलन में देखी गई हो और यह स्वाभाविक ही था क्योंकि सम्मेलन के आयोजकों में प्रमुख राज्य के शीर्ष व्यापारी एवं उद्योगपति थे ।

सम्मेलन के आरंभिक अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए जब केन्द्रीय उडड्यन एवं पर्यटन मंत्री डॉ. कर्ण सिंह ने हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों को आधुनिक युग के अनुरूप परिवर्तित करने, छुआ छूत खत्म करने और पंडों-पुराहितों को नये युग के अनुरूप प्रशिक्षित करने की बात कही तो अधिवेशन के अध्यक्ष जगत्गुरू शंकराचार्य आग बबूला हो उठे और बोले– "वेद और शास्त्र त्रिकाल-सत्य हैं और जो उनको नहीं मानता उसे हिन्दू कहलाने का अधिकार नहीं । छुआछूत उचित है और पुरुषों और स्त्रियों को समान अधिकार देने की बात पागलों के दिमाग का फितूर । पंडों–पुरोहितों से कहीं ज्यादा मंत्रियों के प्रशिक्षण की आवश्यकता है ।"

"जगत्गुरु का क्रोध"

स्पष्टतया जगत्गुरू की बातों की अधिकांश श्रोताओं पर प्रतिकूल प्रतिक्रिया हुई । कुछ लोगों ने इनका खड़े होकर विरोध किया जबकि कुछ ने मंच पर पुर्जियाँ भेजनी शुरू कर दीं । जगत्गुरू अब तो और भी आपे से बाहर हो गए और कड़ककर बोले–"मैं इस प्रश्न पर किसी से भी शास्त्रार्थ करने को तैयार हूं . . . ।"

जब अंत में राष्ट्रीय गीत गाने की तैयारियां होने लगीं तो जगतगुरु ने "जन गण-मन" गाये जाने का इस आधार पर विरोध किया कियह यह जार्ज पंचम की अभ्यर्थना

में गाया गया था। जगद्गुरू ने उसके स्थान पर "वन्दे मातरम्" गाये जाने पर जोरदिया पर अब तक आयोजकों के लिये भी यह सब सहना असंभव हो चुका था और उन लोगों ने इस सब से ऊब कर 'राष्ट्रीय गीत' का कार्यक्रम स्थगित कर देने की घोषणा की। इस पर श्रोतागण में से अधिकांश ने कहा कि राष्ट्रीय गीत जरूर गाया जायगा। और फिर इसके अनुसार जब "जन गण-मन" गाया जाने लगा तो विरोध में जगतगुरू ने सभात्याग किया और क्रोध के कारण गिरते–पड़ते भाग चले।

"क्रोध में पागल जगत्गुरु"

पर जगत्गुरू की विपत्तियों का अन्त यहीं नहीं हुआ। शाम के अधिवेशन में उनके विचारों को सशक्त ढंग से चुनौती देती हुई एक और आवाज़ सुन पड़ी, अनोखी, ताज़गी से भरी हुई। यह आवाज थी आचार्य रजनीश की जिन्होंने कहा : "जो धर्म ज़िन्दगी को असार और दुखपूर्ण बतलाकार उससे घृणा करना सिखाता है वह कदापि सच्चा धर्म नहीं है। धर्म व ह कला है जो जिन्दगी का सच्चा उपभोग करना सिखाये। मुक्ति संसार छोड़कर भागने में नहीं है, मुक्ति है संसार और जीवन के आनन्द का पूरा उपभोग कर तृप्त हो जाने में....। पर धर्म के नाम पर ये दूकानें नहीं चाहतीं कि सच्चे अर्थों में आदमी कभी धार्मिक हो। क्योंकि तब इन दूकानों को बन्द होना पड़ेगा और किसी जगतगुरू, किसी धर्म-गुरु या पुरोहित की जरूरत नहीं रह जायगी. . .।"

स्पष्ट ही जगत्गुरू के लिये विचार कुनैन की गोली से अधिक कड़वे साबित हुए। अध्यक्ष की हैसियत से जगत्गुरू ने केवल आचार्य रजनीश के लिये समय का प्रतिबन्ध लगाया था कि वे केवल ४५ मिनट बोलेंगे। पर जगतगुरु को ये ४५ मिनट भी बिताने मुश्किल हो गए। वे बड़े हल्के ढंग से इधर उधर अपनी बेचैनी प्रकट करते हुए काना फूसी करने लगे। जगत्गुरू बार-बार घड़ी में समय देखते पाये गए। उन्होंने शायद अपनी घड़ी बंद होजाने का भी भ्रम हुआ, तभी अगल - बगल बैठे सन्यासियों से समय पूछने लगे थे। जगत् गुरूने अपने एक शिष्य सन्यासी को पागल कहते हुए धुतकारा क्योंकि वह आचार्य रज. के भाषण से मुग्ध हो झूमने लगा था।

आचार्य रजनीश ने आगे बोला : "सनातन धर्म जैसी कोई चीज़ नहीं है। हां, धर्म सनातन है। और सनातन का मतलब पुराना नहीं, सनातन का मतलब होता है नित नया, नित नूतन होने की क्षमता। और वह हिन्दू, मुसलमान नहीं है। वह है ध र्म...बस...धर्म।"

"धर्म शास्त्रों में नहीं है और न धर्म का चोटी रखने अथवा कंठी माला जपने से कोई संबंध है। ये पागलपन की बातें हैं।"

आचार्य रजनीश का प्रवचन समाप्त होते ही जगत्गुरू माइक के सामन खड़े हो गए और छाती पीटते हुए कहने लगे : "मैं सारे शास्त्रों का ज्ञाता, और यह रजनीश क्या बोलेंगे। जो वेद और शास्त्रों का विरोध करता है वह हिन्दू ही नहीं है। इन्हें पटना से तब तक जाने नहीं दिया जायगा जबतक ये सिद्ध नहीं करते..." और यह कहते–कहते, जगत्गुरू क्रोध के कारण मंच से नीचे गिर पड़े। उनके समर्थक भी उछलकूद करने लगे। पर इन लोगों के दुर्भाग्य से सभा में उन लोगों की संख्या अपेक्षाकृत बहुत ज्यादा थी जो आचार्य रजनीश के विचारों को सुनना चाहते थे। इसका अनुमाब तो इसी बात से लगाया जा सकता है कि हजारों की संख्या में लोगों ने 'आचार्य रज. जिन्दा बाद। 'शंकराचार्य मुर्दाबाद' के नारे लगाने शुरू कर दिये और आगे सम्मेलन की कार्यवाही उस दिन रद्द कर देनी पड़ी।

अगले दिन हिन्दू धर्म सम्मेलन के अधिवेशन में अधिकांश लोग आचार्य रज. का भाषण सुनने आये पर आयोजकों को भी आचार्य रजनीश के विचार कुछ खास प्रिय न थे। इसीलिए शायद आ. रज. के आने के २० मिनट के भीतर ही सैकड़ों पुर्जियां मंच पर पहुंचने के बावजूद उन्हें बोलने नहीं दिया गया। और इस २० मिनट के बाद ही हज़ारों लोग खड़े हो गए और 'आचार्य रज. जिन्दाबाद' के गगन भेदी नारे लगाने शुरू कर दिये। फलतः उस दिन की भी सभा रद्द कर देनी पड़ी। और फिर इसके बाद विश्व हिन्दू धर्म सम्मेलन के एक भी कार्यक्रम नहीं हुए। पटना में अन्यत्र होने वाली आचार्य रज. की सभाओं में श्रोताओं की अपार भीड़ जुटने लगी यहां तक कि लोगों को जगह न मिलने से हज़ारों लोग खड़े – खड़े तथा हजारों अपनी कारों में बैठे-बैठे उनकी बातों को मंत्रमुग्ध हो सुनने लगे।

"भारत सदैव शोषण का शिकार रहा है"

रजनीश की बातें जिनमें कुछ नीचे दी हुई हैं, आज भी पटना के वातावरण में गूंज रही हैं और अत्यन्त व्यापक तौर पर बहस और बात-चीत का विषय बनी हुई हैं–

"भारत बराबर, कुछ मुट्ठी भरलोगों के लिए सोने की चिड़िया रहा और कुछ के लिए आज भी है। बिड़ला की पूंजी ३० करोड़ से बढ़कर, बीस वर्षों में ही, ३३० करोड़ हो गई। २० वर्षों में ३०० करोड़ रूपया दुनियां के इतिहास में कभी भी कोई भी नहीं इकट्ठा कर सका होगा।"

"शास्त्रों में चोरी की तो निन्दा की गई है पर शोषण की निन्दा कहीं नहीं मिलती। अनैतिकता गरीब का चुनाव नहीं मजबूरी है। उसे नैतिक होने की शिक्षा देना पाप है, अन्याय है।"

पटना नगर इस प्रकार कुछ दिनों धर्म-भक्तों के दो खमों का नगर बन गया और लोग राजनीति के दांव-पेंच भूल गए।

★

काम पर आचार्य श्री रजनीश जी की वैज्ञानिक एवं क्रांतिकारी नवीन पुस्तक

संभोग से समाधि के ओर

- **काम दिव्य है!**
  काम की शक्ति परमात्मा की शक्ति है।
- **पवित्र और प्रेमपूर्ण हृदय से काम की स्वीकृति ही कामसे मुक्त करती है।**
- **जीवन की सही यात्रा—**
  काम से राम की ओर।

प्रकाशक : जीवन जागति केंद्र, बम्बई।

मूल्य : ३–५० पै.

निबंध प्रतियोगिता

जीवन जागृति केन्द्र अहमदाबाद द्वारा एक निबन्ध प्रतियोगिता जारी की गई है। जिसका प्रवेश फोर्म नीचे दिये पते पर से मिल सकेगा। उसके कुछ नियम इस प्रकार है जो प्रवेशपत्र पर दिये गये है।

(१) किसी भी व्यक्ति के लिए विषय है **"धर्म और जीवन क्रान्ति के बिना व्यक्ति और समाज की शांति संभव नहीं हो सकती है"** शब्द मर्यादा– १५०० शब्द। यह निबंध आचार्य श्री रजनीश के जीवन जागृति केन्द्र बम्बई द्वारा प्रकाशित साहित्य और 'ज्योतिशिखा' त्रैमासिक में प्रगट हुए लेखों के आधार पर ही तैयार करना होगा। उसमें प्रथम पुरस्कार रु. २५१, द्वितीय १०१ और तृतीय पुरस्कार आचार्य श्री की पुस्तकों का एक सेट होगा।

(२) सिर्फ विद्यार्थियों के लिए विषय है आचार्य रजनीशजी के "क्रांतिबीज अथवा सिंहनाद" अथवा समग्र प्रकाशित सूत्रों का सार जो करीबन ५०० शब्दों में समाविष्ट हो जाय– रहेगा। उसमें प्रथम पुरस्कार है रु. १०१, द्वितीय रु. ५१, और तृतीय है आचार्य- श्री के पुस्तकों का एक सेट।

(३) निबंध गुजराती, हिन्दी या अंग्रेजी किसी एक भाषा में लिखना होगा।

(४) निबंध की तीन प्रति पृष्ठ के एकही तरफ टाईप करवाके भेजनी होगी।

(५) निबंध स्पर्धा की प्रवेश फी रु. १, है। एम्. ओ. अथवा रोकड रक्कम देकर (१) जीवन जागृति केन्द्र 'सुरेश निवास' प्राण कुंज सोसायटी कांकरिया, अहमदाबाद-२२ (२) बुकसेलर बालगोविंद कुबेरदास रीची रोड, अहमदाबाद, और (३) सस्तु किताबघर, रीलीफ़ रोड, अहमदाबाद के पते पर से प्रवेश फोर्म मंगवा सकेंगे।

(६) निबंध ता. ३०–७–६९ तक अहमदाबाद जीवन जागृति केन्द्रको पहुंचा देना चाहिये।

(७) निबंध परिणाम ता. १५–९–६९ के दिन समाचार पत्रों में प्रकाशित किया जायगा और प्रतियोगिता में उत्तीर्ण व्यक्ति को उसके पते पर भेजा जायगा। ☆

स्व. श्री. जटुभाई महेता को श्रद्धाञ्जली

ज्योतिशिखाके भू. पू. मानाई संपादक और जीवन जागृति केन्द्र बंबई के संस्थापक सभ्यों में से एक ऐसे मान. श्री. जटुभाई महेता का गत ता. ६–४–६९ को ६५ वर्ष की आयु में अचानक निधन होने से हमारा एक सहृदयी मित्र, साथी और निष्ठावान कार्यकर हमसे बिछुड गया है। कुछ समय से हृदयकी बिमारी से ग्रस्त थे फिर भी अन्ततकवे अपनी प्रवृत्तियों में अवितरत संलग्न थे । अन्य साथियों से हरहंमैश मिलते थे वैसे ही मृत्यु को भी हंसीखुशी के साथ साथी बनाकर अज्ञात की यात्रा की ओर चल बसे । इससे उनके निकटवर्ती परिवार, मित्रों और जिनमें उन्होंने सेवाकार्य किया है ऐसी संस्थाओं को बडा भारी सद्मा पहुंचा है।

जीवन का प्रारंभ उन्होंने राजकीय और सामाजिक प्रवृत्तियों में सक्रिय भाग लेकर किया । कॉलेज का अभ्यास छोडकर राजकोट में मान श्री ढेबरभाई के साथ राजकारण में पड़े और आझादी की लडत में कारावास भी भोगा । बादमें सामाजिक प्रवृत्तियों के साथ व्यवसाय में विज्ञापन क्षेत्र पसंद करके बडी तरक्की की। जैनसमाजमें उनका विशिष्ट स्थान था । पत्रकारित्व, साहित्य और अध्यात्ममें भी उनकी बडी दिलचस्पी थी । अनेक पत्रिकाओं के संपादक रह चूके । "प्रबुद्ध जैन" और "ज्योति-शिखा" उनमें मुख्य है ।

विगत कुछ वर्षों से आचार्य श्री रजनीशजी के समागममें आये । उनके विचारों को सुनकर वे बड़े प्रभावित हुए और भीतर क्रांति की जो प्यास थी वह इस क्रांतिकारी महापुरुष से संतृप्त हो सकेगी इस ख्याल से उन्होंने इस कार्य में सक्रिय

रस लेना शुरुकि या । श्री दुर्लभजीभाई खेताणी, श्री रमणभाई, श्री गुलाबचंद भाई आदि अनेक मित्रों के साथ मिलकर जीवन जागृतिकेंद्र की स्थापना की और आचार्य श्री के विचार क्रान्ति के प्रसार के इस महाकार्य में अपना सक्रिय सहयोग दिया ।

इतनी जैफ उम्र में भी वे युवक जैसी शक्ति से कार्य करते थे । जीवन की साधना में उनको आचार्यश्री का मार्गदर्शन मिला । जो जीवन के रहस्यों को समझ लेते हैं उनके लिए मृत्यु एक खेल बन जाती है । मृत्यु के पार का भी जो जीवन है उसको पाने की आकांक्षा तीव्र बन जाती है । श्री जटुभाई भी जीवन को पाने के आकांक्षी थे । प्रभु उनकी आकांक्षा पूर्ण करे और दिवंगत आत्मा को शांति और स्वयं के पास पहुंचजाने कासामथ्य दे ।

जीवन जागृति केंद्र सहित अनेक संस्थाओंने शोकसभा का आयोजन करके उनको श्रद्धाजली अर्पित की है और उनके परिवारको सहानुभूति भेजी है ।

★

जीवन जागृति केन्द्र, बंबई द्वारा प्रकाशित **आचार्य श्री रजनीश साहित्य**

हिन्दी साहित्य	मू. रुपया
साधनापथ	३–००
क्रांतिबीज	३–००
सिंहनाद	१–५०
अमृतकण	०–६०
अहिंसादर्शन	०–४०
मिट्टी के दिये	३–००
पथ के प्रदीप	४–५०
मैं कौन हूँ	२–००
कुछ ज्योतिर्मय क्षण	०–४०
नये मनुष्य के जन्म की दिशा	०–४०
सूर्य की ओर उड़ान	१–००
प्रेम के पंख	०–७५
सत्य के अज्ञात सागर का आमंत्रण	१–२५
अज्ञात की ओर	१–००
नये संकेत	१–७५
संभोग से समाधि की ओर	३–५०
क्रांति के बीच सबसे बडी दीवार?	०–३०
न आंखों ने देखा न कानों ने सुना	०–१५
क्रांति की नई दिशा नई बात	०–३०
ज्योतिशिखा वार्षिक चंदा (त्रैमासिक संकलन)	५–००

मराठी साहित्य	
साधनापथ	३–००
सिंहनाद	२–००
अहिंसादर्शन	०–५०
अमृतकण	०–५०
क्रांतिबीज	२–५०
प्रेमाचे पंख	०–७५

गुजराती साहित्य	मू. रुपया
साधनापथ	२–००
स्पेशल प्रति	३–००
क्रांतिबीज (भाषा हिन्दी)	२–५०
सिंहनाद	१–२५
अमृतकण	०–५०
अहिंसादर्शन	०–५०
माटी ना दिवा	३–००
पंथ ना प्रदीप	३–००
हुं कोण छुं	२–००
केटलीक ज्योतिर्मय क्षण	०–७५
नवा मनुष्य ना जन्म नी दिशा	०–७५
सूर्य तरफनुं उड्डयन	१–००
सत्य ना अज्ञात सागर नुं आमंत्रण	१–५०
अज्ञात प्रति	२–००
नवा संकेत	१–७५

अंग्रेजी साहित्य	
पथ आफ सेल्फ रियेलायजेशन	२–२५
हू ऐम आई	३–००
फिलोसाफी आफ नान–वायोलेन्स	०–८०
अर्दन लैप्स	४–५०
सीडस् ऑफ रेव्होटुशनरी थॉउट	४–५०
विंग्स् ऑफ लव्ह ॲन्ड रंडम थॉऊटस्	३–५०

पुस्तकें मिलने का पता :

जीवन जागृति केन्द्र,

एम्पायर बिल्डिंग, कमरा नं. ५३, १ ला मंजला, डॉ. डी. एन. रोड, फोर्ट बम्बई-१.

१३